# अभिनवा

# संस्कृत-चन्द्रिका

## प्रथमः प्रकाशः

( तृतीयचतुर्थश्रेण्युपयोगाय )



मुम्बापुरी-विश्वविद्यालय-प्रदत्ताभिः एम्. ए. बी. टी. इत्युपाधिभिः
समलंकृतेन खाडिलकरकुलोत्पन्नेन दत्तात्रेयसूनुना
महाराष्ट्रवीरसूरिणा पाण्डुरङ्गशर्मणा विरचिता

कर्नाटक पब्लिशिंग हाउस, मुंबई

प्रथमावृत्ति: १९३८



Printed by M. N. Kulkarni at the Karnatak Printing Press, Chira Bazar, Bombay 2, and Published by him at the Karnatak Publishing House, Chira Bazar, Bombay 2

# प्रस्तावना.

—:०:—

'**संस्कृतचन्द्रिके**'चा **पहिला प्रकाश** ( पहिलें रीडर ) आज विद्यार्थ्यांच्या हातीं देण्याचा योग लाभला याबद्दल आनंद वाटत आहे.

इंग्रजी व संस्कृत या विषयांचें अध्यापन करण्यांत गेलें तप गेल्यामुळें विद्यार्थ्यांच्या संस्कृत भाषा शिकतांना येणाऱ्या अडचणींची पूर्ण जाणीव लेखकाला झाली आहे.

या क्रमिक पुस्तकमालेचे विशेष—

१ विषयाची उभारणी मानसशास्त्राच्या तर्कशुद्ध सिद्धान्तावर केली आहे.

२ जुनी व नवी पद्धत यांची उत्तम रीतीनें सांगड घातली आहे.

३ प्रत्येक पाठ मागील व पुढील पाठाशीं पूर्णपणें सुसंबद्ध आहे.

४ वाङ्मयद्वारा व्याकरण हें तत्त्व पूर्णांशानें अवलंबिलेलें आहे.

५ आजपर्यंत व्याकरणासाठीं एक व वाङ्मयासाठीं एक अशीं दोन पुस्तकें लावावीं लागत असत; पण या पुस्तकानें ती उणीव भरून काढली आहे. हें एकच पुस्तक जरूर तेवढें व्याकरण व वाङ्मय सुलभ रीतीनें शिकवील.

६ **अभ्यास** (exercises), **टीपा व व्याकरण** प्रत्येक पाठावर देऊन मुलांच्या विचारशक्तीला प्रेरणा मिळेल अशीही व्यवस्था केली आहे.

७ पाठ हे केवळ गोष्टीरूप नसून सर्व प्रकारचे आहेत. **गोष्टी, संवाद, कोडीं, सुभाषितें,** इत्यादि प्रकारचे पाठ ठेवल्यामुळें पुस्तक मनोरंजक केलें गेलें आहे.

८ व्याकरणाचें ज्ञान होण्यासाठीं पुष्कळ उदाहरणें दिलीं आहेत; व त्यासाठीं कोष्टकांचा उपयोग ठिकठिकाणीं केला आहे.

९ **सन्धिनियम** — पहिले नऊ पाठ सन्धिविरहित लिहिले आहेत. पुढें एक दोन सन्धि ( जेवढे सांगणें आवश्यक तेवढेच ) करून बाकी पाठ सन्धिविरहितच ठेवले आहेत. अशा रीतीनें जसजसे नियम समजत जातील तसतसा सन्धिविरहित मजकूर पुढें पुढें कमी कमी होत गेला आहे.

१० **पर्यायशब्दकोश** — विद्यार्थ्यांची शब्दसम्पत्ति वाढावी म्हणून शेवटीं ( परिशिष्ट १ लें ) अमरकोशांतील कांहीं शब्दांचे पर्यायशब्दवाचक श्लोक दिले आहेत.

११ ठिकठिकाणीं चित्रांचा भरपूर उपयोग केला आहे.

१२ पुस्तकांतून येणारे शब्द पुढें मूळ संस्कृतवाङ्मय वाचतां यावें अशा दृष्टीनेंच निवडले आहेत. संस्कृतवाङ्मयांत पुन्हां पुन्हां येणारे असे सुमारें ३००० शब्द लेखकानें निवडून काढले आहेत, व ते प्रकाश १, २ व ३ या पुस्तकांतून पद्धतशीर रीतीनें पसरून दिले आहेत.

१३ **पुस्तक पहिलें** ( प्रथम प्रकाश ) **तिसऱ्या** व **चौथ्या** इयत्तेकरितां लिहिलें आहे. **पुस्तक दुसरें** ( द्वितीय प्रकाश ) **पांचव्या** इयत्तेकरितां व **पुस्तक तिसरें** ( तृतीय प्रकाश ) **सहाव्या** इयत्तेकरितां अशी योजना आहे.

१४ हीं तीन पुस्तकें अभ्यासिल्यावर जरूर तेवढें सर्व व्याकरणज्ञान होऊन साधारणपणें संस्कृतवाङ्मय विशेष अडचणीशिवाय सुलभतेनें वाचतां येईल अशी लेखकास उमेद आहे.

शिक्षकबांधवांस हा माझा नवीन दिशेनें केलेला प्रयत्न पसंत पडून, त्यांजकडून मला उत्तेजन मिळेल असा विश्वास आहे.

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेसचे मालक, श्री. मं. ना. कुळकर्णी यांनीं हें पुस्तक अत्यल्पावधींत अतिशय सुबक रीतीनें छापून प्रकाशित केल्याबद्दल लेखक त्यांचा फार ऋणी आहे.

**‘ हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा ’**

—कालिदास.

५० जीवनजी महाराज चाळ,
काउ लेन, मुगभाट, मुंबई, नं. ४
१ जून १९३८

**पां. द. खाडिलकर,** M. A., B. T.
महाराष्ट्र-शाहीर

# अनुक्रमणिका

# प्राथमिक माहिती

१. कोणतीही भाषा शिकतांना त्यांतील कांहीं विशिष्ट प्राथमिक माहितीची जरूर असते. संस्कृतचें ज्ञान होण्याला आवश्यक आहे तेवढी माहिती दिली आहे. ती प्रथम नीटपणें समजावून घ्यावी.

## वर्णमाला

**स्वर :—**

| स्वर | सवर्ण (सजातीय) | सवर्ण (सजातीय) | सवर्ण (सजातीय) | सवर्ण (सजातीय) | सवर्ण (सजातीय) | संयुक्त स्वर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ऱ्हस्व | अ | इ | उ | ऋ | ऌ | |
| दीर्घ | आ | ई | ऊ | ॠ | नाहीं | ए, ऐ, ओ, औ |

**व्यञ्जन :—**

| वर्ण | वर्ग | कठोर व्यञ्जनें | | मृदु व्यञ्जनें | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | अनुनासिक |
| स्पर्श | क वर्ग | क् | ख् | ग् | घ् | ङ् |
| | च वर्ग | च् | छ् | ज् | झ् | ञ् |
| | ट वर्ग | ट् | ठ् | ड् | ढ् | ण् |
| | त वर्ग | त् | थ् | द् | ध् | न् |
| | प वर्ग | प् | फ् | ब् | भ् | म् |
| अन्तस्थ वर्ण | | | | य् र् ल् व् | | |
| उष्म वर्ण | | श् ष् स् | | ह् | | |

## गुण व वृद्धि

| स्वर | अ | इ ई | उ ऊ | ऋ ॠ | ऌ |
|---|---|---|---|---|---|
| गुण | अ | ए | ओ | अर् | अल् |
| वृद्धि | आ | ऐ | औ | आर् | आल् |

२. **अक्षर**—स्वर अथवा व्यञ्जनयुक्त स्वर ह्याला अक्षर म्हणतात. क ( क्+अ ); आ.

**जोडाक्षर :**—दोन किंवा अधिक व्यञ्जनें त्यांच्यामध्यें स्वर न येतां जेव्हां जोडलीं जातात तेव्हां त्याला **जोडाक्षर** म्हणतात. क्र ( क् + र् + अ ); द्र–( द्+ र् +अ ).

३. (अ) **स्वरादि व स्वरान्त** शब्द :—ज्या शब्दाची सुरवात स्वरानें होते ते स्वरादि. अज्ञ; आत्मा; ज्यांचा शेवट स्वरानें होतो ते स्वरान्त. **राम** – राम् + अ; गुरु – गुर् + उ.

( आ ) **स्वरादि व्यञ्जनान्त** शब्द :—**आस्** ; **अच्** इत्यादि.

**स्वरादि स्वरान्त** शब्द :—**अरुण**; **अल्प** इत्यादि.

( इ ) **व्यञ्जनादि स्वरान्त**—**राम**; **हरि** इत्यादि.

( ई ) **व्यञ्जनादि व्यञ्जनान्त**—**मरुत्** ; **भगवत्** ; **वाच्**.

४. **विसर्ग** : ; **अनुस्वार** ं.

५. **सन्धि :**—अत्यंत जवळ आल्यामुळें जो वर्णांचा मिलाफ होतो, म्हणजे जवळ आलेल्या वर्णांचा एकमेकांवर जो परिणाम होतो त्याला सन्धि असें म्हणतात.

सन्धींचे प्रकार :—

( १ ) स्वर + स्वर
( २ ) स्वर + व्यञ्जन
( ३ ) व्यञ्जन + स्वर
( ४ ) व्यञ्जन + व्यञ्जन
( ५ ) विसर्ग + स्वर
( ६ ) विसर्ग + व्यञ्जन

वरील प्रकारावरून स्थूल रूपानें सन्धींचे तीन मुख्य प्रकार पडतात:— १ स्वरसन्धि, २ व्यञ्जनसन्धि, ३ विसर्गसन्धि.

**६. कांहीं पारिभाषिक संज्ञा:—**

| संस्कृत | मराठी | इंग्रजी |
|---|---|---|
| १ लट् ( वर्तमान ) | वर्तमानकाळ | Present tense. |
| २ लङ् | अनद्यतन भूतकाळ<br>प्रथम भूतकाळ | Imperfect |
| ३ लोट् | आज्ञार्थ | Imperative mood. |
| ४ विधिलिङ् | विध्यर्थ | Potential mood. |
| ५ उत्तम पुरुष | प्रथम पुरुष | First person. |
| ६ मध्यम पुरुष | द्वितीय पुरुष | Second person. |
| ७ प्रथम पुरुष | तृतीय पुरुष | Third person. |
| ८ सिद्ध धातु | सिद्ध धातु | Primitive roots |
| ९ प्रत्ययान्त धातु | साधित धातु | Derivative roots. |
| १० कर्तरि प्रयोगः | कर्तरिप्रयोग | Active voice. |
| ११ कर्मणिप्रयोगः | कर्मणिप्रयोग | Passive voice. |
| १२ भावेप्रयोगः | भावेप्रयोग | Impersonal construction |
| १३ तुमुनन्त | हेत्वर्थ धा. सा. अव्यय | Infinitive. |
| १४ क्त्वान्त<br>ल्यबन्त | पूर्वकालवाचक धा. सा. अ. | Gerund. |
| १५ शत्रन्त<br>शानजन्त | वर्तमान का. वा. धा. सा. वि. | Present participle. |
| १६ क्तान्त | कर्मणि आणि भावे भू. का. धा. वि. | Past passive participle. |
| १७ क्तवत्वन्त | कर्तरि भू. धा. सा. वि. | Past active participle. |
| १८ कृत्यप्रत्ययान्त | विध्यर्थ कर्मणि धा. सा. वि. | Potential participle. |

# प्रथमः पाठः

**गच्छ । आगच्छ । राम गच्छ । राम आगच्छ । नम । तिष्ठ । कृष्ण, उपविश । मुकुन्द, धाव । पठ । बाल, गच्छ । बालाः गच्छत । बाल, आगच्छ । बालाः आगच्छत । बालाः नमत । तिष्ठत । उपविशत । धावत । पठत । मधुकर, पश्य । कुमाराः, पश्यत । वाचय । वाचयत ।**

## अभ्यास

( १ ) रिकाम्या जागा भरा :—

| एकवचन | एकवचन | बहुवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| **कुमार** | **हस** | **कुमाराः** | |
| | **पठ** | **बालकाः** | |

( २ ) या पाठांतील एकवचनी व बहुवचनी क्रियापदें शोधून तीं खालीं दिलेल्या रकान्याप्रमाणें रकाने तयार करून त्यांत दाखवा :—

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| | |

## व्याकरण

वरील अभ्यासावरून खालील प्रश्नांचीं उत्तरें द्या:—

( १ ) **गच्छ, आगच्छ, नम** वगैरे कोणत्या अर्थाचीं, कोणत्या पुरुषाचीं व कोणत्या वचनाचीं रूपें आहेत ?

( २ ) **गच्छत, तिष्ठत, धावत** इत्यादि कसलीं रूपें असावींत तें ओळखा.

( ३ ) यांची व मराठी मधल्या रूपांची तुलना करा.

# द्वितीयः पाठः

**इन्दिरे, नम। शारदे, उपविश। शान्ते, पुस्तकं वाचय। राधे, गृहं गच्छ। स्नेहलते, धाव। बालिके, नम। बालिकाः, नमत। बालाः पश्यत। बाले पश्य।**

## व्याकरण

मुलांनो, पहिला व दुसरा असे दोन्ही पाठ दृष्टीसमोर आणा आणि संबोधनाचीं रूपें कशीं झालीं आहेत तें पहा:—

| मूळ शब्द | संबोधन एकवचन | संबोधन बहुवचन | लिंग |
|---|---|---|---|
| **राम** | **राम** | ... | **पुंलिंग** |
| **कृष्ण** | **कृष्ण** | ... | ,, |
| **बाल** | **बाल** | **बालाः** | ,, |
| **कुमार** | **कुमार** | **कुमाराः** | ,, |
| **इन्दिरा** | **इन्दिरे** | ... | **स्त्रीलिंग** |
| **शारदा** | **शारदे** | ... | ,, |
| **शान्ता** | **शान्ते** | ... | ,, |
| **स्नेहलता** | **स्नेहलते** | ... | ,, |
| **बालिका** | **बालिके** | **बालिकाः** | ,, |
| **बाला** | **बाले** | **बालाः** | ,, |

## अभ्यास

( १ ) खालील शब्दांचीं संबोधनाचीं एकवचन व बहुवचनाचीं रूपें द्या:—

**वृक्ष, मनुष्य, जीव, रमा, उमा, चन्द्रिका, तारका.**

# तृतीयः पाठः

रामः गच्छति । गोविन्दः गच्छति । कृष्णः गच्छति । रामः आगच्छति । गोविन्दः आगच्छति । कृष्णः आगच्छति । इन्दिरा नमति । शान्ता नमति । सुभद्रा नमति । अहम् गच्छामि । अहम् नमामि । अहम् धावामि । अहम् तिष्ठामि । अहम् उपविशामि । त्वम् गच्छसि । त्वम् आगच्छसि । उपविश । त्वम् उपविशसि । तिष्ठ । त्वम् तिष्ठसि । नम । त्वम् नमसि । सः गच्छति । सः नमति । सः तिष्ठति । सः हसति । अहम् हसामि । त्वम् हससि । सः हसति ।

## अभ्यास

( १ ) डाव्या बाजूस दिलेल्या प्रत्येक शब्दापुढें उजव्या बाजूस दिलेल्या क्रियापदांतून योग्य क्रियापदांची निवड करून पुन्हां मांडणी करा :—

| | |
|---|---|
| अहम् | धावसि |
| केशवः | उपविशति |
| त्वम् | हसामि |

( २ ) रिकाम्या जागा भरा :—

| | | |
|---|---|---|
| गच्छति | गच्छ | गच्छत |
| पश्यति | ——— | ——— |
| हसति | ——— | ——— |
| ——— | ——— | तिष्ठत |
| ——— | पठ | पठत |
| ——— | उपविश | ——— |

## व्याकरण.

( १ ) मुलांनो, तिसऱ्या पाठांत दिलेल्या वाक्यांपैकीं कांहीं वाक्यें आपण खालील प्रमाणें लिहूं म्हणजे पाहा तुम्हांला व्याकरणांतील एक दोन गमती दिसतील :–

| प्रथम पुरुष | | द्वितीय पुरुष | | तृतीय पुरुष | |
|---|---|---|---|---|---|
| कर्ता | क्रियापद | कर्ता | क्रियापद | कर्ता | क्रियापद |
| **अहम्** | **गच्छामि** | **त्वम्** | **गच्छसि** | **रामः** | **गच्छति** |
| **अहम्** | **धावामि** | **त्वम्** | **धावसि** | **गोविन्दः** | **धावति** |

वर दाखविलेल्या नमुन्याप्रमाणें या पाठांतील सर्व वाक्यें योग्य ठिकाणीं लिहा पाहूं.

( २ ) कर्तृवाचक शब्द कोणत्या विभक्तींत असतो ?

( ३ ) या पाठांतील प्रथमा विभक्तींतले कांहीं शब्द सांगा.

( ४ ) प्रथमा विभक्तींतले शब्द कोणत्या वचनांतले आहेत तें बोला पाहूं.

# चतुर्थः पाठः

**अहम् नमामि । वयम् नमामः । अहम् गच्छामि । वयम् गच्छामः । अहम् वदामि । वयम् वदामः । त्वम् नमसि । यूयम् नमथ । त्वम् उपविशसि । यूयम् उपविशत । त्वम् धावसि । यूयम् धावत । एषः नमति । एते नमन्ति । एषः चलति । एते चलन्ति । सः नमति । ते नमन्ति । भक्तः नमति । भक्ताः नमन्ति । बालः पठति । बालाः पठन्ति । अश्वः खादति । अश्वाः खादन्ति ।**

## अभ्यास

( १ ) रिकाम्या जागा भरा :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **अहम्** | **पश्यामि** | **वयम्** | ——— |
| **अहम्** | ——— | **वयम्** | **तिष्ठामः** |
| **सः** | **उपविशति** | **ते** | ——— |
| **त्वम्** | ——— | ——— | **गच्छथ** |
| ——— | ——— | **एते** | **आगच्छन्ति** |

( २ ) डाव्या व उजव्या बाजूस दिलेल्या शब्दांतून योग्य जोड्या तयार करा :—

| | |
|---|---|
| अहम् | धावन्ति |
| यूयम् | गच्छसि |
| वयम् | वदति |
| ते | वदामि |
| त्वम् | वहथ |
| सः | पठामः |

## व्याकरण.

( १ ) तिसऱ्या पाठांत तुम्ही एकवचन शिकलांत. या पाठांत तुम्हांला आणखी कोणतें वचन दिसलें ? त्याचीं कांहीं रूपें दाखवा पाहूं.

( २ ) खालीं दाखविलेल्या नमुन्याप्रमाणें या व मागच्या पाठांतील रूपें नमुना तयार करून वहींत लिहा.

### प्रथम पुरुष

| एकवचन कर्ता | एकवचन क्रियापद | बहुवचन कर्ता | बहुवचन क्रियापद |
|---|---|---|---|
| अहम् | नमामि | वयम् | नमामः |

### द्वितीय पुरुष

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | |

### तृतीय पुरुष

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | |

# पञ्चमः पाठः

एषः हस्तः । एषः मम हस्तः । सः तव हस्तः । एषः मम केशः । सः तव केशः । सः तस्य केशः । एतौ मम हस्तौ । तौ तव हस्तौ । तौ तस्य हस्तौ । एषः मम कर्णः । तव कर्णम् दर्शय । एषः मम कपोलः । तव कपोलम् दर्शय । कपोलम् दर्शयत । एषः मम अधरः । अधरम् दर्शय । अधरम् दर्शयत ।

## अभ्यास

( १ ) चुका सुधारा :—

सः तव कर्णाः । एषः तस्य कपोलाः । ते तव कण्ठः । एते मम दन्तः ।

( २ ) रिकामीं स्थानें भरा :–

| एकवचन | | बहुवचन | |
|---|---|---|---|
| ______ | कण्ठः | अस्माकम् | |
| | कपोलः | युष्माकम् | कपोलाः |
| ______ | हस्तः | तेषाम् | ______ |

## व्याकरण

( १ ) कर्म कोणत्या विभक्तींत असतें ? कर्म असलेले तीन शब्द लिहा.

( २ ) या पाठांत आणखी कोणत्या विभक्तींतले शब्द तुम्हांला आढळतात ? तीन शब्द दाखवा पाहूं.

( ३ ) पांच पाठांतून तुम्हांला संबोधन, प्रथमा, द्वितीया आणि षष्ठी अशा चार विभक्तींचीं रूपें आढळलीं. प्रत्येक विभक्तींतील तीन तीन शब्द लिहा.

( ४ ) **कर्णम् दर्शय** या वाक्यांत दोन शब्द; एक **कर्णम्** व दुसरा **दर्शय.** पहिल्या शब्दाच्या शेवटीं **म्** हें अनुनासिक आहे. वाक्यांतून जेव्हां याच्यापुढें दुसरे व्यञ्जनादि शब्द येतात तेव्हां या **म्** चा अनुस्वार करण्याचा प्रघात आहे. **कर्णम् दर्शय** असें लिहिण्याचे ऐवजीं **कर्णं दर्शय** असें लिहितात. **म्** च्या पुढें स्वरादि शब्द आल्यास **म्** त्या स्वरांत मिळून जातो. जसें **अहम् अत्र** येथें **म्** च्या पुढें **अ** स्वर आला आहे म्हणून **म्** 'अ' त मिळून जातो. **अहमत्र** याला सन्धि असें म्हणतात.

---

# षष्ठः पाठः

**एषः मुकुन्दः। राम, मुकुन्दस्य हस्तं धर। रामः किं करोति? रामः मुकुन्दस्य हस्तं धरति। गजानन, आगच्छ। मुकुन्दस्य कर्णं स्पृश। किं करोति गजाननः? गजाननः मुकुन्दस्य कर्णं स्पृशति। आगच्छ रे केशव। रामस्य हस्तं कर्ष। किं करोति केशवः? केशवः रामस्य हस्तं कर्षति।**

## अभ्यास

( १ ) एषः मर्कटः




चित्राकडे पाहून खालील वाक्यांत आंकडे घालून ठेवलेल्या रिकाम्या जागा भरा :—

१ माधवः मर्कटस्य  १  स्पृशति।

२ कुमारः तस्य  २  दर्शयति।

३ बालाः तस्य  ३  कर्षन्ति।

( २ ) सुधारा :—

( १ ) वामनः श्रीधरस्य कर्णः स्पृशति ।

( २ ) बालकाः अश्वस्य केशः कर्षंति ।

### व्याकरण

या पाठांत खालील शब्द कोणत्या विभक्तींत वापरले आहेत तें सांगा :

मुकुन्द; राम; केशव.

---

## सप्तमः पाठः

एषः अश्वः। अस्य द्वौ कर्णौ, द्वे नेत्रे चत्वारः पादाः च सन्ति। एकं लाङ्गूलं भवति। अस्य वर्णः श्यामः।



एषः वृक्षस्य तले तिष्ठति। मुखेन सः तृणं खादति। सूर्यस्य किरणाः चण्डाः। किंतु वृक्षस्य तलं शीतलमस्ति। तस्मात् सः तत्र तिष्ठति। तस्य समीपे एकः नरः अस्ति। सः तस्य रक्षकः। तस्य हस्ते कशा अस्ति।

### अभ्यास

खालील प्रश्नांचीं उत्तरें संस्कृत भाषेंतच द्या :—

१ कः वृक्षस्य तले तिष्ठति ?

२ अश्वः कुत्र तिष्ठति ?

३ नरस्यः हस्ते किम् अस्ति ?

४ कः वर्णः अश्वस्य ?

### व्याकरण.

१ **शीतलम्+अस्ति** याविषयीं मागें काय सांगितलें आहे तें सांगा पाहूं.

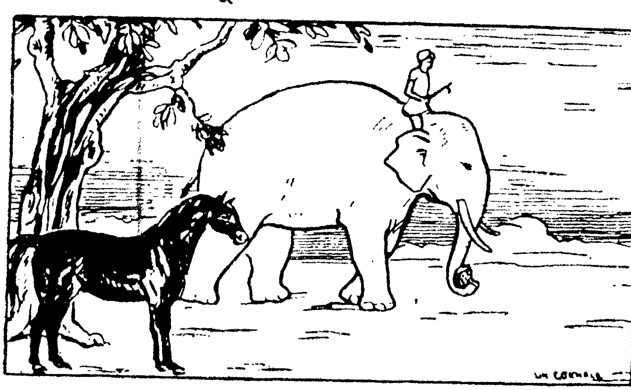
२ या पाठांत आणखी दोन विभक्ति अधिक आल्या आहेत. पहाः— **मुखेन** ( मुख )-कोणती विभक्ति ही ?

तसेंच-**तले** ( तल ), **समीपे** ( समीप ), **हस्ते** ( हस्त ) ही कोणती विभक्ति असावी ?

३ या पाठांत षष्ठी विभक्तींत आलेले शब्द हुडकून काढा पाहूं.

## अष्टमः पाठः

**नवीनाः शब्दाः**—अपूप । धवल । कति ।



**प्रश्नाः**—१ कः एषः ? २ कति कर्णाः अस्य ? ३ कति पादाः सन्ति ? ४ किं खादति सः ? ५ कति नेत्राणि अस्य ? ६ कः अस्य वर्णः ?

### अभ्यास

गजवर्णनं गीर्वाणभाषायां लिखत ।

# नवमः पाठः


प्रथमा – रामः
द्वितीया – रामम्
तृतीया – रामेण
चतुर्थी – रामाय
पंचमी – रामात्
षष्ठी – रामस्य
सप्तमी – रामे
संबोधनम् – राम

**प्रश्नाः**—१ कः अस्ति कौसल्यायाः समीपे? २ कं पश्यति सा जलस्य समीपे? ३ केन सह सा गच्छति? ४ कौसल्या कस्मै दुग्धं यच्छति? ५ सा कस्मात् दुग्धपात्रं हरति? ६ कस्य हस्तं धरति कौसल्या? ७ सा कस्मिन् आनन्दं लभते? ८ किं वदति कौसल्या?

## अभ्यास

रामस्य कथां गीर्वाणभाषायां लिखत.

## व्याकरण

१ या पाठांत राम शब्दाचीं पुंल्लिङ्गी एकवचनाचीं सर्व रूपें आलीं आहेत. याप्रमाणेंच अकारान्त पुंल्लिङ्गी शब्दांचीं रूपें होतात.

२ अकारान्त पुंल्लिङ्गी शब्द—**राम, लक्ष्मण, केशव, जन,** इत्यादि; अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द—**वन, लाङ्गूल, तल, जल,** इत्यादि; आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्द—**कौसल्या, सीता, रमा, पाठशाला.**

# दशमः पाठः

**एषा मम पाठशाला। अत्राहं प्रतिदिनमागच्छामि। अहं तृतीये वर्गे पठामि। मम वर्गे पञ्चविंशतिः छात्राः सन्ति।**

**वर्गे फलको वर्तते। तस्योपरि शिक्षकाः सौधखण्डेन लिखन्ति। वर्गे वेलापत्रकं वर्तते। के के विषयाः कदा कदा पठनीयाः तत् तस्मिन् लिखितमस्ति।**

**एतत् क्रीडाङ्गणम्। अत्र छात्राः सन्ध्याकाले क्रीडन्ति। अहमपि प्रत्यहं क्रीडामि।**

**अस्माकं शिक्षका अध्यापने कुशलाः सन्ति। न कदापि मम पाठशालामहं विस्मरामि।**


श्री गंगा

## अभ्यास

( १ ) प्रश्ना :—१ तव वर्गे कति छात्राः सन्ति ?
२ वेलापत्रके किं लिखितमस्ति ?
३ के क्रीडन्ति क्रीडाङ्गणे ?
४ कीदृशाः तव शिक्षकाः सन्ति ?

( २ ) सप्तमी विभक्तींतील रूपें हुडकून काढा.

## व्याकरण

**सन्धिः**—मुलांनो या पाठापासून पुढें तुम्हांला संस्कृतभाषेंतील सन्धि शिकावयाचे आहेत. सन्धि म्हणजे काय असतात याची कल्पना तुम्हांस सुरवातीस आलीच आहे. मराठी भाषेंतसुद्धां पुष्कळ सन्धि येतात. उदा० **कंस+अरि=कंसारि; मुर+अरि=मुरारि; सूर्य+उदय=सूर्योदय; दर्प+उक्ति=दर्पोक्ति; भानु+उदय=भानूदय;** वगैरे. संस्कृत-भाषेंत मुख्यतः **स्वरसन्धि, विसर्गसन्धि** व **व्यंजनसन्धि** असे तीन प्रकार आहेत. ते तीनही प्रकार आपणाला प्रत्येक पाठांत थोडे थोडे शिकावे लागतील. या पाठांत आपण तीन चार उदाहरणें पाहूं :

## सन्धि

### ( अ ) स्वरसन्धि

१. हीं उदाहरणें पहा :—**अत्र + अहम् = अत्राहम्.** तसेंच, **चित्र + अङ्गद = चित्राङ्गद; राम + अवतार = रामावतार; देव + आज्ञा = देवाज्ञा; सीता + अपहरण = सीतापहरण; सुधा + आहार = सुधाहार.**

**रचना :**—मागील स्वर + पुढील स्वर = परिणाम

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **चित्र** | ( अ ) + | ( अ ) **अङ्गद** | = ( आ ) | **चित्राङ्गद** |
| **देव** | ( अ ) + | ( आ ) **आज्ञा** | = ( आ ) | **देवाज्ञा** |
| **सीता** | ( आ ) + | ( अ ) **अपहरण** | = ( आ ) | **सीतापहरण** |
| **सुधा** | ( आ ) + | ( आ ) **आहार** | = ( आ ) | **सुधाहार** |

वरील गोष्टी लक्षांत ठेऊन नियम बनवून सांगा.

**नियम १.—अ किंवा आ च्यापुढें अ अथवा आ आल्यास सन्धि आ होतो.**

२ तस्य + उपरि = तस्योपरि; गङ्गा + उदक = गङ्गोदक

असले दोन चार सन्धि लिहा.

**रचना:**—मागचा स्वर + पुढचा स्वर = परिणाम.

अ किंवा आ + उ किंवा ऊ = ओ

**नियम २.—अ किंवा आ च्या पुढें उ, ऊ स्वर आले तर सन्धि ओ होतो.**

## (आ) विसर्गसन्धि

**फलकः वर्तते = फलको वर्तते ।**

यांतील रचना पाहूं :-

| मागचा वर्ण | विसर्ग | पुढचा वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|---|
| फलक (अ) | : | व् (वर्तते) | फलको (अ + : = ओ) वर्तते |
| राम (अ) | : | ग् (गच्छति) | रामो (अ + : = ओ) गच्छति |
| कृष्ण (अ) | : | ध् (धरति) | कृष्णो (अ + : = ओ) धरति |

अशा प्रकारचीं उदाहरणें तुम्हांला देतां येतील; पण एक गोष्ट लक्षांत ठेवा :-

**नियम ३.—विसर्गाच्या मागें अ व पुढें मृदु व्यंजन असेल तर अ आणि विसर्ग यांचे स्थानीं ओ आदेश होतो.**

या नियमाप्रमाणें कोणतीं व्यञ्जनें पुढें येतां कामा नयेत तें सांगा पाहूं.

**शिक्षकाः अध्यापने = शिक्षका अध्यापने ।**

**रचनाः**—

| मागचा वर्ण | विसर्ग | पुढचा वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|---|
| शिक्षका (आ) | : | (अ) अध्यापने | शिक्षका (विसर्गलोप) अध्यापने |
| बाला (आ) | : | (अ) अनुसरन्ति | बाला (विसर्गलोप) अनुसरन्ति |
| बाला (आ) | : | (आ) आगच्छन्ति | बाला (विसर्गलोप) आगच्छन्ति |
| वृक्षा (आ) | : | (उ) उद्भवन्ति | वृक्षा (विसर्गलोप) उद्भवन्ति |

**नियम ४—विसर्गाच्या मागें आ व पुढें कोणताही स्वर अथवा मृदु व्यञ्जन असेल तर विसर्गाचा लोप होतो.**

पुढें मृदु व्यञ्जन असलेलीं व त्यामुळें विसर्गाचा लोप झालेलीं अशीं दोन तीन उदाहरणें द्या.

### ( इ ) व्यंजनसन्धि

**प्रतिदिनम् + आगच्छामि = प्रतिदिनमागच्छामि.**

असलीं दोन तीन उदाहरणें द्या.

---

# एकादशः पाठः

## ( विभक्तिरूपें )

| | अकारान्त पुंल्लिंगी शब्द | | | अकारान्तनपुंसकलिंगी शब्द | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | **राम** | | | **वन** | | |
| | ए. व. | द्वि. व. | ब. व. | ए व. | द्वि. व. | बहु व. |
| प्र. | **रामः** | **रामौ** | **रामाः** | **वनम्** | **वने** | **वनानि** |
| द्वि. | **रामम्** | ,, | **रामान्** | ,, | ,, | ,, |
| तृ. | **रामेण** | **रामाभ्याम्** | **रामैः** | **वनेन** | **वनाभ्याम्** | **वनैः** |
| च. | **रामाय** | ,, | **रामेभ्यः** | **वनाय** | ,, | **वनेभ्यः** |
| पं. | **रामात्** | ,, | ,, | **वनात्** | ,, | ,, |
| ष. | **रामस्य** | **रामयोः** | **रामाणाम्** | **वनस्य** | **वनयोः** | **वनानाम्** |
| स. | **रामे** | ,, | **रामेषु** | **वने** | ,, | **वनेषु** |
| सं. | **राम** | **रामौ** | **रामाः** | **वन** | **वने** | **वनानि** |

**गज, अश्व, मर्कट, केशव** वगैरे शब्द **राम**प्रमाणें चालतात.

**वन, लाङ्गूल, तल, जल** वगैरे शब्द **वन**प्रमाणें चालतात.

## अभ्यास

( अ ) लिहा—

( १ ) प्रथमा एकवचनः—**फलक** (पु.), **क्रीडाङ्गण** (न.), **अश्व** (पु.), **लाङ्गूल** (न.)

( २ ) द्वितीया **बहुवचनः—अपूप** ( पु. ), **हस्त** ( पु. )

( ३ ) षष्ठी द्विवचनः—**वृक्ष** ( पु. ), **मुकुन्द** ( पु. )

( ४ ) सप्तमी बहुवचनः—**तल** ( न. ), **गज** ( पु. )

( ब ) खालील पदें कोणत्या विभक्तींत आहेत तें ओळखा :—

**अध्यापने** ( अध्यापन न. ); **विषयाः** ( विषय पु. )

**सौधखण्डेन** ( सौधखण्ड पु. ); **तृतीये** ( तृतीय विशेषण. )

## व्याकरण

( अध्यापकांनीं खालील कारक संबंध विद्यार्थ्यांना समजावून द्यावेत. तें चाललें असतांना मराठींतील कारकसंबंधांशीं नीट सांगड घालून द्यावी. )

**कारकसंबंध :—**

( १ ) **कर्ता :**—प्रथमा विभक्तींत असतो.

( २ ) **कर्म :**—द्वितीया विभक्तींत असतें.

( ३ ) **करण :**—तृतीया विभक्तींत असतें.

**टीप :**—कर्मणि प्रयोगांत कर्तरि प्रयोगांतील कर्ता तृतीया विभक्तींत असतो; तसेंच तो भावे प्रयोगांतही असतो. )

( ४ ) **संप्रदान :**—ज्याला एखादी वस्तु देणेची असेल तो शब्द चतुर्थींत असतो.

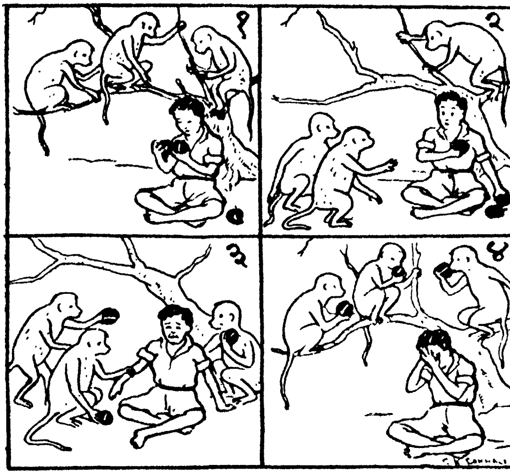
( ५ ) **अपादान :**—ज्याच्यापासून एखादी वस्तु घेणेची असेल तो शब्द पंचमी विभक्तींत असतो.

( ६ ) **संबंध :**—हे संबंध नाना प्रकारचे आहेत. यांची षष्ठी विभक्ति.

( ७ ) **अधिकरण :**—स्थल व काल दाखविणारे शब्द सप्तमींत असतात.

( ८ ) **संबोधन :**—मनुष्याला किंवा कोणालाही बोलवावयाचें असल्यास याचा उपयोग करतात.

# द्वादशः पाठः




एकः ——— वृक्षस्य ——— तिष्ठति । तस्य ——— आम्राणि सन्ति । ——— त्रयः ——— सन्ति । बालस्य हस्त आम्राणि दृष्ट्वा ते ——— अवतरन्ति । ते तस्य बालस्याग्रतः तिष्ठन्ति । वानराः ——— प्रसार-यन्ति । कुमारः ——— फलानि न यच्छति । तस्मात् ते कुपिता भवन्ति । मर्कटाः तस्य ——— धरन्ति आम्राणि च ——— अपहरन्ति । वानराः सत्वरं धावन्ति पुनः ——— आरोहन्ति । बालस्य ——— जलं ——— पतति । बालो मुखं वक्रं करोति । हस्ताभ्यां च वदनं संवृणोति ।

**सूचना** :—खालीं दिलेल्या पदांतून योग्य पदांची निवड करून या पाठांत ठेवलेल्या रिकाम्या जागा भरा :—

वृक्षात्; वानरेभ्यः; हस्तम्; हस्तात्; बालकः; वानराः; हस्ते; वृक्षम्; वृक्षे; हस्तान्; नेत्रयोः; तले; कपोलयोः.

## अभ्यास

१ या पाठांत शक्य असेल तेथें तुम्हीं शिकलेले सन्धि उपयोगांत आण

२ या गोष्टीच्या आधारें कोणतेही दोन प्रश्न संस्कृतभाषेंत तयार क

## व्याकरण

### (अ) स्वरसन्धि

**सन्धिः**—हस्ते आम्राणि = हस्त आम्राणि.

**रचनाः**—मागचा स्वर + पुढचा स्वर = परिणाम.

हस्ते (ए) + आ (आम्राणि) (१) हस्त (ए चा अ) आम्राणि.

अथवा (२) हस्त (ए चा अय्) याम्राणि.

**नियम ५.—ए स्वरापुढें अ खेरीज कोणताही स्वर आल्यास ए चा अ अथवा अय् करावा.**

**उदाहरणें**:—तले + उपविशति.

तल् + ए + उपविशति.

तल् + अ + उपविशति.

तल उपविशति (पुन्हां सन्धि करावयाचा नाहीं.)

किंवा :—

तल् + ए + उपविशति.

तल् + अय् + उपविशति.

तलयुपविशति.

**टीप**:—ए च्या पुढें अ स्वर आल्यास एऽ असा सन्धि होतो; म्हणजे अ बद्दल फक्त ऽ असें चिन्ह येतें.

उदा०—रामे + अत्र = रामेऽत्र; तले + अवतरति = तलेऽवतरति.

### (आ) विसर्गसन्धि

**कुपिताः भवन्ति = कुपिता भवन्ति।**

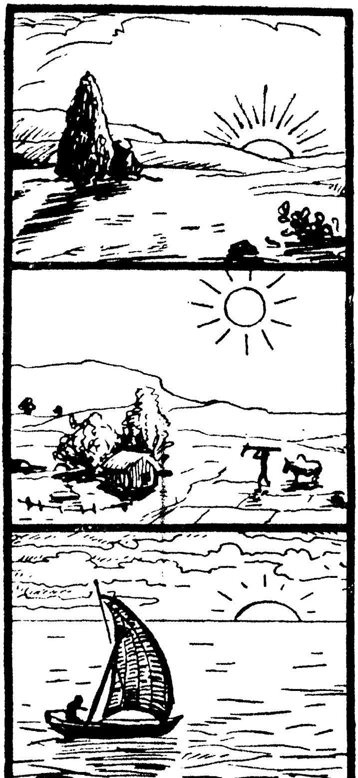
**रचना**:—

| मागचा वर्ण | विसर्ग | पुढचा वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|---|
| कुपिता (आ) | : | (भ्) भवन्ति | कुपिता (विसर्गलोप) भवन्ति |
| जना (आ) | : | (ग्) गच्छन्ति | जना (विसर्गलोप) गच्छन्ति |
| बाला (आ) | : | (व्) वदन्ति | बाला (विसर्गलोप) वदन्ति |

**नियम ६.—विसर्गामागें आ व पुढें मृदुव्यञ्जन आल्यास विसर्गाचा लोप होतो.**

# त्रयोदशः पाठः

एष सूर्यः। स पूर्वदिशायामुदयति। पश्चिमदिशायां चास्तं गच्छति। उदयेऽस्ते च तस्य वर्णो रक्तः। यथा यथा स आकाश उपर्युपरि सरति तथा तथा तस्य वर्णो धवलो भवति। मध्याह्ने सूर्यस्य किरणाः चण्डाः भवन्ति। तदा तं द्रष्टुं न कोऽपि समर्थः।



दिनस्य चत्वारः प्रहराः। प्रथमे प्रहरे भास्करस्य कराः किंचित् उष्णाः। द्वितीये प्रहरेत उष्णतराः। तृतीये तद्युष्णतमाः। चतुर्थे ते पुनः किंचित् उष्णा भवन्ति।

आदित्यः प्राणिमात्राय प्रकाशमुष्णतां च यच्छति। एष जीवनस्य शक्तिः। अस्य प्रभावात् वृक्षा वर्धन्ते। जलं स्वच्छं भवति। आकाशे मेघा उद्भवन्ति जलं च वर्षन्ति।

खगः समुद्रस्य जलं ग्रीष्मकाले कर्षति तदा जलं बाष्परूपं भवति। बाष्पस्यैव मेघा भवन्ति। मेघा वर्षाकाले पुनर्जलं यच्छन्ति।

सूर्योऽस्माकं पोषकः। तस्मात् प्रतिदिनं प्रभाते वयं तं नमामः।

## अभ्यास

( १ ) प्रश्नाः—( १ ) सूर्यस्य किरणाः मध्याह्ने कीदृशाः भवन्ति ?
( २ ) सूर्यः प्राणिमात्राय किं प्रयच्छति ?
( ३ ) सूर्यस्य प्रभावात् कस्य मेघाः भवन्ति ?
( ४ ) कदा कदा सूर्यस्य वर्णः रक्तः भवति ?

( २ ) प्रथमा व सप्तमी विभक्तींतील सर्व शब्द लिहा.

( ३ ) सूर्यवाचक शब्द या पाठांत किती आले आहेत तें सांगा; ते कोणत्या विभक्तींतून योजले आहेत ?

( ४ ) खालील शब्द सूर्यवाचक आहेत. **मित्र, रवि, सूर्य, भानु, खग, हिरण्यगर्भ, मरीचि, आदित्य, अर्क, भास्कर,** ( सर्व पुंल्लिंगी )

५ ज्या ज्या ठिकाणीं तुम्हीं शिकल्यापैकीं सन्धि केले असतील ते न करतां ( म्हणजे पदच्छेद करून ) ह्याच पाठ पुन्हां सन्धिविरहित लिहा.

## व्याकरण

**सन्धिः—** ( अ ) **स्वरसन्धि**

**उपरि + उपरि = उपर्युपरि ।**

**रचना :—**

| मागील स्वर | पुढील स्वर | परिणाम |
|---|---|---|
| उपरि ( इ ) | ( उ ) उपरि | उपर् + य् + उपरि = उपर्युपरि |
| कवि ( इ ) | ( आ ) आज्ञा | कव्‌य् + आज्ञा = कव्याज्ञा |
| नदी ( ई ) | ( आ ) आरम्भ | नद् + य् + आरम्भ = नद्यारम्भ |

**नियम ७ :—इ ई च्या पुढें कोणताही असवर्ण ( इ ई खेरीज ) स्वर आल्यास त्या इ ई चा य् होतो; व नंतर हा य् पुढच्या स्वरांत मिळून जातो.**

**नियम ८ :—इ ई पुढें इ ई** आल्यास ( **सवर्ण स्वर** आल्यास ) सन्धि ई होतो.

जसें :—**कवि + ईश्वर = कवीश्वर; हरि + इच्छा = हरीच्छा.**

**बाष्पस्य + एव = बाष्पस्यैव ।**

**रचना :—**

| मागील स्वर | पुढील स्वर | परिणाम |
|---|---|---|
| **बाष्पस्य** ( अ ) | ए ( एव ) | **बाष्पस्यैव** ( ऐ ) |
| **प्रजा** ( आ ) | ऐ ( ऐक्य ) | **प्रजैक्य** ( ऐ ) |

**नियम ९. अ, आ, पुढें ए ऐ हे स्वर आले असतां ऐ असा सन्धि होतो.**

## ( आ ) **विसर्गसन्धि.**

एषः सूर्यः = एष सूर्यः । सः पूर्वदिशायाम् = स पूर्वदिशायाम् । एषः आगच्छति = एष आगच्छति । सः वदतिः = स वदति ।

**नियम १०. एषः आणि सः यांच्यामधला विसर्ग त्यांच्यापुढें अ खेरीज कोणताही स्वर अथवा कोणतेंही व्यंजन आलें असतां लुप्त होतो. या विसर्गापुढें अ स्वर आल्यास विसर्ग व मागचा स्वर यांचा ओ होतो व पुढच्या अ बद्दल ऽ असें चिह्न येतें.**

जसें:—**एषः अपि = एषोऽपि. सः अवतरति = सोऽवतरति. कः अपि = कोऽपि. रामः अपि = रामोऽपि. मर्कटः अवतरति = मर्कटोऽवतरति.**

**नियमः ११. विसर्गाच्या पूर्वी अ स्वर व पुढें अ स्वर आल्यास पूर्वीचा स्वर** ( अ ) **व विसर्ग यांचा ओ होतो व पुढच्या अ बद्दल ऽ हें चिह्न येतें.**

## **विशेषणें.**

संस्कृत भाषेंत विशेषणेंसुद्धां तीं ज्या नामाचीं विशेषणें असतील त्या नामांचीं लिंग, वचन व विभक्ति घेतात. मराठींत नामाप्रमाणें विशेषण कित्येक ठिकाणीं लिंग व वचन घेतें; पण विभक्तिप्रत्यय कोठेंच घेत नाहीं. पण संस्कृत भाषेंतील हें एक विशेष आहे. जसें:—**धवलः अश्वः, धवलेन अश्वेन, धवलाय अश्वाय ।**

## अभ्यास

खालीं लिहिलेल्या वाक्यांत दिलेल्या विशेषणांचीं योग्य विभक्तिरूपें लिहा :—

१ ( अल्प ) जले मत्स्याः न निवसन्ति ।

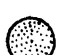
२ हंसस्य वर्णः ( धवल ) ।

३ ( वीर ) रामः ( प्रिय ) लक्ष्मणेन सह ( घोर ) वनम् अगच्छत् ।

४ सूर्यस्य किरणाः ( प्रखर ) ।

५ अत्र ( अल्प ) जलम् अस्ति ।

## विशेषणांचा तरतमभाव

| | मूळरूप | तर-भाव | तम-भाव |
|---|---|---|---|
| | उच्च  | उच्चतर  | उच्चतम  |
| | कृष्ण  | कृष्णतर  | कृष्णतम  |
| | रक्त | रक्ततर | रक्ततम |
| | उष्ण | उष्णतर | उष्णतम |
| | धवल  | धवलतर  | धवलतम  |
| | मधुर | मधुरतर | मधुरतम |
| | कटु | कटुतर | कटुतम |
| प्रत्यय | × | तर | तम |

# चतुर्दशः पाठः

एषः चन्द्रः। अस्य किरणाः शीतलाः। सः निशायाम् उदयति। प्रभाते च अस्तं गच्छति।



मासस्य द्वौ पक्षौ। प्रथमस्य पक्षस्य प्रथमे दिने इन्दुः क्षीणः अस्ति। द्वितीये दिने तस्य आकारः किंचित् वर्धते। एवम् शुक्लपक्षे हिमकरः प्रतिदिनं वर्धते। चन्द्रः पौर्णिमायां पूर्णः वर्तुलाकारः भवति।

कृष्णपक्षे सः पुनर् दिने दिने क्षीणः भवति। अमावास्यायां च न कः अपि तम् आकाशे पश्यति।

पौर्णिमायां चन्द्रस्य प्रकाशः जनानां चित्तं हरति। पर्वताः सागराः वृक्षाः सर्वे रजतमयाः इव भवन्ति।

इन्दुः जनानां हृदयम् आनन्दयति। सः ओषधिम् पुष्यति समुद्रं च समेधयति। यथा मन्दरपर्वतस्य गुहायां सिंहः शोभते, यथा मानसे हंसः विराजते तथा चन्द्रः आकाशे शोभते। हिमकरः कस्य हृदयं प्रफुल्लम् न करोति ?

## अभ्यास

१ जाड टंकांत छापलेलीं पदें उत्तर म्हणून होतील असे संस्कृतमध्यें प्रश्न तयार करा :–

१ **पौर्णिमायां** चन्द्रः पूर्णः भवति ।

२ चन्द्रः **ओषधीन्** पुष्यति

३ **चन्द्रस्य** किरणाः शीतलाः ।

४ **चन्द्रः** निशायाम् उदयति ।

५ **पर्वताः सागराः वृक्षाः सर्वे** रजतमयाः भवन्ति ।

प्रश्न तयार करतांना खालील पदांतून योग्य निवड करून घ्या :–

**कान् ; कः; के; कस्य; कस्मिन् दिने.**

२ या पाठांतील सर्व विशेषणें शोधून काढा व तीं कोणत्या विभक्तींत योजिलीं आहेत तें सांगा.

३ कोणती विभक्ति आहे तें ओळखा :—

**पक्षौ** ( पक्ष पु. ); **जनानाम्** ( जन पु. )

४ या पाठांत सन्धि मुळींच केले नाहींत. आतांपर्यंत शिकलेले सन्धि या पाठांत करून पुन्हां हा पाठ घरून लिहून आणा.

५ चन्द्रवाचक शब्द :—**चन्द्र; इन्दु; हिमकर; शीतांशु; ओषधिनाथ; नक्षत्रराज** ( सर्व पुंल्लिंगी )

# पञ्चदशः पाठः

एषा नदी। अस्या नाम गङ्गा। हिमालयोऽस्याः प्रभवः। एषाऽऽर्यावर्तस्योत्तरविभागे वहति। यत्र नद्युद्भवति तत्र तस्याः



प्रवाहोऽतीव अल्पो वर्तते। यथा यथा सा वहति तथा तथा तस्याः प्रवाहो वर्धते। अन्ते यत्र सा सागरे पतति तत्र तस्याः प्रवाहो विस्तीर्णो भवति।

निदाघे नद्याः तोयमल्पं भवति। किंतु तत् निर्मलमस्ति। वर्षाकाले जलदाः जलं यच्छन्ति। अतः तस्या जलं वर्धते। किंतु तत् कलुषितमस्ति। शरत्काले तत् एव स्वच्छं निर्मलं भवति।

गङ्गायाः तटे बहूनि विख्यातानि नगराणि सन्ति। तेषां काशी गया प्रयागः चैते धर्मक्षेत्राणि सन्ति।

एषा हिमालयस्य कन्या। शिवस्य जटासु निवासोऽस्याः। किंतु पतितपावनायैषा वहति।

सज्जनानां हृदयं गङ्गाजलमिव निर्मलमस्ति।

## अभ्यास

**प्रश्नाः—( १ ) कदा नद्याः तोयम् अल्पम् भवति ?**

**( २ ) कदा तत् कलुषितं भवति ?**

**( ३ ) गङ्गायाः तटे कानि नगराणि सन्ति ?**

**( ४ ) कुत्र गङ्गायाः यमुनायाः च सङ्गमः भवति ?**

**( ५ ) गङ्गाजलम् इव किमस्ति ?**

२ खालील सन्धि सोडवाः—

**हिमालयोऽस्याः । एषाऽऽर्यावर्तस्य । नद्युद्भवति । पतितपावनायैषा । चैते ।**

३ सर्व विशेषणें हुडकून काढा.

४ **प्रभव** ( पु. ), **जल** ( न. )—सर्व विभक्ति घरून लिहून आणा.

## टीपा

**प्रयोगविशेष :—**

**१ यथा यथा .... तथा तथा.**

(जसा जसा ) ... ( तसा तसा )

**यथा यथा धनं वर्धते। तथा तथा तृष्णा वर्धते।**

तुम्हीं वाचलेल्या पाठांतून असलीं उदाहरणें हुडकून काढा.

**२ यत्र ... तत्र— यत्र सूर्यः तत्र प्रकाशः**

( जेथें ) ( तेथें ) **यत्र भक्तिः तत्र ईश्वरः**

**३ यत्र यत्र ... तत्र तत्र; यत्र यत्र पापम् तत्र तत्र नाशः**

जेथें जेथें तेथें तेथें. **यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र वह्निः**

**सूचना**—अध्यापकानें वरील प्रकारचीं बरींच उदाहरणें देऊन हा विषय मुलांना नीट समजावून द्यावा.

## व्याकरण

आतां आपण आकारान्त व ईकारान्त स्त्रीलिंगी शब्द कसे चालतात तें पाहूं :—

| आकारान्त स्त्रीलिंगी शब्द – **शाला** | ए. व. | द्वि व. | ब. व. | ईकारान्त स्त्रीलिंगी शब्द – **नदी** ए. व. | द्वि व. | ब. व. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथमा– | **शाला** | **शाले** | **शालाः** | **नदी** | **नद्यौ** | **नद्यः** |
| द्वितीया– | **शालाम्** | ,, | ,, | **नदीम्** | ,, | **नदीः** |
| तृतीया– | **शालया** | **शालाभ्याम्** | **शालाभिः** | **नद्या** | **नदीभ्याम्** | **नदीभिः** |
| चतुर्थी– | **शालायै** | ,, | **शालाभ्यः** | **नद्यै** | ,, | **नदीभ्यः** |
| पञ्चमी– | **शालायाः** | ,, | ,, | **नद्याः** | ,, | ,, |
| षष्ठी– | ,, | **शालयोः** | **शालानाम्** | ,, | **नद्योः** | **नदीनाम्** |
| सप्तमी– | **शालायाम्** | ,, | **शालासु** | **नद्याम्** | ,, | **नदीषु** |
| सम्बोधनम्– | **शाले** | **शाले** | **शालाः** | **नदि** | **नद्यौ** | **नद्यः** |

**इन्दिरा, शान्ता, शाला, गङ्गा,** इत्यादि शब्द ( सर्व स्त्रीलिंगी ) असे चालतात.

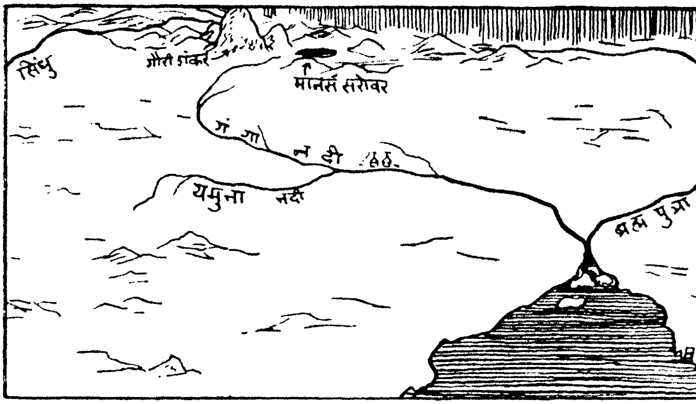
**टीपः**–संस्कृतांत आकारान्त पुंल्लिंगी शब्द नाहींत.

**मही, तापी, काशी, सरस्वती,** इत्यादि शब्द ( सर्व स्त्रीलिंगी ) असे चालतात.

**टीप** :—संस्कृतांत ईकारान्त पुंल्लिंगी शब्द नाहींत.

# षोडशः पाठः

एष पर्वतः। अस्य नाम हिमालयः। भरतवर्षस्योत्तरदिग्भागेऽयं प्रसरति। भुवने ये नगाः सन्ति तेषु सर्वेष्वयं महिष्ठः। अस्मात्




बहवः सरिताः प्रभवन्ति। तासु गङ्गा यमुना ब्रह्मपुत्रा सिन्धुरेताः प्रमुखाः। अस्य पर्वतस्योपरि बहवो वृक्षा लताः च प्ररोहन्ति। अस्योदरे नानाविधा धातवो वर्तन्ते।

अस्य गुहास्वसंख्याः सिंहा व्याघ्राः च वसन्ति। अस्यैव पर्वतस्य कन्या पार्वती। अत्र मुनयः ईश्वरस्याराधनां कुर्वन्ति। कवय एतं पर्वतं गिरिराज इति वर्णयन्ति। अस्य शिखराण्यतीवोच्छ्रितानि। तेषु गौरीशंकरं नाम शिखरमुच्चतमम्।

एष हिमस्यालयः। अस्य शिखराणि सदा हिमेनाच्छादितानि सन्ति।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः— १ पर्वतेषु कः महिष्ठः ?

२ काः प्रमुखाः सरिताः हिमालयात् प्रभवन्ति ?

३ के वसन्ति पर्वतानां गुहासु ?

४ किं कुर्वन्ति मुनयः पर्वतेषु ?

५ अस्य शिखरेषु किं वर्तते ?

२ कोणत्याही पर्वताचें संस्कृतभाषेंत थोडक्यांत वर्णन करा.

३ सन्धिविच्छेद करून पाठ घरांतून लिहून आणा.

## टीपा

**वाक्यरचनाः**— ये नगाः सन्ति तेषु अयं महिष्ठः ।

( मराठींतील रचनेशीं तुलना करा. )

**उच्चतम :**—हें कसलें रूप आहे सांगा. अशा रीतीचे कांहीं शब्द तुम्हांस सांगतां येतील का ?

## व्याकरण

**सन्धि :**—

### ( अ ) स्वरसन्धि

**सर्वेषु + अयम् = सर्वेष्वयम् ।**

**रचना :**—

| मागील स्वर | पुढील स्वर | परिणाम |
|---|---|---|
| सर्वेषु ( उ ) | ( अ ) अयम् | सर्वेष् + व् + अयम् = सर्वेष्वयम् । |
| गुरु ( उ ) | ( आ ) आज्ञा | गुर् + व् + आज्ञा = गुर्वाज्ञा |
| रघु ( उ ) | ( इ ) इतिहास | रघ् + व् + इतिहास = रघ्वितिहास |

**नियम १२.—उ ऊ च्या पुढें असवर्ण स्वर असल्यास त्या उ ऊ चा व् होतो व तो पुढील स्वरांत मिळून जातो.**

**नियम १३.—उ ऊ च्या पुढें सवर्ण स्वर आल्यास दोन्ही स्वरांबद्दल ऊ येतो. जसें :–भानु + उदय = भानूदय; सु + उक्ति = सूक्ति.**

## ( आ ) विसर्गसन्धि

**कवयः एतम् = कवय एतम् ।**

**रचना :—**

| मागील वर्ण | विसर्ग | पुढील वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|---|
| कवय ( अ ) | : | ( ए ) एतम् | कवय ( विसर्गलोप ) एतम् |
| राम ( अ ) | : | ( आ ) आगच्छति | राम ( वि. लोप ) आगच्छति |

**नियम १४.**—विसर्गाच्या पूर्वी अ व पुढें अ खेरीज कोणताही स्वर आल्यास विसर्गाचा लोप होतो. ( पुढें अ असल्यास नियम ११ वा पहा. )

**सिन्धुः एताः = सिन्धुरेताः**

**रचना :—**

| मागील वर्ण | विसर्ग | पुढील वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|---|
| सिन्धु ( उ ) | : | ( ए ) एताः | सिन्धु ( विसर्गाचा र् ) रेताः |
| धेनु ( उ ) | : | ( आ ) आयाति | धेनुरायाति |
| धेनू ( ऊ ) | : | ( अ ) अवलोकयति | धेनूरवलोकयति |
| सिन्धु ( उ ) | : | ( व् ) वहति | सिन्धुर्वहति |

**नियम १५ :**—विसर्गाच्या पूर्वी अ, आ खेरीज कोणताही स्वर व पुढें कोणताही स्वर अथवा मृदुव्यञ्जन आल्यास विसर्गाचा र् होतो.

**कांहीं उदाहरणें :—**

| मा. वर्ण | विसर्ग | पु. वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|---|
| कवि ( इ ) | : | व् ( वदति ) | कविर्वदति |
| नदी ( ई ) | : | ( अ ) अवतरति | नदीरवतरति |
| नौ ( औ ) | : | व् ( वहति ) | नौर्वहति |
| गो ( ओ ) | : | ( न् ) नेत्रम् | गोर्नेत्रम् |

# सप्तदशः पाठः

## कोऽहम् ?

मम शरीरं द्रवरूपम् । रजन्यां सुधांशुः तारकाः च दिवा च चण्डांशुर्मयि दृश्यन्ते । तरव आत्मनः स्वरूपं मयि पश्यन्ति । ये जीवा मयि निवसन्ति ते मां विना क्षणमपि न जीवन्ति ।

उपर्युपर्यहं सदा चञ्चलः । अन्तर्भागे तु सदा स्थिरो गहनः च ।

मां दग्धुमग्निर्न समर्थः । दिने दिने बहवो जीवा मम शरीरस्याल्पमल्पं भागं हरन्ति । तथाप्यहं क्षीणो न भवामि । जनाः सन्ध्याकाले मम समीपमागम्य कंचित् कालं विनोदवार्ताभिः नयन्ति ।

मम सर्वत्र समाना बुद्धिर्वर्तते । धनिकानामधनिकानां बालानां तरुणानां वृद्धानां सर्वेषां स्वागताय सदा सिद्धोऽहम् ।

एकैव मे भीतिः । सूर्यात् । भानुः प्रचण्डैरंशुभिर्मां तापयति क्षीणं च करोति । वर्षाकालेऽहं पुष्टो भवामि । शरत्कालो मह्यं रोचते । तदाऽहमतीव निर्मलो दर्शनीयः च भवामि । कोऽहम् । कथयत बालाः ।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—

१ 'ये जीवाः मयि निवसन्ति ते......' के ते ?

२ 'मम शरीरस्य अल्पम् अल्पम् भागं हरन्ति' किं तत् शरीरम् ?

३ किं करोति सूर्यः ?

४ 'शरत्कालः मह्यं रोचते' कस्मात् ?

२ विशेषणें शोधून काढा. त्यांच्या विभक्तीहि सांगा.

३ या पाठाच्या धर्तीवर एकाद्या झाडाचें वर्णन संस्कृतभाषेंत लिहा.

४ सन्धिविच्छेद करा.

५ पदें ओळखा:—रजन्याम्; वार्ताभिः.

## टीपा.

१ मुलांनो, खालील शब्द नीट पाहा :—**दिवा, उपरि उपरि, सदा, किन्तु, च, तथापि, सदा, न, वा,** इत्यादि. यांना **अव्ययें** असें म्हणतात. यांना लिङ्ग, वचन, व विभक्तिप्रत्यय लागत नाहींत. हे शब्द चालत नाहींत. मराठींतील कांहीं अव्ययें सांगा पाहूं.

दिवा, उपरि उपरि, तथापि, या अव्ययांचा वाक्यांत उपयोग करा.

२ **विना** हेंही अव्ययच आहे. याचा ज्या नामाशीं संबंध येतो तें नाम द्वितीया, तृतीया किंवा पंचमी विभक्तींत येतें. विना म्हणजे शिवाय. **मां विना** ( माम्–द्वितीया ), **मया विना** ( मया–तृतीया ), **मत् विना** ( मत्-पञ्चमी ).

३ **प्रयोगविशेष :—शरत्कालः मह्यं रोचते.** ही रचना लक्षांत ठेवा. मराठींत याचें भाषान्तर करा. आवडणारी गोष्ट व ज्याला आवडावयाचें आहे तो प्राणि-वाचक शब्द हे कोणत्या विभक्तींत येतात? असलीं दोन वाक्यें तयार करा.

४ **ये जीवाः मयि निवसन्ति ते मां विना न जीवन्ति ।** अशीं वाक्यें झालेल्या पाठांतून हुडकून काढा. खालील शब्द वापरून वाक्यें करा:—

**१ यः यः नामस्मरणं करोति — — मुक्तः भवति ।**

**२ यस्मिन् वृक्षे सः खगः अस्ति — — — —**

५ **आत्मनः** याचा अर्थ 'आपला–लीं–लें' या अर्थी तीनही लिंगांत व वचनांत हें पद असेंच रहातें.

**१ रामः आत्मनः हस्तं प्रदर्शयति ।**

**२ जनाः आत्मनः हस्तान् प्रदर्शयन्ति ।**

**३ शान्ता आत्मनः हस्तं प्रदर्शयति ।**

**४ बालाः आत्मनः हस्तान् प्रदर्शयन्ति ।**

**५ कमलम् आत्मनः लतायाः पतति ।**

**६ कमलानि आत्मनः लताभ्यः पतन्ति ।**

( शिक्षकांनीं **आत्मनः** चा उपयोग आणखी उदाहरणें देऊन दाखवावा. )

६ **आगम्य** – येऊन ( आ + गम् + य ).

७ दग्धुम् – ( दह् + तुम् ) जाळण्यास.

८ एका एव मे भीतिः । सूर्यात् ।

ज्याच्यापासून भीति उत्पन्न होते तो शब्द पञ्चमी विभक्तीत ठेवावा. दोन उदाहरणें द्या.

## व्याकरण

उकारान्त पुंल्लिंगी शब्द. नमुना–भानु ( पु. ) सूर्य.

| | एक व. | द्वि.व. | बहु व. |
|---|---|---|---|
| प्र. | भानुः | भानू | भानवः |
| द्वि. | भानुम् | ,, | भानून् |
| तृ. | भानुना | भानुभ्याम् | भानुभिः |
| च. | भानवे | ,, | भानुभ्यः |
| पं. | भानोः | ,, | ,, |
| ष. | भानोः | भान्वोः | भानूनाम् |
| स. | भानौ | ,, | भानुषु |
| सं. | भानो | भानू | भानवः |

सुधांशु ( पु. चन्द्र ), चण्डांशु ( पु. सूर्य ), तरु ( पु. झाड ), इत्यादि शब्द भानु प्रमाणें चालतात.

---

# अष्टादशः पाठः

( अ ) अहं वृक्षस्य अग्रे वसामि । किंतु न अहं विहगः । मम त्रीणि नेत्राणि सन्ति । किंतु अहं न शंकरः । अहं वल्कलं धारयामि किन्तु न साधुः । मयि प्रभूतं वारि वर्तते । किंतु अहं न घटः न वा मेघः । कः अहम् ?

( आ ) अहं सदा मुखे वसामि । अहं कदापि शुष्का न भवामि । मया विना नरस्य शब्दाः न उद्भवन्ति । मुखे सदा धवलानां हंसानां सहवासम् अनुभवामि । मत् विना मुखे स्वादः न प्रवर्तते । का अहम् ?

( इ ) मम सर्वत्र संचारः । मम सर्वत्र वासः । किंतु न केऽपि मां द्रष्टु समर्थाः । मया विना क्षणमपि प्राणिमात्रस्य जीवनम् अश-

**क्यम् । मम सामर्थ्यम् अमर्यादम् वर्तते । यदि अहम् इच्छामि तर्हि गृहाणां महावृक्षाणां विनाशं क्षणार्धे एव करोमि । निदाघे ताप-पीडिताः जनाः व्यजनेन मां चालयन्ति । शीतः अहम् सुखदायकः भवामि ।**

**अग्नेः मम च सख्यं वर्तते । किंतु क्रुद्धः अहम् यदा महावेगेन वहामि तदा प्रक्षुब्धम् अग्निम् अपि निर्वापयामि । कः अहम् ?**

## अभ्यास

१ अ व आ चीं उत्तरें जीं यात तीं कर्ता समजून पुन्हां हेच उतारे जरूर ते फेरफार करून लिहा.

२ खालील श्लोकांचा अर्थ सांगा व ते पाठ कराः—

### श्लोक

**वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः । त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः ॥**
**त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी । जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः ॥ १ ॥**
**मुखे वसाम्यहं नित्यं शुष्का नैव भवाम्यहम् ।**
**संगतिः शुभ्रहंसानां स्फुटाः शब्दा न मद्विना ॥ २ ॥**

३ हा पाठ योग्य ते सन्धि करून घरांतून लिहून आणा.

## व्याकरण

मुलांनो ! आज संस्कृतांतील क्रियापदांचा थोडासा विचार आपण करूं या. मराठींतील कांहीं उदाहरणें घेऊं.

| वाक्य | क्रियापद | धातु | |
|---|---|---|---|
| १ तो जातो | जातो | जाणें | आणखी ५ उदाहरणें द्या. |
| २ राम जातो | जातो | जाणें | |
| ३ मी नमतों | नमतों | नमणें | |
| ४ तूं पाहातोस | पाहातोस | पाहणें | |

वरील उदाहरणांत 'जाणें', 'नमणें', 'पाहणें' वगैरे धातु आहेत. तसेंच संस्कृतमध्येंसुद्धां मूळ धातु कसे असतात तें पाहूं. वरील वाक्यांचें संस्कृतमध्यें भाषांतर करूं.

| | | |
|---|---|---|
| १ सः गच्छति | गच्छति | गम् ( गच्छ् ) |
| २ रामः गच्छति | ,, | ,, ,, |
| ३ अहं नमामि | नमामि | नम् |
| ४ त्वम् पश्यसि | पश्यसि | दृश् ( पश्य् ) |

मराठींत बहुतेक धातु 'णें' कारान्त असतात. उदाः—खाणें, पिणें, हसणें, बोलणें, उठणें इत्यादि.

संस्कृतांत धातु व्यञ्जनान्त असतात व स्वरान्तही असतात. उदाः—

( १ ) **व्यञ्जनान्त धातुः—गम्** ( गच्छ् ), **नम्**, **पठ्**, इत्यादि.

( २ ) **स्वरान्त धातुः—स्था** ( तिष्ठ् ), **नी** ( नय् ), **पा** ( पिब् ) इत्यादि.

**टीपः—गम्** जरी मूळ धातु असला तरी त्याबद्दल साक्षात् काळाचे प्रत्यय लावतांना '**गम्**' न घेतां त्याचें '**गच्छ्**' असें स्वरूप घ्यावें लागतें. तसेंच '**दृश्**' बद्दल '**पश्य्**', '**स्था**' बद्दल '**तिष्ठ्**', '**नी**' बद्दल 'नय्' इत्यादि. असा फेरबदल प्रत्येक धातूंत होतोच असें नाहीं. उदा० '**नम्**', '**वद्**', '**स्पृश्**' इत्यादि धातु तसेच राहतात.

मुलांनो नमुन्यासाठीं आतां कांहीं धातु व क्रियापदें आपण लिहूं:—

| क्रियापद | धातु | |
|---|---|---|
| **आगच्छति** | आ+गम् ( गच्छ् ) | |
| **नमसि** | नम् | |
| **तिष्ठति** | स्था ( तिष्ठ् ) | |
| **धावति** | सृ ( धाव् ) | कोणते धातु स्वरान्त आणि कोणते व्यञ्जनान्त तें सांगा. |
| **उपविशति** | उप+विश् | |
| **पठामः** | पठ् | |
| **कर्षति** | कृष् ( कर्ष् ) | |
| **स्पृशति** | स्पृश् | |
| **करोति** | कृ | |
| **भवति** | भू ( भव् ) | |

**उपसर्ग** :– मराठींतील उदाहरणें पाहाः—

| | |
|---|---|
| गमन | **आगमन** ( आ + गमन ) |
| कार | **प्रतिकार** ( प्रति + कार ) |
| ,, | **उपकार** ( उप + कार ) |
| ,, | **विकार** ( वि + कार ) |
| भव | **अनुभव** ( अनु + भव ) |

यांतील **आ, प्रति, उप, वि, अनु** वगैरे शब्दांना उपसर्ग असें म्हणतात. हे उपसर्ग शब्दांना प्रारंभीं जोडतात. कित्येक वेळां यांतील कांहीं उपसर्ग शब्दाच्या मूळ अर्थांत फरकही करतात. **कार** या शब्दाला खालील उपसर्ग जोडा म्हणजे पहा कसा फरक पडतो तें. **उपकार, तिरस्कार** ( तिरस् ), **प्रकार, विकार, आकार, प्रतिकार** वगैरे.

तसेंच, **जय–पराजय; योग–वियोग, प्रयोग**; भव–**अनुभव, पराभव, सम्भव** इत्यादि.

हे सर्व उपसर्ग **संस्कृतमधूनच** मराठींत आलेले आहेत. आणि हे सर्व शब्दही **संस्कृतच** आहेत. खालील संस्कृत शब्द पहाः—

**गच्छति** ( जातो ), **आगच्छति** ( येतो ), **अनुगच्छति** ( पाठीमागून येतो ), **उपगच्छति** ( जवळ जातो ), **अधिगच्छति** ( जाणतो ) इत्यादि.

**टीपः**—सर्वच उपसर्ग शब्दांच्या मूळ अर्थांत फेर **करतातच असें नाहीं** हें **लक्षांत** ठेवावें.

# एकोनविंशः पाठः

## संवादः

आचार्यः—बालाः पश्यतोद्यानम्। अत्र वृक्षाः कति सन्ति ?

रामः—सप्त वृक्षाः।

गोविंदः—किं नामास्य तरोः ?

कृष्णः—एष आम्रवृक्षः।

आचार्यः—साधु रे कृष्ण। एष वसन्तागमे प्रफुल्लो भवति। आम्रफलानि पश्यत। के तेषां वर्णाः ?।

रामः—कानिचित् फलानि हरितानि सन्ति।

गोविंदः—अन्यानि पीतानि।

कृष्णः—अपराणि चारक्तानि।

आचार्यः—पक्वस्याम्रफलस्य कीदृशी रुचिर्वर्तते ?

गोविंदः—अतीव मधुरा। आम्रं मह्यं रोचते।

कृष्णः—अहमप्याम्राय स्पृहयामि।

आचार्यः—अत्र सप्त वृक्षाः। तेषां त्रिषु फलानि न विद्यन्ते। चतुर्षु फलानि सन्ति। अधः पश्यत। एषा तरोः छाया। अत्र पान्था विश्रामं लभन्ते। बालाः, किं तरुः स्वयमेव फलानि भक्षयति ?

रामः—आचार्य नहि नहि। परेभ्य एव तेषामुपयोगः।

आचार्यः—पश्यत। तरवोऽन्यस्य छायां कुर्वन्ति स्वयमातपे तिष्ठन्ति। एष परोपकारः। मानवेष्वेतादृशाः के सन्ति।

गोविन्दः—न केऽपि।

रामः—सन्ति सत्पुरुषाः। साधवः।

आचार्यः—साधु रे राम। कथं तत् कथय।

रामः—साधवः परोपकारायात्मनः सर्वस्वमर्पयन्ति।

**आचार्यः—सत्यमेव तत्। शृणुत सर्वे। यथैत आम्रा तथा यूयमपि भवत। अधुना सन्ध्यासमयो जातः। साधयामो वयम् (गच्छन्ति)**

## अभ्यास

१ प्रश्न:—१ **आम्राणां वर्णान् कथयत।**

२ **केभ्यः तरूणाम् उपयोगः?**

३ **यथा वृक्षाः तथा के सन्ति?**

४ **साधवः किं कुर्वन्ति?**

२ वाक्यें पूर्ण करा:—

१ —**बीजः तथा अङ्कुरः।**

२ **पक्वस्य आम्रस्य रुचिः— वर्तते।**

३ खालील शब्दांचा उपयोग करून चन्दनवृक्षासंबंधीं संस्कृत भाषेंत आठ ओळी लिहा:—

**मलय पर्वते** ——— **उत्पन्नाः भवन्ति। शीतल** (वि.), **परिमल** (पु.), **छाया** (स्त्री.), **शरीरदाहे** (पु. सप्तमी एकव.), **उपयोग** (पु.), **सर्प** (पु.), **आश्रयेण वसन्ति।**

४ सन्धि सोडवा:—

**पश्यतोद्यानम्; अहमप्याम्राय; मानवेष्वेतादृशाः; यथैत आम्राः।**

५ **छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।**
**फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषा इव॥ १॥**

वरील श्लोक अर्थ जाणून पाठ करा.

## टीपा

**प्रयोग विशेष:—१ आम्रं मह्यं रोचते. २ अहम् आम्राय स्पृहयामि.** या दोन्ही वाक्यांचा अर्थ सारखाच आहे. मग फेर कोठें आहे? सांगा पाहूं.

**साधु:**—(अव्यय) ठीक!

**कानिचित्**—कांहीं तुम्हीं वाचलेलें **चित्** अव्यय ज्यांना जोडलें आहे असे कांहीं शब्द शोधून काढा पाहूं. प्रश्नार्थक सर्वनामांच्या रूपांना **चित्** हें अव्यय जोडलें असतां अर्थांत फेर पडतो. तो कसा पहा:—

| | |
|---|---|
| १ कः बालः आगच्छति ? ( कः = कोण ? ) | कश्चित् ( कः चित् ) बालः आगच्छति ( कश्चित् = कोणीएक ) |
| २ सः कम् ताडयति ? ( कम् = कोणाला ? ) | सः कंचित् ( कम् + चित् ) ताडयति. ( कंचित् = कोणालातरी ) |
| ३ रामः केन सह गच्छति ? ( केन सह = कोणाबरोबर ? ) | रामः केनचित् सह गच्छति. ( केनचित् सह = कुणाबरोबर तरी ) |
| ४ भूपतिः कस्मै धनं यच्छति ? ( कस्मै = कोणाला ? ) | भूपः कस्मैचित् धनं यच्छति. ( कस्मैचित् = कोणालातरी ) |
| ५ कस्य इदम् पुस्तकम् ? ( कस्य = कोणाचें ? ) | कस्यचित् इदम् पुस्तकम् ( कस्यचित् = कोणाचेंतरी ) |

**टीप** :–चित् प्रमाणें **किम्** ( कोण ) या सर्वनामाच्या रूपांना कधीं कधीं **अपि** अथवा **चन** हे देखील प्रत्यय याच अर्थी जोडतात.

## व्याकरण

इकारान्त पुंल्लिंगी व नपुंसकलिंगी शब्द.

इकारान्त पुंल्लिंगी शब्द

### कवि

| | एक. व. | द्वि. व. | ब. व. |
|---|---|---|---|
| प्र. | कविः | कवी | कवयः |
| द्वि. | कविम् | ,, | कवीन् |
| तृ. | कविना | कविभ्याम् | कविभिः |
| च. | कवये | ,, | कविभ्यः |
| पं. | कवेः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | कव्योः | कवीनाम् |
| स. | कवौ | ,, | कविषु |
| सं. | कवे | कवी | कवयः |

कलि, हरि, रवि, मरीचि, इत्यादि शब्द कवि प्रमाणें चालतात.

इकारान्त नपुंसकलिंगी शब्द.

### वारि

| एक व. | द्वि. व. | ब. व. |
|---|---|---|
| वारि | वारिणी | वारीणि |
| ,, | ,, | ,, |
| वारिणा | वारिभ्याम् | वारिभिः |
| वारिणे | ,, | वारिभ्यः |
| वारिणः | ,, | ,, |
| ,, | वारिणोः | वारीणाम् |
| वारिणि | ,, | वारिषु |
| वारे / वारि | वारिणी | वारीणि |

# विंशतितमः पाठः

## मधुमक्षिका

केशवः—कः एषः प्राणी ?

गुरुः—एषा मधुमक्षिका। सा पुष्पात् पुष्पं गच्छति। किमर्थम् ?

रमणः—विश्रामहेतोः।

माधवः—नहि नहि। अस्मिन् कुसमे मधु अस्ति। सा तत् अपहरति। अनंतरं तत् कुसुमं त्यक्त्वा अन्यत् पुष्पं गच्छति।

केशवः—कुत्र सा मधु नयति ?

गुरुः—कः कथयति ? कथय माधव।

माधवः—गुरो अहं न जानामि।

वामनः—अहं कथयामि। पश्यत अस्य तरोः उपरि मधुमक्षिकाणां गृहम्। तत्र सा मधु नयति निदधाति च।

गुरुः—कीदृशः स्वादः मधुनः।

रमणः—गुरो! अद्य एव गृहे अहं मधु अलेहम्। मधु मधुरं वर्तते।

गुरुः—रमणस्य गृहे न मधुमक्षिका अतः कथं तस्य गृहे मधु भवेत् ?

गोविन्दः—मूर्खः अयम्।

गुरुः—नहि बालकाः। एषा मधुमक्षिका आत्मनः गृहे मधु नयति। दिवसेषु गतेषु तत्र मधु प्रभूतं भवति। अनंतरं मनुष्यः तत्र गच्छति मधु गृहीत्वा व्रजति। मधु अतीव पौष्टिकम्। तस्मात् वैद्याः रुग्णेभ्यः तत् औषधम् प्रयच्छन्ति।

केशवः—मधुमक्षिका कष्टं करोति। मानवः तस्य फलं लभते इति आश्चर्यं खलु !

गुरुः—न एतत् आश्चर्यम्। एषः प्रबलस्य धर्मः। देवः दुर्बलघातकः।

## व्याकरण

१ प्रश्नाः—१ मधुमक्षिका पुष्पात् किम् अपहरति ?

२ वैद्याः केभ्यः मधु यच्छन्ति ?

३ कः प्रबलानां धर्मः ?

२ खालीं दिलेल्या शब्दांतून योग्य निवड करून वाक्यपूर्ति करा :—

१ इन्दुः ........ आकाशे न शोभते ।

२ ये नराः शूराः सन्ति ........ रणात् न पलायन्ते ।

३ सूर्यः ........ तपति, चन्द्रः ........ प्रकाशते ।

शब्द—प्रखरम् ; ते; शीतलम् ; दिवा ?

३ खालील शब्दांचा उपयोग करून वाक्यें तयार करा :—

१ प्रवास ( पु. ) राम ( पु. ) रोचते.

२ आम्ररस ( पु. ) केशव ( पु. ) स्पृहयति.

४ सन्धि करून पाठ ( घरांतून ) लिहून आणा.

५ फूल या अर्थाचे सर्व शब्द गोळा करा. आणखी त्यांत तीन शब्दांची भर घाला.

## टीपा

**पुष्पात् पुष्पम्**—एका फुलावरून दुसऱ्या फुलावर; तसेंच **ग्रामात् ग्रामम्; वनात् वनम्; वृक्षात् वृक्षम्**; यांचा वाक्यांत उपयोग करा.

**विश्रामहेतोः**—विश्रांति घेण्यासाठीं.

**निदधाति**—ठेवते.

**आत्मनः**—आपल्या. तीन उदाहरणें द्या.

**दिवसेषु गतेषु**—कांहीं दिवसांनंतर. **मासेषु गतेषु, वर्षेषु गतेषु** इत्यादि.

## व्याकरण

उकारान्त नपुंसकलिंगी शब्द

**मधु** ( न. ) मध.

| | ए. व. | द्वि व. | ब. व. |
|---|---|---|---|
| प्र. | मधु | मधुनी | मधूनि |
| द्वि. | ,, | ,, | ,, |
| तृ. | मधुना | मधुभ्याम् | मधुभिः |
| च. | मधुने | ,, | मधुभ्यः |
| पं. | मधुनः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | मधुनोः | मधूनाम् |
| स. | मधुनि | ,, | मधुषु |
| सं. | मधो / मधु | मधुनी | मधूनि |

नपुंसकलिंगी उकारान्त शब्द ' मधु 'प्रमाणें चालतात.

उकारान्त स्त्रीलिंगी शब्द.

**धेनु** ( स्त्री ) गाय

| | ए. व. | द्वि व. | ब. व. |
|---|---|---|---|
| प्र. | धेनुः | धेनू | धेनवः |
| द्वि. | धेनुम् | धेनू | धेनूः |
| तृ. | धेन्वा | धेनुभ्याम् | धेनुभिः |
| च. | धेनवे-वै | ,, | धेनुभ्यः |
| पं. | धेनोः-धेन्वाः | ,, | ,, |
| ष. | ,, ,, | धेन्वोः | धेनूनाम् |
| स. | धेनौ-धेन्वाम् | ,, | धेनुषु |
| सं. | धेनो | धेनू | धेनवः |

उकारान्त स्त्रीलिंगी शब्द ' धेनु 'प्रमाणें चालतात.

# एकविंशतितमः पाठः

## ( प्रश्न–पाठ )

१. गीर्वाणभाषायाम् उत्तरत :—

१ आम्रफलानां के के वर्णाः ?

२ मधुमक्षिकायाः जीवनं संक्षेपेण लिखत.

३ अश्वस्य शरीरवर्णनं कुरुत । तस्य जीवनं च लिखत.

४ मेघोदरे का उद्भवति ! कः तस्याः वर्णः ? तस्याः जन्मसमये कीदृशः निनादः भवति? कतिकालपर्यन्तं सा जीवति? तस्याः जीवनम् किं युष्मभ्यं रोचते वा न वा। कारणानि लिखत। यथा 'कोऽहम्' इति सप्तदशपाठः लिखितः तथा 'काऽहम्' इति कूटरूपेण एतद्वस्तुवर्णनं कुरुत.

५ सह्यपर्वतं वर्णयत.

२. खालील शब्द ओळखा :—

उच्छ्रितानि; शरत्काले; रजतमयाः; उष्णतम; बाष्पस्य; महिष्ठः; त्रीणि; हरितानि.

३. पार्वती शब्द सर्व विभक्तींतून चालवा.

४. संस्कृतांत भाषांतर करा :—

हें आकाश ( आकाश पु. ) आहे. आकाशांत दिवसा सूर्य व रात्रीं चन्द्र आणि तारका उगवतात. वर्षाकालीं आकाशांत ढग येतात. नंतर पाऊस पडतो. शरत्कालीं आकाश निळें असतें. त्यावेळीं झाडें आणि लता फुलांनीं व पानांनीं शोभित असतात. पक्षी ( खग पु. ) एका झाडावरून दुसऱ्या झाडावर उडतात. मधमाशा एका फुलावरून दुसऱ्या फुलावर बसतात; आणि प्रवासी ( पान्थ पु. ) एका गांवाहून दुसऱ्या गांवाकडे जातात. उन्हाळ्यांत सूर्याचे किरण फार कडक होतात. ते नद्यांचें पाणी तापवितात आणि वर खेचून नेतात.

५. खालील उताऱ्याचें भाषांतर करा :—

अर्जुनो वदति । हे कृष्ण ! हे मुरारे ! अहं विजयं न कांक्षे । राज्यं सुखान्यपि न कांक्षे । येषामर्थे राज्यस्य आकांक्षा त एते पुत्राः पौत्राः श्यालाः श्वशुराः

पितामहा मातुला आचार्या प्राणान् धनानि च त्यक्त्वा मरणाय सिद्धाः । वरं मरणं नैषां वधः कार्यः । घोरकुलविनाशो मम शरीरं कम्पितं करोति । मम गात्राणि सीदन्ति । मम मुखं परिशुष्यति । मे शरीरे रोमहर्षो जायते । हस्तात् गाण्डीवं स्रंसते । अहम् अवस्थातुं न शक्नोमि । स्वजनम् आहवे हत्वा श्रेयः ( हितम् ) न पश्यामि । वरं भिक्षाटणम् । वरं वनवासः । वरं जीवितत्यागः ।

---

# द्वाविंशतितमः पाठः

## ( क्रियापदविचार )

संस्कृत भाषेंत महत्त्वाचे असें सुमारें २२०० धातु आहेत. त्या सर्व धातूंचे दहा विभाग केले आहेत. प्रत्येक विभागास **गण** असें म्हणतात. प्रत्येक गणांत सुद्धां स्थूल मानानें प्रत्ययांच्या दोन दोन जोड्या आहेत. एकाला **परस्मैपद** करणारे प्रत्यय व दुसऱ्याला **आत्मनेपद** करणारे प्रत्यय असें म्हणतात. कित्येक धातु फक्त परस्मैपदी आहेत. कित्येक केवळ आत्मनेपदी आहेत. तर कित्येक **उभयपदी** म्हणजे परस्मैपदी व आत्मनेपदी आहेत. अमुक एक धातु परस्मैपदाचा वा आत्मनेपदाचा वा उभयपदाचा हें ओळखणें कठिण आहे. पण भाषेशीं जसजसा परिचय अधिकाधिक होत जाईल तसतसा हा कठिण भागही सोपा होत जाईल.

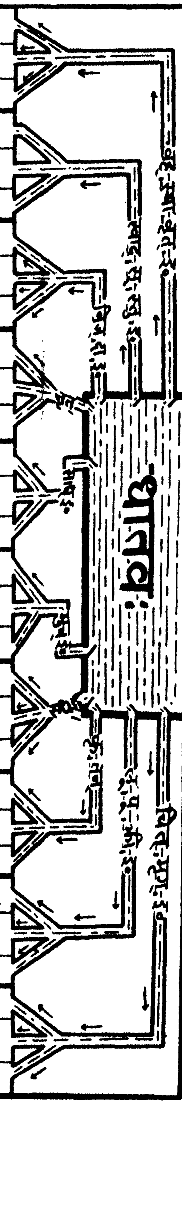
प्रत्येक गणाला एक खूण असते. त्याला **विकरण** असें म्हणतात. जसें:—पहिल्या गणाची खूण **अ** आहे. दुसऱ्या गणाला विकरण ( खूण ) प्रत्यय नाहीं. चौथ्याची **य,** पांचव्याची **नु,** सहाव्याची **अ,** दहाव्याची **अय,** इत्यादि.

या दहा गणांपैकीं आपणास सध्यां पहिला, चौथा, सहावा व दहावा असे चारच गण उभयपदांतून शिकविण्याचे आहेत.

सोबतचा चित्रपट पाहा; त्यावरून तुम्हांस धातूंच्या विभागाची कल्पना येईल.

आतां आपण प्रथम गण व चतुर्थ गण शिकूं या. त्यापूर्वीं वर्तमान काळाचे परस्मैपदाचे व आत्मनेपदाचे प्रत्यय काय आहेत ते पाहूं.

| गण | पद | धातु |
|---|---|---|
| प्रथम गण विकरण अ | परस्मैपद | धृ (धर्), वह्, वद्, स्था (तिष्ठ) इ० |
| | आत्मनेपद | लभ्, वृत (वर्त्), शुभ् (शोभ्) इ० |
| | उभय पद | संगच्छ् इ० |
| द्वितीय गण वि. प्रत्यय नाहीं | परस्मै पद | अस्, स्वाद् इ० |
| | आत्मनेपद | सू, ईश् इ० |
| | उभय पद | द्विष्, स्तु इ० |
| तृतीय गण अभ्यास वि. प्रत्यय नाहीं | परस्मैपद | ह्री, हु, भी. |
| | आत्मनेपद | क्वचित् हा (जाणे) वगैरे असतात |
| | उभय पद | दा, धा, निज्, विज् |
| चतुर्थ गण विकरण य | परस्मै पद | पुष्, नृत् |
| | आत्मनेपद | युध्, विद् |
| | उभय पद | क्वचित् धातू असतात |
| पञ्चम गण विकरण नु | परस्मै पद | साध्, धृष्, आप् |
| | आत्मनेपद | अश् |
| | उभय पद | चि, सु, वृ |
| षष्ठ गण विकरण अ | परस्मैपद | विद्, विश्, |
| | आत्मनेपद | क्वचित् धातू असतात |
| | उभय पद | क्षिप्, स्पृष्, मुच् |
| सप्तम गण विकरण न, न् | परस्मैपद | भुज्, पिष्, हिंस् |
| | आत्मनेपद | भुज् |
| | उभय पद | रुध्, क्षुद्, छिद् |
| अष्टम गण विकरण उ | परस्मैपद | क्वचित् धातू असतात |
| | आत्मनेपद | क्वचित् वन् वगैरे असतात |
| | उभय पद | कृ, तन् |
| नवम गण विकरण ना | परस्मैपद | लू, पू, जॄ, मुष् |
| | आत्मनेपद | |
| | उभय पद | क्री, ग्रह् (गृह्), प्री. |
| दशम गण विकरण अय | परस्मै पद | |
| | आत्मनेपद | तन्त्र्, चित्, विद्, अर्थ्, मृग् |
| | उभय पद | बहुतेक सर्व उभयपदी |



# वर्तमानकाल

## प्रत्यय

| | परस्मैपद | | | आत्मनेपद | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक व. | द्वि व. | ब. व. | एक व. | द्वि व. | ब. व. |
| प्र. पु. | मि | वस् (वः) | मस् (मः) | इ | वहे | महे |
| द्वि. पु. | सि | थस् (थः) | थ | से | इथे | ध्वे |
| तृ. पु. | ति | तस् (तः) | अन्ति | ते | इते | अन्ते |

**प्रथमगण** ( विकरण **अ** )

| | परस्मैपद धातु **नम्** | | | आत्मनेपद धातु **लभ्** | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक व. | द्वि व. | ब. व. | एक व. | द्वि व. | बहु व. |
| प्र. पु. | **नमामि** | **नमावः** | **नमामः** | **लभे** | **लभावहे** | **लभामहे** |
| द्वि. पु. | **नमसि** | **नमथः** | **नमथ** | **लभसे** | **लभेथे** | **लभध्वे** |
| तृ. पु. | **नमति** | **नमतः** | **नमन्ति** | **लभते** | **लभेते** | **लभन्ते** |

**चतुर्थगण** ( विकरण **य** )

| | परस्मैपद धातु **पुष्** ( पोसणें ) | | | आत्मनेपद धातु **विद्** जाणणें | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | **पुष्यामि** | **पुष्यावः** | **पुष्यामः** | **विद्ये** | **विद्यावहे** | **विद्यामहे** |
| द्वि. पु. | **पुष्यसि** | **पुष्यथः** | **पुष्यथ** | **विद्यसे** | **विद्येथे** | **विद्यध्वे** |
| तृ. पु. | **पुष्यति** | **पुष्यतः** | **पुष्यन्ति** | **विद्यते** | **विद्येते** | **विद्यन्ते** |

रूपें कशीं होतात तें स्थूलमानानें पाहूं :—

**परस्मैपद :—**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धातु | + | विकरण | + | प्रत्यय | = | रूप | |
| **नम्** | + | अ | + | ति | = | **नमति** | ( प्रथम गण ) |
| **वद्** | + | अ | + | ति | = | **वदति** | ( प्रथम गण ) |
| **चर्** | + | अ | + | ति | = | **चरति** | ( प्रथम गण ) |
| **पुष्** | + | य | + | ति | = | **पुष्यति** | ( चतुर्थ गण ) |
| **नृत्** | + | य | + | ति | = | **नृत्यति** | ( चतुर्थ गण। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विश् + | अ | + ति | = विशति | ( षष्ठ गण ) |
| कथ् + | अय | + ति | = कथयति | ( दशम गण ) |
| दर्श् + | अय | + ति | = दर्शयति | ( दशम गण ) |

**आत्मनेपद :—**

| | धातु | + विकरण | + प्रत्यय | = रूप |
|---|---|---|---|---|
| प्र. गण ( वृत् ) | वर्त् | + अ | + ते | = वर्तते. |
| प्र. गण ( रुच् ) | रोच् | + अ | + ते | = रोचते. |
| च. गण | विद् | + य | + ते | = विद्यते |
| च. गण | युध् | + य | + ते | = युध्यते |
| दशम गण | कथ् | + अय | + ते | = कथयते |
| ष. गण | क्षिप् | + अ | + ते | = क्षिपते |

तसेंच—वर्तसे, विद्यसे, युध्येते, इत्यादि.

**टीप**—खालील रूपें पाहा :—

गच्छ् + अ + ति = गच्छति ( गच्छाति नाहीं )

पण गच्छ् + अ + मि = गच्छामि ( गच्छमि नाहीं )

गच्छ् + अ + वः = गच्छावः ( गच्छवः नाहीं )

गच्छ् + अ + मः = गच्छामः ( गच्छमः नाहीं )

**नियम १—व् अथवा म् या वर्णानीं सुरवात होणाऱ्या प्रत्ययांच्या बाबतींत विकरण अ चा आ होतो.**

मुलांनो ! नियम फार मोठे होऊं नयेत म्हणून खालील परिभाषा जराशी शिका :—

**तादि** प्रत्यय—ज्या प्रत्ययांची सुरवात त् या वर्णानें ( त् + आदि ) होते तो प्रत्यय.

**सादि** प्रत्यय—ज्याची सुरवात स् या वर्णानें होते ( स् + आदि ) तो प्रत्यय.

**वादि** प्रत्यय—ज्याची सुरवात **व्** या वर्णानें होते (व् + आदि) असा प्रत्यय.

**मादि** प्रत्यय—ज्याची सुरवात **म्** या वर्णानें होते तो प्रत्यय.

या परिभाषेप्रमाणें वरील नियम १ खालीलप्रमाणें सांगतां येईल :—

**वादि** आणि **मादि** प्रत्ययांपूर्वी विकरण अ चा **आ** होतो.

## अभ्यास

१ खालील धातूंचीं रूपें वर्तमानकाळाचीं लिहा :—

**चर्** (१ प.), **पुष्** (४ प.), **लभ्** (१ आ.), **वन्द्** (१ आ.)

२ खालील रूपें ओळखा :—

**कर्षन्ति** (कृष्-कर्ष् १ प.); **धरथः** (धृ-धर् १ प.); **तिष्ठाम** : (स्था-तिष्ठ् १ प.) ; **भवन्ति** (भू-भव् १ प.)

---

# त्रयोविंशतितमः पाठः

## वर्तमानकाळ

### षष्ठः गणः (विकरण अ)

| परस्मैपद. धातु **विश्** (प्रवेश करणें) | एक व. | द्वि. व. | ब. व. | आत्मनेपद धातु **क्षिप्** (फेकणें) एक व. | द्वि. व. | ब. व. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | **विशामि** | **विशावः** | **विशामः** | **क्षिपे** | **क्षिपावहे** | **क्षिपामहे** |
| द्वि. पु. | **विशसि** | **विशथः** | **विशथ** | **क्षिपसे** | **क्षिपेथे** | **क्षिपध्वे** |
| तृ. पु. | **विशति** | **विशतः** | **विशन्ति** | **क्षिपते** | **क्षिपेते** | **क्षिपन्ते** |

### दशमः गणः (विकरण अय)

| परस्मैपद धातु **कथ्** (सांगणें) | | | | आत्मनेपद धातु **कथ्** (सांगणें) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | **कथयामि** | **कथयावः** | **कथयामः** | **कथये** | **कथयावहे** | **कथयामहे** |
| द्वि. पु. | **कथयसि** | **कथयथः** | **कथयथ** | **कथयसे** | **कथयेथे** | **कथयध्वे** |
| तृ. पु. | **कथयति** | **कथयतः** | **कथयन्ति** | **कथयते** | **कथयेते** | **कथयन्ते** |

## व्याकरणविषयक टीपा व प्रश्न

१. **विशावः, विशामः, क्षिपावहे, क्षिपामहे, कथयामहे,** या रूपांविषयीं तुम्हांस नियम ठाऊक आहे काय ?

२. या पाठांत आपण दुसरीं एकदोन रूपें पाहूं :—

| | |
|---|---|
| **विशन्ति** | **विश् + अ + अन्ति** |
| **क्षिपन्ते** | **क्षिप् + अ + अन्ते** |
| **कथयन्ति** | **कथ् + अय + अन्ति** |
| **कथयन्ते** | **कथ् + अय + अन्ते** |

वास्तविक हीं रूपें सन्धिनियमाप्रमाणें कशीं व्हावींत ? पण तीं कशीं झालीं आहेत ?

**नियम २—अन्ति व अन्ते प्रत्ययांपूर्वी विकरण अ (प्रथम गण व षष्ठ गण) लुप्त होतो व विकरण य (४) यांतील अ चा लोप होतो म्हणजे य् राहतो.**

## अभ्यास

१. खालील धातूंचे वर्तमानकाळ लिहा :—

**स्पृश्** ( ६ प. ); **प्रथ्** ( १० उ. ) प्रसिद्ध करणें.
**वन्द्** ( १ आ ); **युध्** ( ४ आ. ); **सृज्** ( ६ प. ).

२. खालील रूपें ओळखा :—

**अस्ति** ( अस् २ ); **अपहरति** ( अप + हृ – हर् १ प. )
**नयति** ( नी – नय् १ उ. ); **भवत** ( भू – भव् १ प. )
**रोचते** ( रुच् १ आ. ); **कथय** ( कथ् १० उ. ).

३ खालील रिकाम्या जागा खालीं दिलेल्या क्रियापदांतून योग्य निवड करून पुऱ्या करा :—

( अ ) **दण्डकारण्ये वन्याः पशवः** ——— **। ते पर्णानि फलानि च** ——— **। तेषु सर्वेषु एकः सिंहः अतीव क्रूरः** ——— **। तत्र द्वौ व्याघ्रौ रजन्यां जलपानाय तडागस्य तीरं** ——— **।**

( क्रियापदें:—वर्तते; भक्षयन्ति; गच्छतः; वसन्ति । )

(आ) १ अहं रावणेन सह ——— ।

२ त्वं परमेश्वरं ——— ।

३ जनौ कथाम् ——— ।

( क्रियापदें :—कथयतः; वन्दसे; युध्ये । )

४ खालील वाक्यें खालीं दिलेल्या धातूचीं योग्य रूपें करून भरा :—

१ चोराः धनम् ——— ।

२ अहम् जलात् मत्स्यम् ——— ।

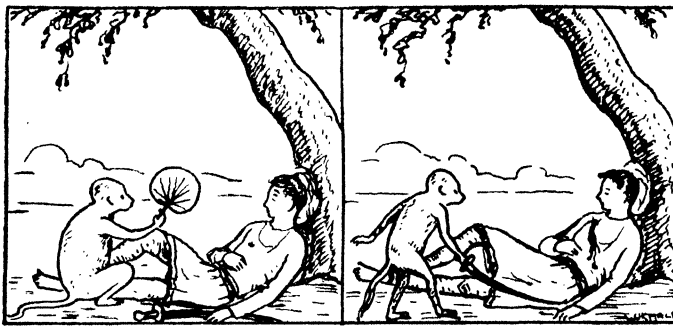
३ यूयम् ग्रामं धेनूः ——— ।

४ राक्षसौ नरान् ——— ।

( धातु :—तड्-ताड् १० उ.; कृष्-कर्ष् १ प.; अप+हृ-हर् १ प.; नी-नय् १ उ. )

# चतुर्विंशतितमः पाठः

आसीत् एकः शोभनो नाम भूपः। तस्यैको जडमतिर्नाम कपि रंगसेवक आसीत्। तस्य मतिर्जडाऽसीत्। एकदा सुप्तस्य नृपतेर्वक्षः-



स्थल एका मक्षिकोपाविशत्। तदा कपिर्व्यजनं गृहीत्वा तां निवारयितुमयतत। किन्तु सा मक्षिका पुनः पुनः तत्रोपाविशत्। अन्ते स कपिरकुप्यत्। हस्तेऽसिं धृत्वा तां मक्षिकां हन्तुं स तस्या उपरि प्रहारमकरोत्। मक्षिका गता। परं तेन प्रहारेण तस्य नृपतेः शरीरं द्विधाऽभवत्। मूर्खोऽनुचरो न रक्षणीयः।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—

१ किम् अकरोत् मक्षिका?

२ वानरः व्यजनेन किम् अकरोत्?

३ मक्षिका-निवारणे वानरः कम् अन्यम् उपायम् अयोजयत्? कः च तस्य परिणामः?

२ हीच कथा वर्तमानकाळांत लिहा.

## टीपा

**नाम**—नांवाचा; याचा उपयोग नीट ध्यानांत ठेवा. नाम हें अव्यय आहे.

'राम' नांवाचा — **रामः** नाम

'विष्णु' नांवाचा — **विष्णुः** नाम

आर्य नांवाचे लोक — **आर्याः नाम नराः**

( अध्यापकांनीं याचा उपयोग नीट समजावून द्यावा. )

**गृहीत्वा**—घेऊन; **कृत्वा**—करून; **गत्वा**—जाऊन; **हत्वा**—ठार मारून; **सृत्वा**—सरून; **दत्वा**—देऊन. ( त्वा—मराठी प्रत्यय ऊन ).

**निवारयितुम्**—हाकून देण्यासाठीं; **गन्तुम्**—जाण्यासाठीं ( गम् + तुम् ); **आप्तुम्**—मिळविण्यासाठीं ( आप् + तुम् ); **दातुम्**—देण्यासाठीं; ( दा + तुम् ) **लब्धुम्**—( लभ + तुम् ) मिळवण्यासाठीं **द्रष्टुम्**—( दृश् + तुम् ) पाहण्यासाठीं; **हन्तुम्**—( हन् + तुम् ) मारण्यासाठीं.

**द्विधा**—दोन भागांत; **त्रिधा**—तीन भागांत; **चतुर्धा**—चार भागांत; **पञ्चधा**—पांच भागांत.

त्याच्या शरीराचे पांच तुकडे झाले = **तस्य शरीरं पञ्चधा अभवत्.**

## व्याकरण

१ या पाठांत योजलेलीं क्रियापदें व त्यांचें पृथक्करण :—

| रूप | भूतकाळाची खूण | धातु गण व पद | विकरण | भूतकाळ प्रत्यय | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| **आसीत्** | अ (आ) | **अस्** २ उ. | नाहीं | त् | परस्मैपद |
| **उपाविशत्** | अ | **उप + विश्** ६ प. | अ | त् | ,, |
| **अयतत** | अ | **यत्** १ आ. | अ | त | आत्मनेपद |
| **अकुप्यत्** | अ | **कुप्** ४ प. | य | त् | परस्मैपद |
| **अकरोत्** | अ | **कृ** ८ उ. | उ | त् | परस्मैपद |
| **अभवत्** | अ | **भू–भव्** | अ | त् | परस्मैपद |

## भूतकाळाचे प्रत्यय

| | परस्मैपद | | | आत्मनेपद | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एव व. | द्विव. | ब. व. | एव व. | द्विव. | ब. व. |
| प्र. पु. | अम् | व | म | इ | वहि | महि |
| द्वि. पु. | स (ः) | तम् | त | थास् (थाः) | इथाम् | ध्वम् |
| तृ. पु. | त् | ताम् | अन् | त | इताम् | अन्त |

खालील कोष्टकें नीट पहा.

(अ)

| धातु | वर्तमानकाळ तृ. पु. | भूतकाळ तृ. पु. |
|---|---|---|
| गम् ( गच्छ् ) | गच्छति | अगच्छत् |
| वद् | वदति | अवदत् |
| स्था ( तिष्ठ् ) | तिष्ठति | अतिष्ठत् |
| पत् | पतन्ति | अपतन् |
| लभ् | लभते | अलभत |
| पुष् | पुष्यति | अपुष्यत् |

| धातु | | विकरण | | प्रत्यय | भूतकाळाची खूण + धातु + विकरण + प्रत्यय |
|---|---|---|---|---|---|
| गच्छ् | + | अ | + | ति | अ + गच्छ् + अ + त् |
| वद् | + | अ | + | ति | अ + वद् + अ + त् |
| तिष्ठ् | + | अ | + | ति | अ + तिष्ठ् + अ + त् |
| पत् | + | अ | + | अन्ति | अ + पत् + अ + अन् |
| लभ | + | अ | + | ते | अ + लभ् + अ + त् |
| पुष् | + | य | + | ति | अ + पुष् + य + त् |

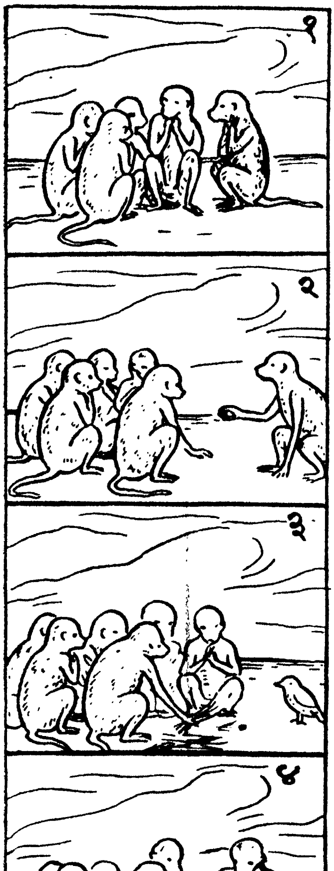
(ब) कोष्टकावरून असें दिसून येईल कीं भूतकाळ तयार करतांना (१) प्रथम भूतकाळाची खूण अ जोडावी लागते. (२) नंतर धातु; (३) नंतर विकरण प्रत्यय व (४) मग जरूर तो भूतकाळाचा प्रत्यय;

**टीपः**—धातुपूर्वी जर उपसर्ग असला तर क्रम खालीलप्रमाणें:—

१ उपसर्ग, २ भूतकाळाची खूण, ३ धातु, ४ विकरण प्रत्यय, ५ भूतकाळाचा प्रत्यय.

उदा०—**उपाविशत्—उप+अ+विश्+अ+त्.**

# पञ्चविंशतितमः पाठः




१ कः समयः ( ऋतुः ) वर्तते ?

२ हेमन्ते कीदृशः वातः वहति ?

३ कपयः कथं तिष्ठन्ति ?

१ कति सन्ति वानराः ?

२ किम् आनयत् षष्ठः वानरः ?

३ अनंतरं ते वानराः किम् अकुर्वन् ?

१ तस्मिन्नन्तरे कः आगच्छत् ?

२ किम् अवदत् सः ?

१ एकः वानरः किम् अकरोत् ?

१ किम् तात्पर्यम् अस्याः कथायाः ?

## अभ्यास

१ ही कथा गोष्टरूपानें संस्कृत भाषेंत ( घरांतून ) लिहून आणा.

२ या पाठांतील प्रश्न सन्धि करून लिहा.

३ सन्धि करा :—गुरुः + अवदत् ; कपिः + आरोहति ; शाला + इतिहास.

४ भूतकाळ तृतीयपुरुषाचीं रूपें द्या :—मुच् ( मुञ्च् ६ प. ); भू ( भव् १ प. ).

## व्याकरण

इकारान्त स्त्रीलिंगी शब्द **मति** ( स्त्री ) बुद्धि.

| | एक व. | द्वि व. | बहु व. |
|---|---|---|---|
| प्र. | मतिः | मती | मतयः |
| द्वि. | मतिम् | ,, | मतीः |
| तृ. | मत्या | मतिभ्याम् | मतिभिः |
| च. | मतये-त्यै | ,, | मतिभ्यः |
| पं. | मतेः-त्याः | ,, | ,, |
| ष. | ,, ,, | मत्योः | मतीनाम् |
| स. | मतौ-त्याम् | ,, | मतिषु |
| सं. | मते | मती | मतयः |

कीर्ति, रुचि, बुद्धि, नीति, कृति, गति, पूर्ति इत्यादि शब्द मतिप्रमाणें चालतात.

# षड्विंशतितमः पाठः

## संवादः

( स्थलम् कैलासपर्वतः। लक्ष्मीः पार्वती सरस्वती च सुखम् उपविष्टाः। तेषां विनोदालापाः )

**पार्वती**—जयतु जयतु लक्ष्मीः। लक्ष्मि आगच्छ। पश्य मे गृहम्।

लक्ष्मीः—पार्वति ! किं दर्शनीयं तव गृहे ? किम् अनर्घ्याणि रत्नानि वा वसनानि वा चित्राणि ? तव पतिः श्मशानवासी। वृषभवाहनः !। सदैव नग्नप्रायः। चिताभस्मचर्चिततनुः सः। आसमन्तात् प्रेतराशयः। अस्थिपर्वताः। तव पतिः स्वभावतः ऋजुः। सदा ताण्डवनृत्यं करोति। पिशाचः एव।

पार्वती—ज्ञातः तव पतिः मया चपले ! मम नाथः देवाधिदेवः महादेवः। पतिशरीरात् यत् भस्म धरणौ पतति तत् त्वत्पतिसहिताः इतरे देवाः तनौ धारयन्ति कृतार्थाः च आत्मानं मन्यन्ते। जटायां गङ्गायाः वासः। पूर्वजोद्धरणाय भगीरथेन प्रार्थितः शिवः गङ्गाभारवहनाय सिद्धः अभवत्। अमरकार्याय मम वल्लभेन कालकूटम् प्राशितम्। कुत्र आसीत् शेषशयनः तदा ?

लक्ष्मीः—सत्यम् !। भोलानाथः महादेवः !! सः भस्मासुराय वरप्रदानम् अकरोत्। तदा सः उन्मत्तः राक्षसः वरदायकस्य पश्यतः एव कैलासनाथस्य तव हरणं कर्तुम् उद्यतः अभवत्। तदा मोहिनीरूपधारी मम वल्लभः एव महादेवस्य तव च रक्षणाय आगतः। किम् तत् विस्मृतम् त्वया ?

सरस्वती—अस्तु एतत्। मम पतिः बुद्धिदाता। बुद्धिं विना देवाः अपि पशुसमानाः। सः विघ्नहर्ता। तस्मात् सः श्रेष्ठः।

लक्ष्मीः—सः गजशुण्डाधारी अर्धदेवः ? न देवः न पशुः ! सरस्वति ! अयि शारदे ! किम् वृथाभिमानं वहसि ? तव पतिः भोलानाथस्य एव कुमारः। मूढजनकस्य मूढपुत्रः।

पार्वती—चञ्चले ! मा एते प्रलापाः। एषा मम स्नुषा। विष्णुः अपि अस्याः प्रसादात् विना पशुः इव भवेत्। मम पुत्रः विघ्नहर्ता मङ्गलकर्ता। एषा स्नुषा बुद्धिदात्री देवता।

लक्ष्मीः—धनं विना लोकेषु बुद्धिः न प्रवर्तते। सर्वे व्यापाराः धनाधिष्ठिताः। मया विना जगत् शून्यम् भवेत्।

सरस्वती—मां विना जगत् विनश्येत्।

पार्वती—सत्यम् एतत् ।

( शंकरः प्रविशति )

शिवः—कस्मात् कलहः ? सर्वेषाम् एव उपयोगः । बुद्धिं विना धनम् निरर्थकम् । धनं विना बुद्धिः अन्धा एव । वैराग्येण विना धनस्य बुद्धेः च सदुपयोगः न भवेत् । तस्मात् जगद्धारणाय सर्वेषाम् उपयोगः ।

लक्ष्मीः—भवद्भिः यत् उक्तं तत् सत्यम् एव । सांप्रतं सन्ध्या-समयः जातः । गच्छामि पार्वति ! ।

पार्वती—साधु ! अद्यप्रभृति कलहः न कार्यः ।

लक्ष्मीः—साधु !

( गरुडमारुह्य लक्ष्मीः प्रस्थिता )

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—१ शिवनिवास वर्णनं कुरुत.

२ पार्वती शिवस्य महादेवत्वं कथं साध्नोति ?

३ सरस्वती किं वदति ?

४ शंकरः किम् अवदत् ?

२ सन्धि करून हा पाठ लिहा.

## टीपा

लक्ष्मीः—हा शब्द नदी प्रमाणें चालतो. पण प्र. एकवचन लक्ष्मीः असें होतें.

श्मशानवासी—श्मशान + वास + इन्

नग्नप्राय—नग्न + प्राय—जवळ जवळ नग्न

मृत + प्राय— ,, ,, मेलेला.

समाप्त + प्राय—,, ,, समाप्त.

आसमन्तात्—( अव्यय ) चोंहीकडे.

पश्यतः एव कैलासनाथस्य ( अनादारार्थे षष्ठी )—धडधडीत शंकराच्या डोळ्यां देखत.

रूपधारी — रूप + धारिन्.

विघ्नहर्ता — विघ्न + हर्तृ.

मङ्गलकर्ता — मङ्गल+ कर्तृ.

गजशुण्डाधारी — गजशुण्डाधारिन्.

बुद्धिदात्री — बुद्धि + दातृ + ई.

अद्यप्रभृति — आजपासून; श्वः + प्रभृति = उद्यांपासून.

## व्याकरण

१ **विना**—याचा उपयोग या पाठांत कोठें कोठें आला आहे तो पहा.

२ खालील विभक्ति ओळखाः—**सरस्वति; चञ्चले; धरणौ, लक्ष्मीः.**

३ **कर्तुम्**—या पदासारखीं तीन रूपें लिहा.

---

# सप्तविंशतितमः पाठः

## प्रथमभूतकाळ

**पूर्वतयारीः—**

मुलांनो ! भूतकाळाचे प्रत्यय तुम्हांस माहीत आहेत. तें एकदां सांगा पाहूं. भूतकाळाची खूण कोणती ? ती कोठें जोडावयाची ? विकरण प्रत्यय कोठें जोडावयाचा ? उपसर्ग असेल तर तो कोठें जोडावयाचा ?

### प्रथमगण

| परस्मैपद धातु **नम्** ( १ प. ) | | | | आत्मनेपद धातु **लभ्** ( १ आ. ) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक व. | द्वि. व. | बहु व. | एक व. | द्वि. व. | बहु व. |
| प्र. पु. | **अनमम्** | **अनमाव** | **अनमाम** | **अलभे** | **अलभावहि** | **अलभामहि** |
| द्वि. पु. | **अनमः** | **अनमतम्** | **अनमत** | **अलभथाः** | **अलभेथाम्** | **अलभध्वम्** |
| तृ. पु. | **अनमत्** | **अनमताम्** | **अनमन्** | **अलभत** | **अलभेताम्** | **अलभन्त** |

## चतुर्थगण

| | परस्मैपद धातु **पुष्** ( ४ प. ) | | | आत्मनेपद धातु **युध्** ( ४ आ. ) | |
|---|---|---|---|---|---|
| | एक व. | द्विव. | बहु व. | एक व. | द्विव. | बहु व. |
| प्र. पु. | **अपुष्यम्** | **अपुष्याव** | **अपुष्याम** | **अयुध्ये** | **अयुध्यावहि** | **अयुध्यामहि** |
| द्वि. पु. | **अपुष्यः** | **अपुष्यतम्** | **अपुष्यत** | **अयुध्यथाः** | **अयुध्येथाम्** | **अयुध्यध्वम्** |
| त्रि. पु. | **अपुष्यत्** | **अपुष्यताम्** | **अपुष्यन्** | **अयुध्यत** | **अयुध्येताम्** | **अयुध्यन्त** |

## अभ्यास

१ खालील धातूंचीं भूतकाळाचीं रूपें लिहा :—

**स्था** ( तिष्ठ् १ प. ); **भू** ( भव् १ प. ); **वृत्** ( वृर्त् १ आ. ); **पुष्** (४ प.); **विद्** ( ४ आ. ); **नी** ( नय् १ उ. ); **दृश्** ( पश्य् १ प. ).

२ खालीं दिलेल्या उताऱ्यांतून क्रियापदें शोधून काढून तीं कशीं झालीं आहेत तें दाखवा :—

**एकः याचकः क्षुधातुरः अभवत्। सः हिमालये सूर्योदये एव शिवस्य मन्दिरम् अविशत्। तत्र शंकरस्य स्तवनम् आरभत। महादेवः प्रसन्नः अभवत्। तस्मै प्रभूतं सुवर्णम् अयच्छत्। प्रसन्नः याचकः शंकरं पुनः अस्तवीत्। सूर्यास्ते सः गृहम् अगच्छत्।**

३ कंसांत दिलेल्या धातूंचीं भूतकाळांतील योग्य रूपें बनवून योजा :—

**रावणः रामस्य भार्यां सीताम्** ( अप + हृ—हर् १ प. ) । **सीता अशोकवने** ( वस् १ प. ) । **दुःखितः रामः सीतान्वेषणार्थम्** ( भ्रम् १ प. ) । **अन्ते सः सुग्रीवम्** ( दृश्-पश्य् १ प. ) । **तेन सह सन्धिं कृत्वा तस्य नायकं मारुतिं सः लङ्कां प्रैषयत्।**

४ दुसरा व तिसरा प्रश्न सन्धि करून लिहा.

५ **अपुष्याव, अपुष्याम, अयुध्यामहे** हीं रूपें कशीं झालीं तें सांगा.

## व्याकरण

खालील कोष्टक नीट पहा :—

### भूतकाळ

| उपसर्ग | भूतकाळाची खूण | धातु | विकरण प्रत्यय | भूतकाळाचा प्रत्यय | रूप |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | **व्यञ्जनादि धातु** | | |
| आ | अ | नी—नय् | अ ( १ ) | त् | आ + अ + नय् + अ + त् = अनयत् |
| अव | अ | तॄ—तर् | अ ( १ ) | स् ( : ) | अवतरः |
| सम् | अ | गम्—गच्छ् | अ (१ आ) | त् | समगच्छत |
| | अ | कुप् | य ( ४ प.) | त् | अकुप्यत् |
| | अ | गम्—गच्छ् | अ ( १ प.) | त् | अगच्छत् |
| | | | **स्वरादि धातु** | | |
| | आ | इष्—इच्छ् —ऐच्छ् | अ | त् | ऐच्छत् |
| | आ | उञ्छ्-औञ्छ् | अ | त् | औञ्छत् |

**टीपः**—वर्तमानकाळांतील ‘अन्ति व अन्ते’च्या बाबतींत जो नियम तो येथेंही लागू आहे.

| वर्तमान | भूतकाळ | |
|---|---|---|
| गच्छन्ति | अगच्छन् | अन् व अन्त प्रत्ययांपूर्वी विकरण अ अथवा य असेल तर त्यांतील अचा लोप होतो. |
| लभन्ते | अलभन्त | |

**नियम ३**—भूतकाळ करावयाचा असेल तर स्वरादि धातूंच्या बाबतींत भूतकाळाची खूण आ असते, व धातूंतील प्रारंभींचा स्वर वृद्धि घेतो.

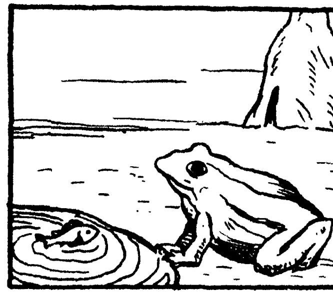
**गुणः**—अ या स्वराचा गुण अ, वृद्धि आ
आ ,, ,, ,, आ ,, आ.
इ, ई, यांचे गुण ए, वृद्धि ऐ
उ; ऊ, ,, ,, ओ ,, औ
ऋ, ॠ, ,, ,, अर् ,, आर
लृ, ॡ, ,, ,, अल्, ,, आल्.

ए, ऐ, ओ, औ, या चार स्वरांना गुण वृद्धि नाहींत.

# अष्टाविंशतितमः पाठः

## सबलो दुर्बलं पीडयति

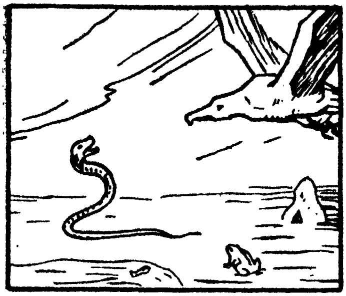
कस्मिंश्चित् वन एकः तडाग आसीत्। निदाघे तस्य जलमल्पमभवत्। तदा दुर्दैववशात् एको मत्स्यः तस्य तीरमागच्छत्। समीप एको मण्डूको भक्ष्यं लब्धुमतिष्ठत्। यदा स भेकः तं मत्स्यमपश्यत् तदा तं भक्षयितुं सोऽसरत्। मत्स्योऽवदत्। "मण्डूकराज। अहमल्पजीवः। न मे कश्चिदपराधः। तत् किमर्थं मां भक्षयसि? समानेन सह युद्धमुचितम्"। मण्डूकोऽवदत्। "रे मूढ! त्वं ममान्नम्। यदि त्वां न भक्षयामि तर्हि कथमहं जीवेयम्? दुर्बलाय मरणमेव योग्यम्"।



अत्रान्तरे कश्चित् सर्पोऽन्तिकाद् बिलाद् बहिरागच्छत्। जलस्य तीरे भेकं दृष्ट्वा तमुद्दिश्य सः सत्वरमसर्पत्। भुजंगमवलोक्य मण्डूको भीतोऽभवत्। मुखाच्च मत्स्यं त्यक्त्वा जले गन्तुमयतत। किन्तु तत्क्षणमेव नागः तं मुखेनाधरत्। तद् द्रष्टुं तत्रैवातिष्ठत् मत्स्यः मण्डूकोऽवदत् "रे नागराज! अहमल्पजीवः। न मे कश्चिदपराधः। किं मां भक्षयसि? समानेन सहैव युद्धं योग्यम्"। सर्पोऽवदत् "मूढ! किं न जानासि यत् त्वं मेऽन्नमिति? दुर्बलाय मरणमेव योग्यम्"। इत्युक्त्वा तं भक्षयितुं सर्पः सिद्धोऽभवत्।



अत्रान्तरे विहगानां श्रेष्ठो गरुड आकाशमार्गेण गच्छति स्म।



जलाशयस्य तीरेरुद्रं कृष्णसर्पं दृष्ट्वा तमुद्दिश्य स वेगेनाडयत। तस्य पुरतः चावातरत्। वैनतेयं दृष्ट्वा सर्पोऽकम्पत। अवदच्च। "रे विहगराज! न मे कश्चिदपराधः। अहमल्पजीवः। तत् किमर्थं मां भक्षयसि? समानेन सह युद्धं न्याय्यम्"। वैनतेयोऽवदत्। "पण्डितोऽसि। त्वमेव मण्डूकं भक्षयितुं सज्जोऽभवः। नहि किम्? तदा तव पाण्डित्यं कुत्र गतमासीत्? अतः साम्प्रतं मरणमेव तवोचितम्"।



करालैर्नखैः तं सर्पं गृहीत्वा स गरुड आकाश उद्डयत।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—१ मत्स्यः भेकं किमवदत्?

२ कः मण्डूकस्य अन्नं वर्तते?

३ कस्य भक्ष्यं मण्डूकः? सर्पः कस्य अन्नम्?

४ कः आकाशात् अवातरत्?

५ गरुडेन सर्पस्य किं कृतम्?

२ या पाठांत आलेले मण्डूक, मत्स्य, गरुड व सर्प या अर्थांचे सर्व शब्द लिहा.

३ खालील सन्धि सोडवा:—

वन एकः। तीरयागच्छत्। समीप एकः। सोऽसरत्। इत्युक्त्वा। तमुद्दिश्य।

४ सन्धि कराः—**बहिः + आगच्छत् । तत्र + एव + अतिष्ठत् । च + अवातरत् । वैनतेयः + अवदत् । तव + उचितम् । उत् + अडयत ।**

५ पञ्चमी, षष्ठी व तृतीया विभक्तींतील प्रत्येकीं तीन तीन शब्द दाखवा.

३ पांच विशेषणें नामासहित द्या.

## टीपा

**दुर्दैववशातः**—दुर्दैवामुळें; काल + वशात् = कालवशात्–कालामुळें.

**लब्धुम्ः**—**लभ् + तुम्** मिळविण्यासाठीं ( अव्यय ) ( **तुम्**–साठीं ) हेत्वर्थक प्रत्यय. **नी–नेतुम्; स्था–स्थातुम्; गम्–गन्तुम्; कृ–कर्तुम्**; इत्यादि.

**सहः**—बरोबर; या अव्ययाशीं नामाची तृतीया विभक्ति असते. जसें–**रामेण सह; अनंतेन सह.**

**तम् उद्दिश्य**—उद्दिश्य या अव्ययाबरोबर द्वितीया विभक्ति येते. 'उद्दिश्य'चे दोन अर्थ होतातः—

**१ ग्रामम् उद्दिश्य**–गावाकडे

**२ रामम् उद्दिश्य**–रामाविषयीं.

**गच्छति स्म**—**अगच्छत्; वदति स्म = अवदत् ।**

**गृहीत्वा**—घेऊन; **ग्रह् + त्वा; कृ–कृत्वा; त्यज्–त्यक्त्वा; नम्–नत्वा; गम्–गत्वा** इ. **त्वा** प्रत्यय मराठींतील **ऊन** प्रत्ययासारखा आहे.

## व्याकरण

### ( सन्धि ) व्यञ्जनसन्धि

व्यञ्जनसन्धींचे दोन प्रकार ( १ ) व्यञ्जन+स्वर आणि ( २ ) व्यञ्जन + व्यञ्जन.

(१) व्यञ्जन + स्वरः—

**रचना :—**

| मागील व्यञ्जन | + पुढील स्वर | = परिणाम |
|---|---|---|
| दुर्दैववशात् (त्) | (ए) एकः | त् चा द् होतो दुर्दैववशादेकः |
| कश्चित् (त्) | (अ) अपराध | ,, ,, कश्चिदपराधः |

**नियम १६ :**—पञ्चवर्गांतील (पहिल्या दोन) कठोर व्यञ्जनांपुढें कोणताही स्वर आल्यास त्या कठोर व्यञ्जनाचें त्याच वर्गांतील तिसरें व्यञ्जन होतें. जसें :—त् थ् चें द्; प् फ् चें ब्; ट् ठ् चें ड् इत्यादि.

(२) व्यञ्जन + व्यञ्जन

**रचना :—**

| मागील व्यञ्जन | पुढील व्यञ्जन | परिणाम |
|---|---|---|
| अन्तिकात् (त्) | (ब्) बिलात् | अन्तिकाद् बिलात् (त् चा द्) |
| बिलात् (त्) | (ब्) बहिः | बिलाद् बहिः (त् चा द्) |

**नियम १७ :**—पञ्चवर्गांतील कठोर व्यञ्जनापुढें मृदु व्यञ्जन आल्यास त्याच वर्गांतील तिसरें व्यञ्जन त्या कठोर व्यञ्जनाबद्दल येतें.

**रचना :—**

| मागील व्यञ्जन | पुढील व्यञ्जन | परिणाम |
|---|---|---|
| मुखात् (त्) | (च्) च | मुखाच् च (त् चा च्) |
| अवदत् (त्) | (च्) चाणूरः | अवदच् चाणूरः (त् चा च्) |

**नियम १८ :**—त् थ् द् ध् पुढें च् अथवा छ् आल्यास त्या त् थ् द् ध् चा च् होतो.

# एकोनत्रिंशत्तमः पाठः

## प्रथम भूतकाळ—६ वा व १० वा गण.

### षष्ठगण

| | परस्मैपद–धातु विश् ( ६ प. ) | | | आत्मनेपद धातु–क्षिप् ( ६ आ. ) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक व. | द्वि. व. | बहु. व. | एक व. | द्वि. व. | बहुवचन. |
| प्र. पु. | अविशम् | अविशाव | अविशाम | अक्षिपे | अक्षिपावहि | अक्षिपामहि |
| द्वि. पु. | अविशः | अविशतम् | अविशत | अक्षिपथाः | अक्षिपेथाम् | अक्षिपध्वम् |
| तृ. पु. | अविशत् | अविशताम् | अविशन् | अक्षिपत | अक्षिपेताम् | अक्षिपन्त |

### दशम गण

| | परस्मैपद धातु–कथ् | | | आत्मनेपद धातु–कथ् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | अकथयम् | अकथयाव | अकथयाम | अकथये | अकथयावहि | अकथयामहि |
| द्वि. पु. | अकथयः | अकथयतम् | अकथयत | अकथयथाः | अकथयेथाम् | अकथयध्वम् |
| तृ. पु. | अकथयत् | अकथयताम् | अकथयन् | अकथयत | अकथयेताम् | अकथयन्त |

### अभ्यास

खालील धातु वर्तमान व भूतकाळांत चालवा.

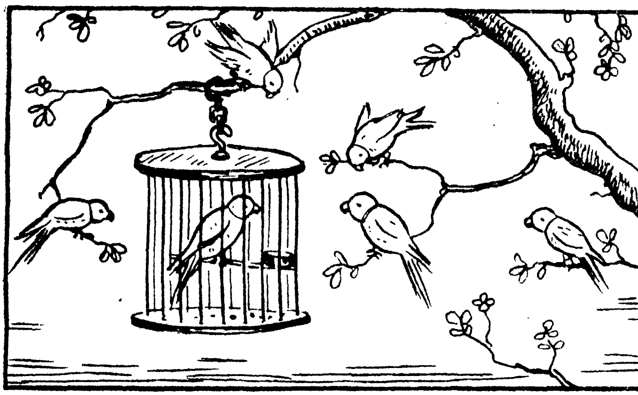
१ मुच् ( मुञ्च् ६ उ. ); स्पृश् ( ६ प. )
निन्द् ( १ प. ); कुप् ( ४ प. ) तड् ( ताड् ) १० उ.

२ रूपें द्या :—
तृतीय एकवचन :—मारुति; रुचि ( स्त्री. ); वारि.
संबोधन एकवचन :—धेनु; कलि ( पु. ).
पंचमी एकवचन :—कीर्ति ( स्त्री ); तनु ( स्त्री ).

३ **भाषांतर करा :**—गोदावरीच्या तीरावर एक विशाल शाल्मलीवृक्ष होता. तेथें नानादेशाहून येऊन रात्रीं पक्षी राहत होते। एकदां सन्ध्याकाळीं लघुपतनक नांवाच्या कावळ्यानें ( वायस पु. ) एका पारध्याला ( व्याध पु. ) पाहिलें. त्याला पाहून त्यानें विचार केला. आज सकाळींच हें अनिष्ट दर्शन झालें.

# त्रिंशत्तमः पाठः

## संवाद.



——— :—वसामि नित्यं कनकस्य पञ्जरे।
दाडिम्बबीजानि च भक्षयामि॥
न वर्तते मे भरणस्य चिंता।
श्रीरामनामस्मरणं करोमि॥ १॥

द्राक्षाफलं चाम्रफलं तथैव।
तथैव चान्यानि फलानि नित्यम्॥
मत्पालकोऽयं प्रददाति मह्यम्।
यच्चान्यदिच्छामि ददाति सर्वम्॥ २॥

आवासयष्टिः कनकस्य निर्मिता।
तस्यां सदाऽहं ससुखं वसामि॥
न मेऽत्र कस्मादपि भीतिलेशः।
न मादृशः कोऽपि सुखी धरातले॥ ३॥

—— :-आकाशमार्गेण वयं चरामः ।
यथेच्छमुड्डीय रसान् पिबामः ॥
फलानि नित्यं मधुराणि यानि ।
सर्वाणि रे तानि च भक्षयामः ॥ १ ॥

पक्षस्तवाऽयं क्षणमेव बन्धो ।
विलोकयास्माद् गलिता हि शोभा ॥
हरित् सुवर्णो जननेत्रहारी ।
न विद्यते नैव बलं शरीरे ॥ २ ॥

यावत् फलं यच्छति ते मनुष्यः ।
सुखेन रे जीवसि तावदेव ॥
धिग् धिग् परालम्बि कुजीवितं तत् ।
यस्मिन्न कीर्तिर्न च मानलाभः ॥ ३ ॥

## अभ्यास

१ प्रश्ना :—

१ किं भक्षयन्ति शुकाः ?

२ केषाम् अयम् संवादः ?

३ पञ्जरस्थः शुकः कुत्र उपविशति ?

४ पञ्जरस्थस्य शुकस्य पक्षः कीदृशः ?

५ परालम्बिजीविते किं न वर्तते ?

६ पञ्जरस्थं शुकं कः पोषयति ?

२ संस्कृत भाषेंत गद्य रूपानें पुन्हां हीच कथा लिहा.

३ सन्धिविच्छेद करा :—

भक्षयाम्यहम्; चाम्रफलम्; यद्यान्यदिच्छामि; यथेच्छमुड्डीय; तवायम्; नैव.

## टीपा

तथैव—तसेंच.

मादृशः—माझ्यासारखा.

| शब्द | पुंलिंग ( रामप्रमाणें चालतो ) | स्त्रीलिंग ( नदीप्रमाणें चालतो ) | नपुंसकलिंग ( वनप्रमाणें चालतो ) |
|---|---|---|---|
| **मादृश** | **मादृश** माझ्यासारखा | **मादृशी** ( मादृश + ई ) माझ्यासारखी | **मादृश** माझ्यासारखें (वनप्रमाणें) |
| **त्वादृश** | **त्वादृश** तुझ्यासारखा | **त्वादृशी** तुझ्यासारखी | **त्वादृश** तुझ्यासारखें |
| **तादृश** | **तादृश** त्याच्यासारखा | **तादृशी** त्याच्यासारखी | **तादृश** त्याच्यासारखें |
| **अस्मादृश** | **अस्मादृश** आमच्यासारखा | **अस्मादृशी** आमच्यासारखी | **अस्मादृश** आमच्यासारखें |
| **युष्मादृश** | **युष्मादृश** तुम्हांसारखा | **युष्मादृशी** तुम्हांसारखी | **युष्मादृश** तुम्हांसारखें |

**उड्डीय**–उडून; **उत् + डी**–डय् ( १ आ. ) + य; **अनु + भू + य = अनुभूय**–अनुभव घेऊन.

**धिक्**—धिक्कार. ज्याचा धिक्कार करावयाचा, तत्पदार्थवाचक शब्द द्वितीया विभक्तींत येतो. कधीं कधीं प्रथमा किंवा सम्बोधनही येतें.

**धिक् दरिद्रता; धिक् राम.**

## व्याकरण

### ( सन्धि ) विसर्गसन्धि

**पक्षस्तव = पक्षः तव ।**

**रचना :—**

| मागील वर्ण | विसर्ग | पुढील वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|---|
| **पक्ष** ( अ ) | : | त् ( तव ) | **पक्षस्तव** ( : चा स् ) |
| **गति** ( इ ) | : | त् ( तत्र ) | **गतिस्तत्र** ( : चा स् ) |
| **क** ( अ ) | : | च् ( चित् ) | **कश्चित्** ( : चा श् ) |
| **नाग** ( अ ) | : | त् ( तम् ) | **नागस्तम्** ( : चा स् ) |
| **धनुष** ( अ ) | : | ट् ( टणत्कारः ) | **धनुषष्टणत्कारः** ( : चा ष् ) |
| **पुरत** ( अ ) | : | च् ( च ) | **पुरतश्च** ( : चा श् ) |

नियम १९ :—विसर्गापुढें त् किंवा थ् आल्यास विसर्गाचा स् होतो; च् छ् आल्यास श् व ट् ठ् आल्यास ष् होतो.

---

# एकत्रिंशत्तमः पाठः

आसीदयोध्यायां दशरथो नाम भूपतिः। तस्य तिस्रो भार्या आसन्। ज्येष्ठा कौसल्या, मध्यमा सुमित्रा, कनिष्ठा च कैकेयी। किन्तु तस्य सन्तानं नासीत्। स पुत्रकामेष्टिमतनोत्। ततः कौसल्यायां रामः, सुमित्रायां लक्ष्मणः, कैकेय्यां च भरतः शत्रुघ्नश्चेति चत्वारः पुत्रा अजायन्त।

तेषु सर्वेषु पुत्रेषु रामः सर्वेषां प्रिय आसीत्। बाल्य एव ते सर्वे कुमारा अतीव चतुरा धनुर्विद्यायां च पारंगता अभवन्। तेषां कीर्तिः सर्वत्र प्रासरत्।

दिनेषु गच्छत्सु दशरथो वृद्धोऽभवत्। सोऽचिन्तयत्। "अहमधुना वृद्धोऽभवम्। रामाय राज्यं दत्वा वनं गच्छामि। तत्रेश्वरस्योपासनां कृत्वा देहं त्यजामि"। गुरुर्वसिष्ठोऽप्यन्वमन्यत। रामराज्याभिषेकस्य सर्वान् सम्भारान् सचिवा अकुर्वन्।

अथ स मङ्गलदिवस आगच्छत्। अयोध्यायां सर्वे जनाः सहर्षा अभवन्। तोरणैश्च सर्वां नगरीं ते सुशोभितामकुर्वन्। सर्वत्र दुंदुभिनादोऽभवत्।

तदा कैकेयी दशरथमवदत्। "नाथ पुरा भवान् मह्यं वरद्वयमयच्छत्। अद्याहं तौ द्वौ वरौ याचे। रामाय वनं प्रेषय इति वर एकः। 'मम पुत्राय भरताय राज्यं देहि' वरः द्वितीय एषः"। कैकेय्या वचनं श्रुत्वा स वृद्धोऽयोध्यानाथो दुःखसागरेऽमज्जत्।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—

१ दशरथस्य कति भार्याः आसन्? कानि नामानि तासाम्?

२ वार्धक्ये किम् अचिन्तयत् दशरथः?

३ रामराज्याभिषेकस्य निश्चये जाते जनाः किम् अकुर्वन् ?
४ कैकेयी दशरथं किम् अवदत् ?

२ सन्धिविच्छेद करून हा पाठ पुन्हां लिहा.

३ या पाठांतील सर्व अव्ययें शोधून काढा.

४ क्रियापदें एकत्र करा व त्यांचीं रूपें ओळखा.

## टीपा

**तिस्रः** – तीन ( **त्रि** – तीन याचें स्त्रीलिंगी प्रथमा बहुवचन **तिस्रः** )

### त्रि

| | पुंल्लिंग | स्त्रीलिंग | नपुंसकलिंग |
|---|---|---|---|
| प्रथमा व संबोधन | **त्रयः** | **तिस्रः** | **त्रीणि** |
| द्वि. | **त्रीन्** | **तिस्रः** | **त्रीणि** |
| तृ. | **त्रिभिः** | **तिसृभिः** | |
| च. | **त्रिभ्यः** | **तिसृभ्यः** | इतर रूपें पुंल्लिंगाप्रमाणें. |
| पं. | ,, | ,, | |
| ष. | **त्रयाणाम्** | **तिसृणाम्** | |
| स. | **त्रिषु** | **तिसृषु** | |

**चत्वारः** – चार. ( चतुर् चें पु. प्र. बहुवचन )

### चतुर्

| | पुं. | स्त्री. | नपुं. |
|---|---|---|---|
| प्र. व. सं. | **चत्वारः** | **चतस्रः** | **चत्वारि** |
| द्वि. | **चतुरः** | ,, | ,, |
| तृ. | **चतुर्भिः** | **चतसृभिः** | बाकी रूपें पुल्लिंगाप्रमाणें. |
| च. | **चतुर्भ्यः** | **चतसृभ्यः** | |
| पं. | ,, | ,, | |
| ष. | **चतुर्णाम्** | **चतसृणाम्** | |
| स. | **चतुर्षु** | **चतसृषु** | |

**दिनेषु गच्छत्सु**—याला **सति सप्तमी** म्हणतात.–जसजसे दिवस चालले तसतसे; अथवा बराच काळ लोटल्यानंतर असा अर्थ.

**दत्त्वा** — **दा** — **दत्त्वा** — देऊन.

**कृत्वा** — **कृ** — **कृत्वा** — करून.

**अन्वमन्यत—अनु + अमन्यत** ( अनु + मन् ४ आ. ) कसलें रूप आहे सांगा.

**याचे**—( याच् १ आ. मागणें. )

**श्रुत्वा—श्रु—श्रुत्वा**–ऐकून.

**अमज्जत्—मस्ज्** ( मज्ज् १ प. ) रूप ओळखा.

## व्याकरण

### संख्यावाचक शब्द

| अंक | संस्कृत | मराठी | गुजराथी | हिंदी | इंग्रजी |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | **एक** | एक | એક | एक | One |
| २ | **द्वि** | दोन | બે | दो | Two |
| ३ | **त्रि** | तीन | ત્રણ | तीन | Three |
| ४ | **चतुर्** | चार | ચાર | चार | Four |
| ५ | **पञ्चन्** | पांच | પાંચ | पांच | Five |
| ६ | **षष्** | सहा | છ | छे | Six |
| ७ | **सप्तन्** | सात | સાત | सात | Seven |
| ८ | **अष्टन्** | आठ | આઠ | आठ | Eight |
| ९ | **नवन्** | नऊ | નઉ | नऊ | Nine |
| १० | **दशन्** | दहा | દસ | दस | Ten |
| ११ | **एकादशन्** | अकरा | અગ્યાર | ग्यारह | Eleven |
| १२ | **द्वादशन्** | बारा | બાર | बारह | Twelve |
| १३ | **त्रयोदशन्** | तेरा | તેર | तेरह | Thirteen |
| १४ | **चतुर्दशन्** | चौदा | ચૌદ | चौदह | Fourteen |
| १५ | **पञ्चदशन्** | पंधरा | પંધર | पन्द्रह | Fifteen |
| १६ | **षोडशन्** | सोळा | સોળ | सोलह | Sixteen |
| १७ | **सप्तदशन्** | सतरा | સત્તર | सत्रह | Seventeen |
| १८ | **अष्टादशन्** | अठरा | અઢાર | अठारह | Eighteen |
| १९ | { **नवदशन्**<br>{ **एकोनविंशति** | एकोणीस | ઓગણીસ | उन्नीस | Nineteen |
| २० | **विंशति** | वीस | વીસ | वीस | Twenty |

# द्वात्रिंशत्तमः पाठः



( सिंहासनस्थः धृतराष्ट्रः। दुर्योधनः कौरवैः सह उपविष्टः । ( ततः प्रविशति द्वारपालः। )

द्वारपालः—जयतु जयतु राजेन्द्रः। यादवनाथः कृष्णः द्रष्टुकामः द्वारे तिष्ठति।

दुर्योधनः—गच्छ। प्रवेशय तम्। ( कौरवेभ्यः ) किंकारणम् अद्य वासुदेवः आगतः ? पाण्डवानां किंचित् कारणं भवेत् !

( कृष्णः प्रविशति )

कृष्णः—आयुष्मान् भव। दुर्योधन, आयुष्मान् भव।

दुर्योधनः—स्वागतं व्याहरन्तु सर्वे दीनरक्षकाय पतितोद्धारकाय नंदपुत्राय।

सर्वे—स्वागतं ते दीनरक्षकाय पाण्डवप्रियाय वासुदेवाय।

दुर्योधनः—इतः आसनम्। अत्र उपविशतु कृष्णाप्रियः। ( कृष्णः उपविशति ) कुशलम् सर्वम् ? किंकारणम् अद्य भवदागमनं जातम् ?

पाण्डवाः मृताः इति श्रूयते। किं सत्यम्?। हन्त! दीना द्रौपदी कुत्र स्यात्?

कृष्णः—पाण्डवा जीवन्ति एव न मृताः। तैः एव अहम् अत्र प्रेषितः। शृणु रे दुर्योधन। कौरवाः पाण्डवाः च बन्धवः। तेषु कलहः अनुचितः। तस्मात् यच्छतु राज्यस्य अर्धभागं पाण्डवेभ्यः कौरवनाथः। अनेन न युद्धप्रसङ्गः सर्वे अपि यूयम् सुखेन जीवथ।

दुर्योधनः—कौरवनाथः! कः कौरवनाथः?

कृष्णः—धृतराष्ट्रः।

दुर्योधनः—धृतराष्ट्रः? सः नहि। अहं कौरवनाथः। पाण्डवेभ्यः अर्धराज्यदानम् अशक्यम्। तेभ्यः राज्यम् जितम् अस्माभिः। अत्र न वै उपकारः। सूच्यग्रे यावती मृत्तिका तिष्ठेत् तावती मृत्तिका अपि तेभ्यः दुर्लभा। किं पुनः राज्यार्धम्? किम् एतत् योग्यं वा अयोग्यम्?। वदन्तु सर्वे।

सर्वे—योग्यम् एव। दुर्योधन योग्यम् एव।

कृष्णः—शठाः धूर्ताः, वञ्चकाः पाण्डवानां राज्यं कपटेन हृतं युष्माभिः। एषः अधर्मः।

शकुनिः—(विहस्य) गोपालपुत्रः धर्मं शिक्षयति! धेनुरक्षणे एव अयम् योग्यः। न धर्माधर्मविषये।

दुःशासनः—मूढः असौ। दण्डनीयः।

कृष्णः—पाण्डवानां पक्षः न्याय्यः। दुर्योधन, त्वया एव भीमस्य अन्ने विषं मिश्रितम्। त्वया एव लाक्षागृहे पाण्डवानां मरणं कल्पितम्। त्वया एव बद्धः भीमः जले प्रक्षिप्तः। त्वम् पापी क्रूरः नरपशुः।

दुःशासनः—किं प्रलपति असौ दास्याः पुत्रः?। कौरवनाथ! अनुज्ञां देहि। अत्र एव अस्य शरीरं शतधा विदारयामि।

दुर्योधनः—तत् अहम् एव करोमि।

( शस्त्रं गृहीत्वा कृष्णं प्रति धावति )

विदुरः—वत्स दुर्योधन ! न एतत् योग्यम् । अत्र यदुनन्दनः दूतकार्याय आगतः । ततः दूतस्य वधः अनुचितः ।

कृष्णः—विदुर ! यत् इच्छति तत् कुर्वन्तु एते । अद्य वाब्दशतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः ।

दुर्योधनः—विदुर ! भवतः उपदेशः अस्थाने एव । दूतः मां निर्भर्त्सयते ! !

( खड्गं गृहीत्वा प्रहर्तुं धावति । किन्तु खड्गः अधः पतति । सहसा उत्थाय पुनः च खड्गं गृहीत्वा धावति । पुनः खड्गः पतति । पुनरपि उत्थाय )
मान्त्रिकः असौ ।

विदुरः—दूतकार्ये आगतस्य वधः न कार्यः । निन्द्यम् एतत् ।

दुर्योधनः—शठः अयम् । बन्धीत एनं कारागारे च क्षिपत ।

( सर्वे कृष्णं बद्धुं यतन्ते किन्तु ते न शक्नुवन्ति । कृष्णः विहसति । )

कृष्णः—बाढम् । गच्छामि अहम् । अस्य प्रसंगस्य अन्तः भीषणः भवेत् । ( गच्छति )

सर्वे—वयमपि युद्धाय बद्धपरिकराः भवामः ।

दुर्योधनः—गच्छन्तु सर्वे । श्वःप्रभृति युद्धम्, युद्धम्, युद्धम् !

( सर्वे गच्छन्ति )

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—

१ किं कारणम् कृष्णः दुर्योधननगरीम् अगच्छत् ?

२ पाण्डवानां राज्यं कथं हृतं कौरवैः ?

३ दुर्योधनेन पाण्डवानां के के अपराधाः कृताः ?

४ कस्य वधः न कार्यः ?

५ किम् अवदत् शकुनिः ?

२ रिकाम्या जागा भराः—

**पाण्डवानां दूतकार्याय कृष्णः —— अगच्छत् । कृष्णः अवदत् कौरवपाण्डवाः —— सन्ति । तेषु —— न योग्यः । तस्मात् तेभ्यः —— यच्छतु —— इति । दुर्योधनः —— यावती मृत्तिका वर्तेत —— अपि अहम् पाण्डवेभ्यः न —— । इति ।**

३ जाड टंकांतील शब्दांचीं योग्य रूपें सिद्ध करून क्रियापदाचें योग्य रूप तयार करून ठेवाः—

१ **दुर्योधनः भीम अन्ने विषम्** ( क्षिप् ६ उ )

२ **दुर्योधनः** ( लाक्षागृह न. ) **पाण्डवानां मरणम्** ( अप+ईक्ष् १ आ. )

४ जाड टंकांतील पदें काढून त्याच अर्थाचीं दुसरीं पदें घालाः—

१ **कृष्णस्य वधः अनुचितः** । २ **कृष्णः कौरवैः सह कलहम् नैच्छत्**

५ सन्धि करून हा पाठ घरांतून लिहून आणा.

६ हाच पाठ थोडक्यांत गोष्टीरूपानें संस्कृत भाषेंत लिहा.

## टीपा

१ संस्कृत नाटकांतून येणारे खालील शब्द नीट लक्षांत ठेवा :—**ततः प्रविश्य; जयतु जयतु, हन्त, आयुष्मान् भव, स्वागतं ते, इतः आसनम्** इत्यादि.

२ **द्रष्टुकामः–द्रष्टुम् + काम** – भेटण्याची इच्छा असलेला.

**गन्तुकामः–गन्तुम् + काम** – जाण्याची इच्छा असलेला.

**कर्तुकामः–कर्तुम् + काम** – करण्याची इच्छा असलेला.

तसेंच—**हन्तुकाम; वक्तुकाम; हर्तुकाम**; इत्यादि.

३ **स्वागतं कृष्णाय**—ज्याचें स्वागत करावयाचें तो शब्द चतुर्थी विभक्तींत ठेवावा.

**यावती–तावती; यावत्–तावत्** चें स्त्रीलिंगीरूप; जितकें—तितकें.

**किं पुनः** ( २ )—जास्त काय सांगावें ?

**अस्थाने**—अनाठायीं; अयोग्य.

## व्याकरण

१ सन्धिविच्छेद करा :—राजेन्द्र; राज्यार्धम्; धर्माधर्म.

२ सन्धि करा :—सहसा + उत्थाय; काल + उचित; समुद्र + उर्मि; पाताल + ईश्वर; वासुदेवः + आगतः ।

---

# त्रयस्त्रिंशत्तमः पाठः

## आज्ञार्थ

( १, ४, ६ व १० वा गण )

### प्रत्यय

| | परस्मैपद | | | आत्मनेपद | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक व. | द्वि.व. | बहु व. | एक व. | द्वि.व. | बहु व. |
| प्र. पु. | आनि | आव | आम | ऐ | आवहै | आमहै |
| द्वि. पु. | ० | तम् | त | स्व | इथाम् | ध्वम् |
| तृ. पु. | तु | ताम् | अन्तु | ताम् | इताम् | अन्ताम् |

| | धातु—नम् | | प्रथमगण | (अ) धातु—लभ् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | नमानि | नमाव | नमाम | लभै | लभावहै | लभामहै |
| द्वि. पु. | नम | नमतम् | नमत | लभस्व | लभेथाम् | लभध्वम् |
| तृ. पु. | नमतु | नमताम् | नमन्तु | लभताम् | लभेताम् | लभन्ताम् |

| | धातु—पुष् चतुर्थगण | | | (य) धातु—युध् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | पुष्याणि | पुष्याव | पुष्याम | युध्यै | युध्यावहै | युध्यामहै |
| द्वि. पु. | पुष्य | पुष्यतम् | पुष्यत | युध्यस्व | युध्येथाम् | युध्यध्वम् |
| तृ. पु. | पुष्यतु | पुष्यताम् | पुष्यन्तु | युध्यताम् | युध्येताम् | युध्यन्ताम् |

| | धातु—विश् षष्ठगण | | | (अ) धातु—क्षिप् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | विशानि | विशाव | विशाम | क्षिपै | क्षिपावहै | क्षिपामहै |
| द्वि. पु. | विश | विशतम् | विशत | क्षिपस्व | क्षिपेथाम् | क्षिपध्वम् |
| तृ. पु. | विशतु | विशताम् | विशन्तु | क्षिपताम् | क्षिपेताम् | क्षिपन्ताम् |

| धातु—**कथ्** दशमगणः | | | (अय) धातु—**कथ्** | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. **कथयानि** | **कथयाव** | **कथयाम** | **कथयै** | **कथयावहै** | **कथयामहै** |
| द्वि. पु. **कथय** | **कथयतम्** | **कथयत** | **कथयस्व** | **कथयेथाम्** | **कथयध्वम्** |
| तृ. पुः **कथयतु** | **कथयताम्** | **कथयन्तु** | **कथयताम्** | **कथयेताम्** | **कथयन्ताम्** |

## अभ्यास

१ खालील धातूंचीं आज्ञार्थाचीं रूपें लिहा :—

**गम्** ( गच्छ् १ प. ); **भू**—**भव्** ( १ प. ); **इष्** ( इच्छ् १ उ. )
**प्र + पद्** ( ४ आ. ); **मृग्** ( मार्ग् १० उ. )

२ खालील श्लोक पाठ करा. या श्लोकांत आज्ञार्थाचीं कोणकोणतीं रूपें आहेत तें ओळखा :—

**निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु ।**
**लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ॥**
**अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा ।**
**न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥**

## व्याकरण

आज्ञार्थाचीं रूपें कशीं तयार होतात ?

| उपसर्ग ( असल्यास ) + | धातु + | विकरण | + प्रत्यय = | रूप |
|---|---|---|---|---|
| | **गम्-गच्छ्** | **अ** | **तु** | **गच्छतु** |
| | ,, | ,, | **अन्तु** | **गच्छन्तु** |
| | **युध्** | **य** | **ताम्** | **युध्यताम्** |
| | **प्रथ्** | **अय** | **तु** | **प्रथयतु** |
| | ,, | ,, | **अन्ताम्** | **प्रथयन्ताम्** |
| **अप** | **नी-नय्** | **अ** | **तु** | **अपनयतु** |

**टीप**—**अन्तु** व **अन्ताम्** प्रत्ययांपूर्वी विकरण **अ** ( १ व ६ वा गण ) आणि **य्** ( ४ था गण ) तील **अ** चा लोप होतो. ( **य** तील बाकी **य्** राहतें ).

हाच नियम **अन्ति, अन्ते, अन्** व **अन्त**च्या वेळींही लागतो हें विद्यार्थ्यांनीं पाहिलेंच असेल.

# चतुस्त्रिंशत्तमः पाठः



( चित्रकूटे रामस्य पर्णकुटिकायाः प्राङ्गणम् )

लक्ष्मणः—( निपुणं निरीक्ष्य ) राम केचित् अश्वारोहाः आगच्छन्ति अत्र । त्वरया एव आगच्छन्ति । समीपे आगताः । आश्चर्यम् ।

रामः—किम् आश्चर्यम् ?

लक्ष्मणः—भरतः एव सैनिकैः सह अस्मद्विनाशाय आगच्छति । क्रूरायाः जनन्याः क्रूरः एव पुत्रः । अस्माकं वने वासः अपि तस्मै न रोचते । अयं न बन्धुः । शत्रुः एव सः । रे रे रघुकुलकलङ्क नीच भ्रातृब्रुव ! अनार्यैः आचरितं त्वम् आचरसि । कष्टम् । आगच्छ तावत् । शरसन्धानं कृत्वा तव मस्तकं छिनद्मि । ( धनुः गृहीत्वा शरसन्धानं करोति )

रामः—वत्स लक्ष्मण मा मा एवम् । अस्मात् साहसात् विरम । भरतः अनुरक्तः सुशीलः वर्तते । सः कदापि युद्धाय न आगच्छेत् । कारणान्तरेण एव अत्र तस्य आगमनम् इति अहम् मन्ये ।

लक्ष्मणः—किम् अन्यत् कारणं भवेत् ? अत्र अस्माकं न केऽपि सहायाः । तस्मात् अस्मान् मारयितुम् एव सः आगच्छति । अस्मिन् न खलु संशयः ।

सीता—एवम् एव स्यात् । दण्डय तं भ्रातृहतकम् ।

रामः—सीते । अविचार्य एव यः वर्तते सः दुःखितः भवति । अतः लक्ष्मण शान्तः भव । सर्वेषां सैनिकानाम् अपि विनाशाय तव बाणः अलम् । ततः का मात्रा भयस्य ? आगच्छन्तु ते सर्वे । आगच्छतु, भरतः ।

लक्ष्मणः—यथा आज्ञापयति रामः ।

( लक्ष्मणः सशंकः तिष्ठति )

( भरतः सैनिकैः सह प्रविशति रामस्य च चरणयोः पतति )

भरतः—पतितः अस्मि । पतितः अस्मि । पावय माम् ।

रामः—पश्य । लक्ष्मण । पश्य ।

लक्ष्मणः—क्षमस्व माम् ।

रामः—वत्स उत्तिष्ठ । किमर्थम् आगमनम् ? कथय । मा रुदिहि ।

भरतः—त्वया विना राम, अयोध्या शून्या दृश्यते । सर्वे जनाः विषण्णाः । रामं विना अहम् क्षणम् अपि जीवितुम् असमर्थः । तस्मात् अयोध्याम् प्रतिष्ठताम् रामः ।

रामः—वत्स भरत । जनकाज्ञापालनं पुत्रस्य धर्मः । गच्छ । चतुर्दशसंवत्सरान्ते अहम् पुनर् आगमिष्यामि । तावत् त्वमेव प्रजाः पालय ।

भरतः—नहि नहि राम । अहं तव सेवकः । तव पादुके सिंहासने प्रस्थाप्य प्रतिनिधिः इव राज्यभारं वहामि । यच्छतु पादुके ।

रामः—साधु वत्स ! ( पादुके यच्छति ) सत्वरं गच्छ । न चेत् अराजके राज्ये अनर्थः भवेत् । सर्वेभ्यः कुशलं वद ।

भरतः—यथा आदिशति रामः । ( गच्छति )

रामः—लक्ष्मण वयम् अपि कंदमूलानयनाय गच्छामः ।

( सर्वे गच्छन्ति )

## अभ्यास

१. प्रश्नाः—

१ रामे भरतस्य अनुरक्तिः कस्मात् ज्ञायते ?

२ भरतेन सह के आगताः ?

३ किमर्थम् लक्ष्मणेन शरसन्धानं कृतम् ?

४ लक्ष्मणस्य भरतसम्बन्धिचिन्ता रामेण कथं निरस्ता ?

५ रामः कैः सह चित्रकूटे निवसति ?

२ सन्धि करून हा पाठ घरांतून लिहून आणा.

३ रावणानें भिक्षुवेषानें सीताहरण केलें तो प्रसङ्ग संस्कृतांत थोडक्यांत संवाद-रुपानें अथवा गोष्टीरूपानें लिहा.

४ या पाठांतील सर्व क्रियापदें एकत्र करा व तीं ओळखा.

५ लक्षांत ठेवण्याजोग्या ओळी या पाठांतून निवडून काढा.

## टीपा

**निपुणं निरीक्ष्य**—नीट न्याहाळून.

**तस्मै न रोचते**—अशी रचना पूर्वी कोठें कोठें वाचलीत तें दाखवा.

**भ्रातृब्रुवः** – दुष्ट अथवा नीच भाऊ. दुष्ट मित्र – **मित्रब्रुव**. तसेंच **भ्रातृहतक**. अर्थ तोच.

**साहसात् विरम**—हें साहस करूं नको.

**वि + रम्** – थांबणें, न करणें; जी गोष्ट न करणें ती गोष्ट दाखविणारा शब्द पञ्चमी विभक्तींत योजावा.

**यथा आज्ञापयति रामः** – जशी रामाची इच्छा.

**न चेत्** – नाहींतर.

**कुशलं सर्वेभ्यः**—ज्यांना कुशल सांगावयाचें तो शब्द चतुर्थीत ठेवावा.

**रामाय कुशलम् वद** इत्यादि.

## व्याकरण

### क्रमवाचकें

( प्रथमा एकवचनाचीं रूपें दिलीं आहेत. )

| संख्यावाचक | | | क्रमवाचक | | | मराठी क्रमवाचक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पु. | स्त्री. | नपु. | पु. | स्त्री. | न. | पु. | स्त्री. | न. |
| एकः | एका | एकम् | प्रथमः | प्रथमा | प्रथमम् | पहिला | पहिली | पहिलें |
| द्वौ | द्वे | द्वे | द्वितीयः | द्वितीया | द्वितीयम् | दुसरा | री | रें |
| त्रयः | तिस्रः | त्रीणि | तृतीयः | ०या | ०यम् | तिसरा | री | रें |
| चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि | चतुर्थः | ०र्थी | ०र्थम् | चौथा | थी | थें |
| पञ्च | पञ्च | पञ्च | पञ्चमः | ०मी | मम् | पांचवा | वी | वें |
| षट् | षट् | षट् | षष्ठः | ०ष्ठी | ०ष्ठम् | साहावा | वी | वें |
| सप्त | सप्त | सप्त | सप्तमः | ०मी | ०मम् | सातवा | वी | वें |
| अष्ट<br>अष्टौ | अष्ट<br>अष्टौ | अष्ट<br>अष्टौ | अष्टमः | ०मी | ०मम् | आठवा | वी | वें |
| नव | नव | नव | नवमः | ०मी | ०मम् | नववा | वी | वें |
| दश | दश | दश | दशमः | ०मी | ०मम् | दहावा | वी | वें |
| एकादश | एकादश | एकादश | एकादशः | ०शी | ०शम् | अकरावा | वी | वें |
| द्वादश | द्वादश | द्वादश | द्वादशः | ०शी | ०शम् | बारावा | वी | वें |
| त्रयोदश | त्रयोदश | त्रयोदश | त्रयोदशः | ०शी | ०शम् | तेरावा | वी | वें |
| चतुर्दश | चतुर्दश | चतुर्दश | चतुर्दशः | ०शी | ०शम् | चौदावा | वी | वें |
| पञ्चदश | पञ्चदश | पञ्चदश | पञ्चदशः | ०शी | ०शम् | पंधरावा | वी | वें |
| षोडश | षोडश | षोडश | षोडशः | ०शी | ०शम् | सोळावा | वी | वें |
| सप्तदश | सप्तदश | सप्तदश | सप्तदशः | ०शी | ०शम् | सतरावा | वी | वें |
| अष्टादश | अष्टादश | अष्टादश | अष्टादशः | ०शी | ०शम् | अठरावा | वी | वें |
| नवदश | नवदश | नवदश | नवदशः | ०शी | ०शम् | एकोणिसावा | वी | वें |
| एकोन-विंशतिः | एकोन-विंशतिः | एकोन-विंशतिः | एकोनविंशः | ०शी | ०शम् | | | |
| विंशतिः | विंशतिः | विंशतिः | विंशतितमः | ०तमी | ०तम् | विसावा | वी | वें |

# पञ्चत्रिंशत्तमः पाठः



मारुतिः—सीतायाः अन्वेषणायाहं लङ्कामागतोऽस्मि । किन्तु सा कुत्रापि न दृश्यते । किं रावणस्यान्तःपुरं दहेयम् । उत राक्षसानां गृहाणि नाशयेयम् । उत रावणमेव हन्याम् । किं करोमि ? किं रामस्य समीपे गत्वा सर्वं वृत्तान्तं कथयेयम् । किन्त्वेष कलङ्कः । अपरं च । रामः सीताया विना न जीवेत् । अन्नं वर्जयित्वा जीवितं त्यजेत् । तदनु लक्ष्मणोऽपि तदेव कुर्यात् । ततः सर्वत्र विनाश एव सम्भवेत् । तस्मान्नायं मार्गः । अथवा सागरस्य तीरे चितिं कृत्वाऽऽत्मानं दहेयम् । अथवा प्रायोपवेशनं कुर्वीय । तेन मे मोक्षप्राप्तिः । अथवा किं जल आत्मानं क्षिपेयम् । न वै मार्गा एते । मरणमनुचितमेव । यदि जीवेयं सीताया अन्वेषणं भवेत् । मयि मृते कोऽन्यो राघवस्य प्रियं कार्यं समाचरेत् ? ( किंचिद् विमृश्य ) । तस्मात् तथा किंचित् करोमि यथा दशाननः कुपितो भवेत् । युद्धाय चागच्छेत् । प्रमदावनस्य तावदुच्छेदं कृत्वा रावणं क्रुद्धं करोमि । अतो रावणः समरायागच्छेत् । वधं च प्राप्नुयात् । अत्र विलम्बो न कार्यः ।

( गच्छति )

## अभ्यास

१ प्रश्ना :—१ मारुतिः किमर्थम् आत्मनः मरणं चिन्तयति ?
२ तेन संकल्पान्तरं कस्मात्कारणात् कृतम् ?
३ रावणं क्रुद्धं कर्तुम् कः मार्गः चिन्तितः ?

२ सन्धि सोडवा :—अन्वेषणायाहम् । कृत्वाऽऽत्मानम् । जल आत्मानम् । तावदुच्छेदम् । विलम्बो न । किन्त्वेषः ।

३ खालील शब्द सर्व विभक्तींतून चालवा—मारुति (पु.), चिति (स्त्री.), सीता (स्त्री ).

४ या पाठांतील सर्व विशेषणें, क्रियापदें व अव्ययें शोधून काढा.

५ खालीं लिहिलेल्या विभक्तींत योजलेले तीन तीन शब्द द्या :—षष्ठी एकवचन, द्वितीया एकवचन.

## टीपा

अपरं च—शिवाय.

मयि मृते—मी मेल्यास. सति सप्तमी.

प्राप्नुयात्—मिळवेल; प्र+आप् ( ५ वा गण ) + नु + यात् [ विध्यर्थ तृ. पु. एक व. ]

## व्याकरण

### ( सन्धि ) व्यञ्जनसन्धि

तावत् + न = तावन्न.

रामात् + नास्ति = रामान्नास्ति.

नियम २०—( १ ) त्, थ्, द्, ध् पुढें न् आल्यास त्यांचें न् होतें. ( २ ) प्, फ्, ब्, भ्, पुढें म् आल्यास त्यांचें म् होतें. अप् + मय=अम्मय. ( ३ ) त्, थ्, द्, पुढें म् आल्यास त्यांचें न् होतें. तत् + मय = तन्मय.

# षट्त्रिंशत्तमः पाठः

## विध्यर्थ

| | परस्मैपद | | | आत्मनेपद | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक. व. | द्वि.व. | बहु. व. | एक. व. | द्वि. व. | बहु. व. |
| प्र. पु. | ईयम् | ईव | ईम | ईय | ईवहि | ईमहि |
| द्वि. पु. | ईस् | ईतम् | ईत | ईथाः | ईयाथाम् | ईध्वम् |
| तृ. पु. | ईत् | ईताम् | ईयुः | ईत | ईयाताम् | ईरन् |

नम् प्रथमगण ( अ ) लभ्

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | नमेयम् | नमेव | नमेम | लभेय | लभेवहि | लभेमहि |
| द्वि. पु. | नमेः | नमेतम् | नमेत | लभेथाः | लभेयाथाम् | लभेध्वम् |
| तृ. पु. | नमेत् | नमेताम् | नमेयुः | लभेत | लभेयाताम् | लभेरन् |

चतुर्थगण ( य )

| | पुष् | | | युध् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | पुष्येयम् | पुष्येव | पुष्येम | युध्येय | युध्येवहि | युध्येमहि |
| द्वि. पु. | पुष्येः | पुष्येतम् | पुष्येत | युध्येथाः | युध्येयाथाम् | युध्येध्वम् |
| तृ. पु. | पुष्येत् | पुष्येताम् | पुष्येयुः | युध्येत | युध्येयाताम् | युध्येरन् |

षष्ठगण ( अ )

| | विश् | | | क्षिप् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | विशेयम् | विशेव | विशेम | क्षिपेय | क्षिपेवहि | क्षिपेमहि |
| द्वि. पु. | विशेः | विशेतम् | विशेत | क्षिपेथाः | क्षिपेयाथाम् | क्षिपेध्वम् |
| तृ. पु. | विशेत् | विशेताम् | विशेयुः | क्षिपेत | क्षिपेयाताम् | क्षिपेरन् |

दशमगण ( अय )

| | कथ् | | | कथ् | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्र. पु. | कथयेयम् | कथयेव | कथयेम | कथयेय | कथयेवहि | कथयेमहि |
| द्वि. पु. | कथयेः | कथयेतम् | कथयेत | कथयेथाः | कथयेयाथाम् | कथयेध्वम् |
| तृ. पु. | कथयेत् | कथयेताम् | कथयेयुः | कथयेत | कथयेयाताम् | कथयेरन् |

## अभ्यास

१ खालील धातूंचे विध्यर्थ लिहा :—

त्यज् ( १ प.); दह् ( १ प. ); सम्+आ+चर् ( १ प. );
प्र+पद् ( ४ आ. ); मुच् ( मुञ्च् ६ प. ); मृग् ( १० आ. )

२ प्रश्न १ मधील धातूंचे आज्ञार्थ व भूतकाळ द्या.

## व्याकरण

मुलांनो ! विध्यर्थांचीं रूपें तयार करणें फार सोपें आहे.

**मांडणीः—**

| उपसर्ग ( असल्यास ) + | धातु + | विकरण | प्रत्यय = | रूप |
|---|---|---|---|---|
| | नम् + | अ + | ईयम् | नमेयम् |
| | वद् + | अ + | ईस् ( ईः) | वदेः |
| | पुष् + | य + | ईयुः | पुष्येयुः |

तीन रूपें, तुम्हीं तयार करून जोडा.

---

# सप्तत्रिंशत्तमः पाठः

छात्रः प्रातःकाले शयनं त्यजेत्। मुखमार्जनस्नानादिविधीन् समाप्य व्यायामं कुर्यात्। व्यायामात् शरीरसौष्ठवं जायते। शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। अनन्तरं किंचिद् दुग्धपानमशनं वा कृत्वा स्वाध्यायं पठेत्। ततः भोजनमाहृत्य पाठशालां व्रजेत्। तत्र अवधानपूर्वकं पठनं कृत्वा संन्ध्याकाले गृहं निवर्तेत क्रीडार्थं च क्रीडाङ्गणं गच्छेत्। रात्रिमुखे गृहं प्रत्यागत्य भोजनं कृत्वा निद्रासुखमनुभवेत्।

छात्रा मधु मांसं गन्धं माल्यं रसांश्च वर्जयेयुः। तथा च येषां सेवनेन व्रतभङ्गो भवेत् तान् सर्वान् विषयांस्ते त्यजेयुः। सत्यं वदेयुः। धर्मं चरेयुः। छात्रा मातृदेवा भवेयुः। पितृदेवा भवेयुः।

आचार्यदेवा भवेयुः। अतिथिदेवा भवेयुः। गुरूणां यानि कर्माण्यनवद्यानि तानि ते सेवेरन् नेतराणि। वृद्धानां यानि सुचरितानि तान्येव तेऽनुकुर्युः। कार्याकार्यविचारप्रसङ्गे यथा श्रेष्ठा वर्तेरंस्तथा तेऽपि वर्तेरन्।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—छात्रैः के के नियमाः अनुसरणीयाः ?

२ व्रतनिष्ठस्य कस्यचित् छात्रस्य चरित्रं संस्कृतभाषायां लिखत.

## टीपा

समाप्य—आटोपून; आहृत्य—करून.

मातृदेवाः—माता आहे देव ज्यांना असे ( होवोत. )

अनवद्यानि—निष्कलंक.

## व्याकरण

( सन्धि ) व्यञ्जनसन्धि

रचना :—

| मागील वर्ण | पुढील वर्ण | परिणाम |
|---|---|---|
| रसान् ( न् ) | च | रसांश्च ( न् चा अनुस्वार व विसर्ग. ) |
| विषयान् ( न् ) | ते | विषयांस्ते ( न् चा अनुस्वार व विसर्ग ) |
| वर्तेरन् ( न् ) | तथा | वर्तेरंस्तथा ( ,, ,, ,, ) |

नियम २१—

( १ ) न् पुढें च् छ् आल्यास न् चा अनुस्वार व विसर्ग होतो. पुढें त्या विसर्गाचा श् होतो.

( २ ) न् पुढें त् थ् आल्यास न् चा अनुस्वार व विसर्ग होतो, व पुढें विसर्गाचा स् होतो.

( ३ ) न् पुढें ट् ठ् आल्यास न् चा अनुस्वार व विसर्ग होतो, व मग विसर्गाचा ष् होतो.

जसें:—अवदन् + टणत्कारा: = अवदंष्टणत्कारा: ।

---

# अष्टात्रिंशत्तमः पाठः

## कीदृशः गजः ?

आसन् पुराऽस्मिन्नगरे षडन्धाः ।
दृष्टुं गजं ते सकला अगच्छन् ॥
पृथक् पृथक् तैर्गजवर्णनं यत् ।
कृतं तदस्मिन् कथयामि काव्ये ॥ १ ॥

स्पृशन् विशालं द्विरदोदरं च ।
अन्धो वयस्यान् प्रथमोऽवदत्तान् ॥
ज्ञातं मयाऽद्य द्विरदस्य रूपम् ।
भित्तिर्यथा भाति गजस्तथैषः ॥ २ ॥

संस्पृश्य शुण्डामथ वारणस्य ।
अन्धो द्वितीयो मुदितोऽवदत्तान् ॥
अबोधमद्य द्विरदस्य रूपम् ।
गजो नु सर्पः खलु लम्बमानः ॥ ३ ॥

अन्धस्तृतीयः करिणस्तु पादम् ।
स्पृशन् विशालं मुदितोऽवदत्तान् ॥
गजो न सर्पो न च भित्तिरेव ।
स्तम्भो यथा भाति गजस्तथैषः ॥ ४ ॥

कर्णं विशालं ननु कुञ्जरस्य ।
धृत्वा तुरीयोऽवददेवमुच्चैः ॥
कथं नु सत्यं ! न तु रोचते मे ।
नागो मतो मे व्यजनस्वरूपः ॥ ५ ॥

लाङ्गूलं स्वकरे धृत्वा पञ्चमोऽन्धस्तदाऽवदत् ।
रज्जुरूपो गजः सत्यं नात्र शंकाऽपि वर्तते ॥ ६ ॥

रदं तीक्ष्णं करे धृत्वा षष्ठोऽन्धोऽवददेव तान् ।
शूलरूपो गजो मूढ ! रज्जुरूपः कथं भवेत् ॥ ७ ॥

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—

१ कति अन्धाः आसन् ?

२ पञ्चमः अन्धः किं अवदत् ? प्रथमः ? द्वितीयः ? तृतीयः ? चतुर्थः षष्ठः ?

३ केन गजस्य रूपं ज्ञातम् ?

२ गजवाचक शब्द एकत्र करा.

---

# एकोनचत्वारिंशत्तमः पाठः

## सुभाषितानि

### सज्जनाः

विकृतिं नैव गच्छन्ति सङ्गदोषेण साधवः ।
आवेष्टितं महासर्पैश्चन्दनं न विषायते ॥ १ ॥

श्लोकस्तु श्लोकतां याति यत्र तिष्ठन्ति साधवः ।
लकारो लुप्यते तत्र यत्र तिष्ठन्त्यसाधवः ॥ २ ॥

सुजनो न याति वैरं परहितनिरतो विनाशकालेऽपि ।
छेदेऽपि चन्दनतरुः सुरभयति मुखं कुठारस्य ॥ ३ ॥
अमृतं किरति हिमांशुर्विषमेव फणी समुद्गिरति ।
गुणमेव वक्ति साधुर्दोषमसाधुः प्रकाशयति ॥ ४ ॥
वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षिणो बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति ।
एवं कुलीना व्यसनाभिभूता न नीचकर्माणि समाचरन्ति ॥ ५ ॥

रत्नाकरः किं कुरुते स्वरत्नैर्विन्ध्याचलः किं करिभिः करोति।
श्रीखण्डखण्डैर्मलयाचलः किं परोपकाराय सतां विभूतयः ॥ ६ ॥

प्रथमवयसि पीतं तोयमल्पं स्मरन्तः
शिरसि निहितभारा–नालिकेरा नराणाम्।
ददति जलमनल्पास्वादमाजीवितान्तं
नहि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ॥ ७ ॥

## अभ्यास

१. श्लोक १–चन्दनाविषयीं काय सांगितलें आहे? कशाची तुलना चन्दनाशीं केली आहे?

श्लोक २–श्+लोक; श् + ल् + ओक. ल् चा लोप केल्यास शोक शब्द बनतो व श् चा लोप केल्यास लोक शब्द बनतो.

श्लोक ३–अर्थ लिहा. श्लोक ४–साधु व असाधु प्रत्येकीं काय काय बोलतात?

श्लोक ५–कसला दृष्टान्त कशासाठीं दिला आहे? श्लोक ६ व ७—भाषांतर करा.

---

# चत्वारिंशत्तमः पाठः

## संकीर्णानि सुभाषितानि

धनम्—यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतिमान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ॥ १ ॥
बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते। पिपासितैः काव्यरसो न पीयते॥
न च्छन्दसा केनचिदुद्धृतं कुलं। हिरण्यमेवार्जय निष्फला गुणाः ॥ २ ॥

उदारः—कर्णस्त्वचं शिबिर्मांसं, जीवं जीमूतवाहनः॥
ददौ दधीचिरस्थीनि, नास्त्यदेयं महात्मनाम् ॥ १ ॥
शतेषु जायते शूरः, सहस्रेषुच पण्डितः॥
वक्ता दशसहस्रेषु, दाता भवति वा न वा ॥ २ ॥

तृष्णा—यौवनं जरयाग्रस्तमारोग्यं व्याधिभिर्हतम् ॥
जीवितं मृत्युरभ्येति, तृष्णैका निरुपद्रवा ॥ १ ॥
आशाया ये दासास्ते दासाः सर्व लोकस्य ॥
आशा येषां दासी, तेषां दासायते लोकः ॥

सत्संगतिः—मलयाचलगन्धेन त्विन्धनं चंदनायते ॥
तथा सज्जन-सङ्गेन दुर्जनः सज्जनायते ॥ १ ॥
सत्संगाद्भवति हि साधुता खलानां,
साधूनां नहि खलसङ्गमात्खलत्वम् ॥
आमोदं कुसुमभवं मृदेव धत्ते,
मृद्गन्धं नहि कुसुमानि धारयन्ति ॥ २ ॥

असत्संगतिः—दुर्जनजनसंसर्गात्सज्जनपुरुषोऽत्र दोषमायाति ॥
रावणकृतापराधाज्जलधेरपि बन्धनं प्राप्तम् ॥ १ ॥
पात्रमपात्री कुरुते दहति गुणं स्नेहमाशु नाशयति ॥
अमले मलं नियच्छति दीपज्वालेव खलमैत्री ॥ २ ॥

---

# एकचत्वारिंशत्तमः पाठः

## ऋकारान्त नामें

### नेतृ—नेता—नेणारा

| | नेतृ (पु.) | | | नेतृ (न.) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक व. | द्विव. | बहु व. | एक व. | द्वि. व. | बहु व. |
| प्र. | नेता | नेतारौ | नेतारः | नेतृ | नेतृणी | नेतॄणि |
| द्वि. | नेतारम् | ,, | नेतॄन् | ,, | ,, | ,, |
| तृ. | नेत्रा | नेतृभ्याम् | नेतृभिः | नेतृणा | नेतृभ्याम् | नेतृभिः |
| च. | नेत्रे | ,, | नेतृभ्यः | नेतृणे | ,, | नेतृभ्यः |
| पं. | नेतुः | ,, | ,, | नेतृणः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | नेत्रोः | नेतॄणाम् | ,, | नेतृणोः | नेतॄणाम् |
| स. | नेतरि | ,, | नेतृषु | नेतरि | ,, | नेतृषु |
| सं. | नेतर् | नेतारो | नेतारः | नेतर् | नेतृणी | नेतॄणि |

**नेतृ + ई = नेत्री** ( स्त्री० )—नदीप्रमाणें ( नेणारी )

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | **नेत्री** | **नेत्र्यौ** | **नेत्र्यः** |
| द्वि. | **नेत्रीम्** | ,, | **नेत्रीः** |
| तृ. | **नेत्र्या** | **नेत्रीभ्याम्** | **नेत्रीभिः** |
| च. | **नेत्र्यै** | ,, | **नेत्रीभ्यः** |
| पं. | **नेत्र्याः** | ,, | ,, |
| ष. | ,, | **नेत्र्योः** | **नेत्रीणाम्** |
| स. | **नेत्र्याम्** | ,, | **नेत्रीषु** |
| सं. | **नेत्रि** | **नेत्र्यौ** | **नेत्र्यः** |

**गम्** ( धातु ) **गम् + तृ = गन्तृ**—जाणारा.
**हन्** ( धातु ) **हन् + तृ = हन्तृ**—ठार मारणारा.
**कृ** ( धातु ) **कृ + तृ = कर्तृ**—करणारा.
**पा** ( धातु ) **पा + तृ = पातृ**—पिणारा.
**हृ** ( धातु ) **हर् + तृ = हर्तृ**—हरण करणारा.

ऋकारान्त नामांना **ई** प्रत्यय जोडला म्हणजे स्त्रीलिंगी सामान्यरूप होतें. मग ते शब्द **नदी**प्रमाणें चालतात.

**गन्तृ + ई = गन्त्री; हन्तृ + ई = हन्त्री; कर्तृ–कर्त्री; पातृ–पात्री; हर्तृ–हर्त्री** इत्यादि.

कांहीं विशेष शब्द :—

**पितृ, नृ, सव्येष्टृ, भ्रातृ, यातृ, जामातृ, देवृ** ( ७ ) ( पुंलिंगी )
**मातृ, ननान्दृ, दुहितृ** ( ३ ) ( स्त्रीलिंगी ). एकूण शब्द १०.

वरील दहा ऋकारान्त शब्द **नेतृ** प्रमाणें पूर्णपणें चालत नाहींत. थोडा फेर आहे तो नीट पहा :—

**पितृ** ( पु. )–बाप

| | एक व. | द्विव. | बहु व. |
|---|---|---|---|
| प्र. | **पिता** | **पितरौ** | **पितरः** |
| द्वि. | **पितरम्** | ,, | **पितॄन्** |

| | एक व. | द्विव. | बहु व. |
|---|---|---|---|
| तृ. | पित्रा | पितृभ्याम् | पितृभिः |
| च. | पित्रे | ,, | पितृभ्यः |
| पं. | पितुः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | पित्रोः | पितॄणाम् |
| स. | पितरि | ,, | पितृषु |
| सं. | पितर् | पितरौ | पितरः |

( नेतृ व पितृ मध्यें फेर कोठें आहे सांगा. )

सव्येष्टृ, भ्रातृ वगैरे ७ पुल्लिंगी नामें पितृ प्रमाणें चालतात.

**मातृ (स्त्री.)–माता.**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्र. | माता | मातरौ | मातरः |
| द्वि. | मातरम् | ,, | मातॄः |
| तृ. | मात्रा | मातृभ्याम् | मातृभिः |
| च. | मात्रे | ,, | मातृभ्यः |
| पं. | मातुः | ,, | ,, |
| ष. | ,, | मात्रोः | मातॄणाम् |
| स. | मातरि | ,, | मातृषु |
| सं. | मातर् | मातरौ | मातरः |

ननान्दृ व दुहितृ, शब्द मातृ प्रमाणें चालतात.

नृ = मनुष्य, हा शब्द पितृ प्रमाणें चालतो. फक्त षष्ठी बहुवचनांत याचीं दोन रूपें होतात. नृणाम् व नॄणाम्. हें लक्षांत ठेवा.

---

# द्विचत्वारिंशत्तमः ( द्वाचत्वारिंशत्तमः ) पाठः

## जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

आसीद्दण्डकारण्येऽतीव विस्तीर्णमरण्यम् । तत्र बहवस्तरवः प्रफुल्लाः फलिताश्चासन् । अवर्धयन्त च वनशोभाम् ।

तस्मिन्वन एकदा कश्चिद् भूपालो मृगयार्थं गतः । यत्र कुत्रापि विचरन् स मध्याह्नसमये विश्रामहेतोस्तरुखण्डमागतः । तत्र यदा

स ऊर्ध्वमपश्यत्तदा कश्चिज्जीर्णदेहः शुक एकस्य शुष्कस्य वृक्षस्योपरि तेन दृष्टः। राजाऽवदत्। रे मूढ शुक! अत्र सन्ति बहवः प्रफुल्लाः वृक्षाः। तत्र सन्ति पक्वानि नानाविधानि फलानि। तत्रागत्वा कस्मादत्र मूढ इव वससीति। शुकोऽब्रवीत्। भो राजन्! किमहं मूढः। अद्यायं वृक्षः शुष्को दृश्यते। अयमपि रम्यो हरित आसीत्। अशनिपातेन अस्मिन् शुष्के जाते तरौ सर्वे संपत्काले निकटवर्तिनो विहगा दूरं गताः। अत्रैव मया जन्म लब्धम्। अस्य शाखासु मया क्रीडितम्। अयं वृक्षो मे जन्मभूमिः। अद्य दुर्दैववशादीदृशीमवस्थां गतो मे वृक्षः। वरं मरणं न पुनरस्य प्रियतरोस्त्याग इति। शुकवचनेन प्रसन्नचेता राजाऽवदत्। धन्योऽसि रे शुक। स्वस्थानप्रेम्णा जनानप्यातिशेषे। अहं साक्षाद् राजरूपधारीन्द्रः। प्रीतोऽस्मि तव निश्चयेन। यद् यद् वाञ्छसि धनधान्यादिकं तत्तदहं दास्यामि तुभ्यम्। शुकः प्रत्यवदत्। किं मे धनेन!। एतं मम वृक्षं पूर्ववत् सुफलितं करोतु भवानित्येव प्रार्थनेति। 'तथास्तु' इतीन्द्रोऽवदत्। वृक्षश्च पुनः पूर्ववज्जातः।

---

# त्रिचत्वारिंशत्तमः (त्रयश्चत्वारिंशत्तमः) पाठः

## कृष्णजन्म

मगधराजस्य जरासन्धस्याश्रयेन प्रलम्बो बकश्चाणूरस्तृणावर्तो महाशन इत्यादिदैत्यानां साहाय्यं गृहीत्वा कंसो यदूनां कन्दनमकरोत्। यदवो मथुरां त्यक्त्वा पीडिताः कुरून् पाञ्चालान् केकयान् शाल्वान् विदर्भानन्यान्देशान् प्राविशन्।

अथ काले प्राप्ते देवकी गर्भमष्टममधारयत्। तदा वसुदेवो देवकी च बन्दिगृहे निगृहीतावास्ताम्। यदा भगवतः कृष्णस्य जन्मकालः प्राप्तस्तदा सर्वा दिशः प्रसन्ना अभवन्। नद्यः प्रसन्नसलिलाः। ह्रदेषु कमलान्यशोभन्त। वनराजयो विहगानां संनादैर्भृता अभवन्। पुण्यगन्धो वायुः शुचिः सुखमवहत्। जलधरा अपि मन्दं

मन्दमगर्जन्नवर्षंश्च। श्रावणमासस्य कृष्णपक्षेऽष्टम्यां तिथौ मध्यरात्रे साधूनां परित्राणाय दुर्जनानां च विनाशाय भगवान् विष्णुर्मानवरूपेण जातः। तदा सूतिकागृहं सुप्रकाशितमभवत्।

कंसाद् भीतो वसुदेवो विष्णुना प्रेरितस्तं मुकुन्दं गृहीत्वा यदा व्रजं गन्तुं प्रातिष्ठत तदा सर्वे द्वाःस्था जडा इव मत्ता इव स्तब्धा अभवन्। सर्वाणि पिहितानि दुरत्ययानि च कपाटानि स्वयमेवोद्घाटितानि। पर्जन्यो मन्दं मन्दमवर्षत्। शेषः फणैर्वारि निवारयन्नन्वगच्छत्। गम्भीरतोयाऽपि यमुना तस्मै मार्गमदात्।

शौरिर्नन्दव्रजमुपेत्य तत्र तान् गोपान् प्रसुप्तानुपलभ्य तं बालकं यशोदाशयने निधाय तस्या यशोदायाः सुतामुपादाय वसुदेवः पुनर्गृहमगच्छत्। देवक्याश्च शयने तां दारिकां न्यस्य चरणयोर्लोहं प्रतिमुच्य पूर्ववदावृतोऽतिष्ठत्।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—

१ वसुदेवः कृष्णं कुत्र अनयत्? कस्मात् कारणात्?

२ वसुदेवः किम् आनयत्?

३ कृष्णजन्मकाले नद्यः कीदृश्यः अभवन्? जलधराः किम् अकुर्वन्?

४ द्वारपालैः वसुदेवः कथं न रुद्धः?

२ रामावतारः कस्य विनाशाय अभवत्? तदा दानवैः किम् कृतम्?

३ रामजन्मवृत्तान्तं गीर्वाणभाषायां लिखत.

४ सन्धिविच्छेद करा:—निगृहीतावास्ताम्; प्राप्तस्तदा; कंसाद्भीतः.

## टीपा

प्राविशन्—प्र+विश्—प्रवेश करते झाले.

कुरून्, पाञ्चालान्, केकयान्—देशवाचक शब्द बहुवचनांत येतात.

**कुरु**—कुरु नांवाच्या लोकांचें नांव.

**पाञ्चाल**—पाञ्चाल नांवाच्या लोकांचें नांव इत्यादि.

**न्यस्य**—( नि + अस् + य )=ठेवून.

**प्रतिमुच्य**—प्रति + मुच् + य = घालून.

## व्याकरण

### व्यञ्जनसन्धि

**निवारयन् + अन्वगच्छत् = निवारयन्नन्वगच्छत्.**

**रचना :—**

| मागील वर्ण | + पुढील स्वर | = परिणाम |
|---|---|---|
| **निवारयन्** ( न् ) | **+ अ** (अन्वगच्छन्) | **निवारयन्नन्वगच्छत्।** न्‌चें द्वित्व होतें |
| **गच्छन्** ( न् ) | **+ आ** ( आसीत् ) | **गच्छन्नासीत्** |
| **अवसन्** ( न् ) | **+ इ** ( इति ) | **अवसन्निति** |

**नियम २२—न्** पूर्वी ह्रस्व स्वर व पुढें कोणताही स्वर आल्यास **न्** चें द्वित्व होतें.

अर्थात् **न्** च्या पूर्वी दीर्घ स्वर आल्यास कांहीं फेर होत नाहीं.

**रामान् + इति = रामानिति.** कारण **न्** पूर्वी **आ** स्वर आहे. **आ** स्वर दीर्घ आहे.

# चतुश्चत्वारिंशत्तमः पाठः

**एकदा राजा परीक्षिदभिमन्युतनयो मृगयां विचरितुं वनमगच्छत्। बहून् मृगानन्वगच्छत् तथापि मृगयामलब्ध्वा श्रान्तः क्षुधितो भृशं च तृषाकुलः स नृपतिः कंचिज्जलाशयमाचक्षाणः कस्यचिन्मुनेराश्रमपदमागच्छत् । तत्र स शमीकं नाम मुनिं मीलितलोचनं शान्तमासीनं समाधिस्थमपश्यत् । तस्य मुनेर्जटाः विप्रकीर्णा**

आसन्। परीक्षित् तं मुनिमुदकमयाचत। किन्तु न कोऽपि तस्मायासनमप्ययच्छत्। कुतः पुनरुदकम्?। तस्मादात्मानमवज्ञातं मन्यमानः स भूपतिर्भृशमक्रुध्यत्। तस्मादाश्रमाद् विनिर्गच्छन् स तस्य ब्रह्मर्षेरंसे मृतमुरगं धनुष्कोट्या निधाय नगरीमगच्छत्।

तस्य मुनेः पुत्रः समीप एव बालैः सह विहरन्नासीत्। भूपतेस्तदनुचितं कृत्यं दृष्ट्वा स कुपितोऽभवत्। वाग्वज्रं च व्यसृजद् "हे राजन् यतस्त्वया मृतसर्पेण मम पिताऽपमानितस्ततोऽद्यप्रभृति सप्तमे दिने तक्षको नागः कुलाङ्गारं त्वां दंक्ष्यतीति"।

अत्र महीपतिरात्मकृतं गर्ह्यं कर्म विचिन्तयन्नवदत्। "अहो! नीचं कर्म कृतवानहम्। स ऋषिः समाधिस्थ आसीत्। मम तत्र गमनमपि तेन नावलोकितम्। तदस्यांसे मया सर्पन्यासोऽनुचित



एव। घोरपातकमकरवम्। इत्थं विचिन्तयन् स तस्य मुनिपुत्रस्य शापवृत्तान्तमशृणोत्। ततो नगरीं त्यक्त्वा गङ्गायास्तटाके प्रायोपवेशनमारभत। तत्र भगवता शुकेन भागवतं श्रावितम्। सप्तमे दिने फलकीटरूपस्तक्षकस्तमदशत्।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः—**१ परीक्षिता कः अपराधः कृतः ?**
**२ केन राजा दण्डितः ?**
**३ राजा वदति ' घोरपातकमकरवम् '–किं तत् पातकम् ?**
**४ मुनिः कस्याम् अवस्थायां दृष्टः ?**

२ सन्धिविच्छेद करा:—**कंचिज्जलाशयम्; ब्रह्मर्षेरंसे; समीप एव; विहरन्नासीत्; महीपतिरात्मकृतम्; विचिन्तयन्नवदत्;**

३ क्रियापदें ओळखा.

## टीपा

**परीक्षित्**—अभिमन्युपुत्र. हा शब्द व्यञ्जनान्त आहे. शेवटीं त् व्यञ्जन आहे.

**धनुष्कोट्या**—धनुष्याच्या काठीनें.

**दंक्ष्यति**—**दंश्** ( १ प. ) चें भविष्यकाळाचें रूप.

**अदशत्**—**दंश्** ( १ प. ) ( वर्तमान, भूत, आज्ञार्थ व विध्यर्थ इतक्या रूपांतून अनुस्वाराचा लोप होतो. )

---

# पञ्चचत्वारिंशत्तमः पाठः

## कर्मणिप्रयोग

मुलांनो, पृष्ठ ९७ वर दिलेल्या तक्त्यावरून तुमच्या लक्षांत येईल कीं मराठी व संस्कृत यांच्या प्रयोगांत फारसा फरक नाहीं. यासाठीं कर्तरिप्रयोगाचा कर्मणिप्रयोग करतांना खालील गोष्टी लक्षांत ठेवा:—

**१ कर्तरिप्रयोगांतला कर्ता कर्मणिप्रयोगांत तृतीया विभक्तींत ठेवावा.**

**२ कर्तरिप्रयोगांतील कर्म कर्मणिप्रयोगांत कर्ता करावें.**

**३ कर्तरिक्रियापद काढून कर्मणिक्रियापद योजावें.**

कर्तरिप्रयोगांतील कर्ता व कर्मणिप्रयोगांतील कर्ता हे भिन्न असल्यामुळें क्रियापदेंही भिन्न असलींच पाहिजेत. कर्तरिक्रियापद कर्तरिकर्त्याप्रमाणें चालतें; कर्मणिक्रियापद

हा तक्ता नीट पाहा :—

| प्रयोग | कर्तृपद | कर्मपद | क्रियापद | प्रयोग | कर्त्यांत फेर | नवा कर्ता | नवें क्रियापद | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | **मराठी** | | | | |
| कर्तरि | राम | आंबा | खातो | कर्मणि | रामाकडून | आंबा | खाल्ला जातो | वर्तमानकाळ |
| ,, | राम | रावणाला | मारतो | ,, | रामाकडून | रावण | मारला जातो | |
| ,, | रामानें | आंबा | खाल्ला | ,, | रामाकडून | आंबा | खाल्ला गेला | भूतकाळ |
| ,, | रामानें | रावणास | मारिलें | ,, | रामाकडून | रावण | मारला गेला | |
| ,, | राम | आंबा | खाईल | ,, | रामाकडून | आंबा | खाल्ला जाईल | भविष्यकाळ |
| ,, | राम | रावणास | मारील | ,, | रामाकडून | रावण | मारला जाईल | |
| | | | | **संस्कृत** | | | | |
| ,, | रामः | आम्रं | भक्षयति | ,, | रामेण | आम्रम् | भक्ष्यते | वर्तमानकाळ |
| ,, | रामः | रावणं | हन्ति | ,, | रामेण | रावणः | हन्यते | |
| ,, | रामः | आम्रम् | अभक्षयत् | ,, | रामेण | आम्रं | अभक्ष्यत | भूतकाळ |
| ,, | रामः | रावणं | अहन् | ,, | रामेण | रावणः | अहन्यत | |
| ,, | रामः | आम्रं | भक्षयिष्यति | ,, | रामेण | आम्रं | भक्षयिष्यते | भविष्यकाळ |
| ,, | रामः | रावणं | हनिष्यति | ,, | रामेण | रावणः | हनिष्यते | |

कर्मणिकर्त्याप्रमाणें चालतें. मराठींत धातूंच्या रूपांत कसा फरक होतो तो पाहा :—

| कर्तरिधातु | कर्मणिधातु |
|---|---|
| खाणें | खाल्लें जाणें |
| पिणें | प्यालें जाणें |
| मारणें | मारलें जाणें |
| पाडणें | पाडलें जाणें |
| सोडणें | सोडलें जाणें |

वरील उदाहरणांवरून तुमच्या लक्षांत येईल कीं कर्मणिधातूंत '**जाणें**' हें सहाय्यकारी क्रियापद येतें, आणि कर्तरिधातूचें भूतकाळवाचक धातुसाधित विशेषण होतें. जसें—**खाणें—खाल्लें; पिणें**—प्यालें इत्यादि.

आतां संस्कृतांत काय फेर होतात तें पहा :—

| **कर्तरिधातु + विकरण + प्रत्यय** | **कर्मणिधातु**+( कर्मणिप्रयोगाची खूण ) + **प्रत्यय** ( आत्मनेपदाचे ) |
|---|---|
| भक्ष् + अय + ति | भक्ष् + य + ते |

धातु कोणत्याही गणाचा असो, कर्मणिधातु तयार करतांना त्या धातूला मूळचा त्या त्या गणाचा विकरण प्रत्यय न लावतां **सर्व दाही गणांच्या** धातूंना **य** हा **कर्मणिप्रयोगाचा प्रत्यय** जोडावा. नंतर धातु जरी परस्मैपदाचा असला तरी त्याला सरळ आत्मनेपदाचा प्रत्यय जोडावा. जसें :—

| | | |
|---|---|---|
| कर्तरिप्र० :— | **रामः फलं भक्षयति** | ( भक्ष् १० + अय + ति ) |
| कर्मणिप्र० :— | **रामेण फलं भक्ष्यते** | ( भक्ष् + य + ते ) |
| कर्तरिप्र० :— | **रामः फलं स्पृशति** | ( स्पृश् ६ + अ + ति ) |
| कर्मणिप्र० :— | **रामेण फलं स्पृश्यते** | ( स्पृश् + य + ते ) |
| कर्तरिप्र० :— | **रामः देहं पुष्यति** | ( पुष् ४ + य + ति ) |
| कर्मणिप्र० :— | **रामेण देहः पुष्यते** | ( पुष् + य + ते ) |
| कर्तरिप्र० :— | **रामः अश्वं ताडयति** | ( तड्—ताड् १० + अय + ति ) |
| कर्मणिप्र० :— | **रामेण अश्वः ताड्यते** | ( तड्—ताड् + य + ते ) |
| कर्तरिप्र० :— | **रामः गृहं दहति** | ( दह् १ + अ + ति ) |
| कर्मणिप्र० :— | **रामेण गृहं दह्यते** | ( दह् + य + ते ) |

**टीप** :—चतुर्थगणाचा विकरण प्रत्यय **य** व **कर्मणि य** यांत कांहींही संबंध नाहीं हें लक्षांत ठेवा.

चतुर्थगणाच्या कर्तरि आत्मनेपद रूपांत व कर्मणि रूपांत दिसतांना मुळींच फरक दिसणार नाहीं. कारण?

**कांहीं धातु** :—सामान्यपणें कर्मणिधातु करतांना मूळ कर्तरिधातूला य जोडावा. पण कांहीं धातु अपवाद आहेत तें लक्षांत ठेवा.

| **कर्तरिधातु** | **कर्मणिधातु** |
|---|---|
| पा ( पिब् ) पिणें. | पी + य + ते = पीयते |
| दा ( यच्छ् ) देणें. | दी + य + ते = दीयते |

तसेंच, धा–धीयते ( कर्मणि )

| | |
|---|---|
| हृ–ह्रियते; | स्मृ–स्मर्यते; |
| जन्–जायते; | कृ–क्रियते; |
| मृ–म्रियते; | जि–जीयते; इत्यादि. |

## अभ्यास

१ खालील वाक्यांतील प्रयोग बदला :—

( १ ) अश्वेन तृणं भक्ष्यते ।
( २ ) लक्ष्मणः रामम् अनुसरति ।
( ३ ) जनाः दशरथं स्मरन्ति ।
( ४ ) भरतः रामेण त्यज्यते ।

२ वरील प्रश्न १ मधील वाक्यें ( कर्तरि व कर्मणि ) भूतकाळांत लिहा.

---

# षट्चत्वारिंशत्तमः पाठः

एको वृद्धव्याघ्रः स्नातः सरस्तीरे ब्रूते। भो भोः पान्था इदं सुवर्णकङ्कणं गृह्यताम्। ततो लोभाकृष्टेन केनचित्पान्थेनालोचितम्। भाग्येनैतत्सम्भवति। सः प्रकाशं ब्रूते कुत्र तव कङ्कणमिति। व्याघ्रो हस्तं प्रसार्य दर्शयति। पान्थोऽवदत्। कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः? व्याघ्र उवाच शृणु रे पान्थ यौवनदशायामतिदुर्वृत्त आसम्। अनेकगोमानुषाणां वधान्मे पुत्रा मृताः पत्नी च। वंशहीनश्चाहम्। ततः

केनचिद् धार्मिकेणाहमादिष्टो दानधर्मादिकं चरतु भवानिति। तस्य उपदेशादिदानीमहं स्नानशीलो दाता वृद्धो गलितनखदन्तो न कथं विश्वासभूमिः ? तदत्र सरसि स्नात्वा सुवर्णकङ्कणं गृहाणेति। ततो यावदसौ लोभात् सरः स्नातुं प्रविशति तावन्महापङ्के निमग्नः पलायितुमक्षमः। पङ्के पतितं दृष्ट्वा व्याघ्रोऽवदत्। अहह! महापङ्के पतितोऽसि। अतस्त्वामहमुत्थापयामि। इत्युक्त्वा शनैःशनैरुपगम्य तेन व्याघ्रेण धृतः स पान्थोऽचिन्तयत्।

स हि गगनविहारी कल्मषध्वंसकारी।
दशशतकरधारी ज्योतिषां मध्यचारी॥
विधुरपि विधियोगाद् ग्रस्यते राहुणासौ।
लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः॥

इति चिन्तयन्नेवासौ व्याघ्रेण व्यापादितः खादितश्च।

## अभ्यास

१ प्रश्नः—१ पान्थस्य संशयो व्याघ्रेण कथं निरस्तः ?

२ कः आसीत् वंशहीनः ? धार्मिकाः किंतु वंशहीनाः धनिकाः किं कर्तुमर्हन्ति ?

३ कुत्र पतितः स पान्थः ?

४ पङ्के तं पान्थं पतितं दृष्ट्वा व्याघ्रः किमवदत् ?

५ चन्द्रः किं करोति ? कुत्र विहरति ? केषांमध्ये चरति ? इन्दोः कः शत्रु ?

२ प्रयोग बदलाः—१ इदं सुवर्णकंकणं गृह्यताम् ( ग्रह्—गृह् ९ उ. )

## टीप

या गोष्टींत क्रियापदें वर्तमानकाळांत वापरलीं आहेत; पण त्यांचें भाषांतर भूतकाळांत करावें.

**ब्रूते**—बोलतो. ( ब्रू २ उ. ) आत्मनेपद तृ. पु. ए. व. वर्तमानकाळ.

**आलोचितम्**—विचार केला. ( आ+लोच् १० चें भू. भू. धा. वि. )

**मारात्मके त्वयि**—हिंस्र अशा तुझ्या ठिकाणीं.

**शृणु**—ऐक. श्रु-शृ ५ उ. परस्मैपद आज्ञार्थ द्वि. पु. ए. व.

**आदिष्टः**—( आ + दिश् ) भू. धा. सांगितला गेलों.

**दानधर्मादिकं चरतु भवान्**—आपण आतां दानधर्म वगैरे करावें.

**भवान्** (मूळ शब्द भवत्) याचा अर्थ **आपण** असा आहे. या अर्थी याच्याशीं नेहमीं तृ० पुरुषांत क्रियापद येतें.

**गृहाण**—घे. ( ग्रह्-गृह् ५ उ. ) परस्मै. आज्ञार्थ. द्वि. पु. एक. व.

---

# सप्तचत्वारिंशत्तमः पाठः

अस्ति ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती । तमवलोक्य सर्वे शृगालाश्चिन्तयन्ति स्म । यद्ययं केनाप्युपायेन म्रियते तदास्माकं तस्य देहेन मासचतुष्टयस्य भोजनं भविष्यति । तत्रैकेन वृद्धशृगालेन प्रतिज्ञातम् । अहं बुद्धिप्रभावादस्य मरणं साधयामि । अनन्तरं स वञ्चकः कर्पूरतिलकसमीपं गत्वा साष्टाङ्गपातं प्रणम्योवाच । देव दृष्टिप्रसादं कुरु । हस्ती ब्रूते । कस्त्वम् ? कुतः समायातः ? सोऽवदत् । जम्बुकोऽहम् । सर्वैः पशुभिर्मिलित्वा भवत्सकाशं प्रस्थापितः । यद् विना राज्ञाऽवस्थातुं न युक्तम् । तदत्राटवीराजेऽभिषेक्तुं भवान् सर्वस्वामिगुणोपेतो निरूपितः । तद्यथा लग्नवेला न विचलति तथा कृत्वा सत्वरमागम्यतां देवेन । इत्युक्त्वोत्थाय चलितः । ततोऽसौ राज्यलोभाकृष्टः कर्पूरतिलकः शृगालमार्गेण धावन् महापङ्के निमग्नः । ततः गजोऽवदत् । सखे शृगाल किमधुना विधेयम् ? पङ्के निपतितोऽहम् । म्रिये । परावृत्त्य पश्य । शृगालो विहस्यावदत् । देव मम पुच्छकावलम्बनं कृत्वोत्तिष्ठ । ततो महापङ्के निमग्नो हस्ती शृगालैर्भक्षितः ।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः —

१ 'जम्बुकः अहम्'। किम् अकरोत् सः जम्बुकः ?

२ कः पङ्के निपतितः ?

३ किमचिन्तयन् सर्वे शृगालाः ?

४ जम्बुकेन हस्ती कथं वर्णितः ?

२ प्रयोग बदला :—१ **रामः रावणस्य मरणं साध्नोति** ( साध् ५ प. )

२ **दृष्टिप्रसादं कुरु** ( कृ. ८ उ. )

३ खालील वाक्यांतील अर्थ तुमच्या शब्दांत संस्कृतांत पुन्हां व्यक्त करा :—

१ एकेन वृद्धशृगालेन प्रतिज्ञातम् ।

२ सत्वरम् आगम्यताम् देवेन ।

३ पुच्छकावलम्बनं कृत्वा उत्तिष्ठ ।

## टीपा

**हस्ती**—हस्तिन् ( पु. ) प्रथमा एकवचन.

**भविष्यति**—होईल. भू-भव् भविष्यकाळ, तृ. पु. ए. व.

**साध्नोमि**—साध् ( ५ गण ) वर्त. प्र. पु. एक व. परस्मैपद.

**प्रस्थापितः**—पाठविलेला.

**निरूपितः**—निवडलेला.

**आगम्यतां देवेन**—आपण यावें. ( भावेप्रयोग )

**किमधुना विधेयम् ?**— आतां काय करावें ?

**गत्वा**—जाऊन, असलीं दुसरीं धातुसाधित अव्ययें पाठांतून शोधून काढा.

# अष्टचत्वारिंशत्तमः ( अष्टाचत्वारिंशत्तमः ) पाठः

## सुभाषितानि ( संकीर्णानि )

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च ॥ १ ॥

अवश्यंभाविनो भावा भवन्ति महतामपि ।
नग्नत्वं नीलकण्ठस्य महाहिशयनं हरेः ॥ २ ॥

न गणस्याग्रतो गच्छेत् सिद्धे कार्ये समं फलम् ।
यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते ॥ ३ ॥

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा ।
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ॥
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ ।
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥ ४ ॥

यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि ।
निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ॥ ५ ॥

यस्मिन् देशे न संमानो न वृत्तिर्न च बान्धवः ।
न च विद्यागमः कश्चित्तं देशं परिवर्जयेत् ॥ ६ ॥

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा
यस्तु क्रियावान्पुरुषः स विद्वान् ।
सुचिन्तितं चौषधमातुराणां
न नाममात्रेण करोत्यरोगम् ॥ ७ ॥

मौनान्मूर्खः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः ।
धृष्टः पार्श्वे वसति नियतं दूरतश्चाप्रगल्भः
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ ८ ॥

## टीपा

वरं न—एक गुणी पुत्र बरा पण शंभर मूर्ख नकोत. तीन वाक्यें वरं न चा उपयोग करून तयार करा.

द्रुमायते—द्रुम=झाड. नामधातु. नामाला क्रियापदाचे प्रत्यय लावून असले धातु तयार करतात.

---

# एकोनपञ्चाशत्तमः पाठः

अस्त्यरण्ये कश्चिच्छृगालः। स्वेच्छया नगरोपान्ते भ्राम्यन्नीलीभाण्डे पतितः। पश्चात्तत उत्थातुमसमर्थः प्रातरात्मानं मृतवत्संदर्श्य स्थितः। अथ नीलीभाण्डस्वामिना मृत इति ज्ञात्वा तस्मात्समुत्थाप्य दूरे नीत्वापसारितस्तस्मात्पलायितः। ततोऽसौ वनं गत्वा स्वकीयमात्मानं नीलवर्णमवलोक्याचिन्तयत्। अहमिदानीमुत्तमवर्णः। तदाहं स्वकीयोत्कर्षं किं न साधयामि। इत्यालोच्य शृगालानाहूय तेनोक्तम्। अहं भगवत्या वनदेवतया स्वहस्तेनारण्यराज्ये सर्वौषधिरसेनाभिषिक्तः। तदद्यारभ्यारण्येऽस्मदाज्ञया व्यवहारः कार्यः। शृगालाश्च तं विशिष्टवर्णमवलोक्य साष्टाङ्गपातं प्रणम्योचुः। यथाज्ञापयति देवः। इत्यनेनैवंक्रमेण सर्वेष्वरण्यवासिष्वाधिपत्यं तस्य बभूव। ततस्तेन स्वज्ञातिभिरावृतेनाधिक्यं साधितम्। ततस्तेन व्याघ्रसिंहादीनुत्तमपरिजनान्प्राप्य सदसि शृगालानवलोक्य लज्जमानेनावज्ञया स्वज्ञातयः सर्वे दूरीकृताः। ततो विषण्णाञ्शृगालानवलोक्य केनचिद्वृद्धशृगालेनैतत्प्रतिज्ञातम्। मा विषीदत। यदनेनानभिज्ञेन नीतिविदो मर्मज्ञा वयं तेन परिभूतास्तद्यथायं नश्यति तथा विधेयम्। यतोऽमी व्याघ्रादयो वर्णमात्रविप्रलब्धाः शृगालमज्ञात्वा राजानमिमं मन्यन्ते। तद्यथायं परिचितो भवति तथा कुरुत। तत्र चैवमनुष्ठेयम्। यतः सर्वे संध्यासमये संनिधाने महारावमेकदैव करिष्यथ। ततस्तं शब्दमाकर्ण्य ज्ञातिस्वभावात्तेनापि शब्दः कर्तव्यः। ततस्तथानुष्ठिते सति तद्वृत्तम्। यतः।

यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः ।
श्वा यदि क्रियते राजा तत्किं नाश्नात्युपानहम् ॥

ततः शब्दादभिज्ञाय स व्याघ्रेण हतः ।

## अभ्यास

१ प्रश्नाः —

१ शृगालानां विषादकारणं किमासीत् ?
२ कः उत्तमवर्णः अभवत् ? कथमभवत् सः ?
३ सः शृगालः कथं ज्ञातः ?

२ ज्या प्रश्नांना खालीं दिलेलीं वाक्यें उत्तरें होतील असे प्रश्न तयार करा :—

१ सः आत्मानं मृतवत् संदर्श्य स्थितः ।
२ अहं सर्वौषधिरसेन वनदेवतया अभिषिक्तः ।
३ ततः शब्दादभिज्ञाय स व्याघ्रेण हतः

३ अशीच एखादी गोष्ट दहा ओळींत संस्कृत भाषेंत लिहा.

# पञ्चाशत्तमः पाठः

## कांहीं धातुसाधित विशेषणें व अव्ययें

### ( अ ) धातुसाधित विशेषणें—

**( १ ) वर्तमानकालवाचक धा. वि.** (Present Participles):

( अ ) परस्मैपदी — गम्— गच्छ्—गच्छत्; प्रत्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| वद् | — | वदत् | अत् |
| हस् | — | हसत् | |
| पुष् | — | पुष्यत् | |
| विश् | — | विशत् | |
| कथ् | — | कथयत् | |

( आ ) आत्मनेपदी

| | | | |
|---|---|---|---|
| लभ् | — | लभमान | मान |
| वृत्-वर्त् | — | वर्तमान | |
| युध् | — | युध्यमान | |

( इ ) कर्मणि )—

| | | | |
|---|---|---|---|
| लभ् | — | लभ्यमान | मान ( य+मान ) |
| पुष् | — | पुष्यमान | |
| भक्ष् | — | भक्ष्यमान | |
| कथ् | — | कथ्यमान | |
| पा (पिब्) | — | पीयमान | |

**( २ ) भूतकालवाचक धा. विशेषणें:** (Past Passive Participles)

प्रत्यय—**त**

| धातु | धा. विशेषण | |
|---|---|---|
| **गम्** | **गत** | ( गेलेला-ली-लें ) |
| **पुष्** | **पुष्ट** | ( पोसलेला-ली-लें ) |
| **कथ्** | **कथित** | ( सांगितलेला-ली-लें ) |
| **लभ्** | **लब्ध** | ( मिळविलेला-ली-लें ) |
| **हन्** | **हत** | ( मारलेला-ली-लें ) |

## ( आ ) धातुसाधित अव्ययें:—

**( १ ) हेत्वर्थकृदन्त.** ( Infinitives )—प्रत्यय **तुम्**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **कृ** | — | **कर्तुम्** | — | करण्यासाठीं. |
| **सृ** | — | **सर्तुम्** | — | सरण्यासाठीं. |
| **स्मृ** | — | **स्मर्तुम्** | — | स्मरण करण्यासाठीं. |
| **लभ्** | — | **लब्धुम्** | — | मिळविण्यासाठीं. |
| **भक्ष्** | — | **भक्षयितुम्** | — | खाण्यासाठीं. |
| **पा(पिब्)** | — | **पातुम्** | — | पिण्यासाठीं |
| **हन्** | — | **हन्तुम्** | — | ठार मारण्यासाठीं. |
| **भू-भव्** | — | **भवितुम्** | — | होण्यासाठीं. |
| **मन्** | — | **मन्तुम्** | — | विचार करण्यासाठीं |

**( २ ) त्वा प्रत्ययान्त धा. अव्ययें.** ( Gerunds ) प्रत्यय— **त्वा**
( य व त्य )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **कृ** | — | **कृत्वा** | — | करून. |
| **सृ** | — | **सृत्वा** | — | सरून. |
| **स्मृ** | — | **स्मृत्वा** | — | स्मरून. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हन् | — | हत्वा | — | ठार मारून. |
| मन् | — | मत्वा | — | विचार करून. |
| भू | — | भूत्वा | — | होऊन. |

### य व त्य प्रत्यय केव्हां जोडावयाचे ?

| धातु | उपसर्ग | त्वा | य | त्य |
|---|---|---|---|---|
| भू | × | भूत्वा | × | × |
| अनु+भू | अनु | × | अनुभूय | × |
| अनु+नी | अनु | × | अनुनीय | × |
| आ+गम् | आ | × | आगम्य | × |
| प्र+नम् | प्र | × | प्रणम्य | × |
| कृ | × | कृत्वा | × | × |
| अनु+कृ | अनु | × | × | अनुकृत्य |
| अनु+सृ | अनु | × | × | अनुसृत्य |
| वि+स्मृ | वि | × | × | विस्मृत्य |
| आ+वृ | आ | × | × | आवृत्य |
| वि+जि | वि | × | × | विजित्य |

वर दिलेल्या कोष्टकांचा नीट अभ्यास केल्यावर तुम्हांस असें आढळून येईल कीं :—

१ उपसर्ग नसल्यास त्वा प्रत्यय जोडावा.

२ उपसर्ग असल्यास व धातु व्यञ्जनान्त असल्यास य प्रत्यय जोडावा.

३ उपसर्ग असल्यास व धातु दीर्घस्वरान्त असल्यास य प्रत्यय जोडावा.

४ उपसर्ग असल्यास व धातु ह्रस्वस्वरान्त असल्यास त्य प्रत्यय जोडावा.

त्वा, य किंवा त्य कोणताही प्रत्यय जोडला तरी अर्थांत कांहींही फरक होत नाहीं.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| भू | — | भूत्वा | -- | घेऊन |
| अनु + भू | — | अनुभूय | — | अनुभव घेऊन |
| कृ | — | कृत्वा | — | करून |
| अनु + कृ | — | अनुकृत्य | — | अनुकरण करून |

## अभ्यास

१. अभ्यासिलेल्या पाठांतून धातुसाधित विशेषणें आणि धा. सा. अव्ययें शोधून काढा.

। समाप्तोऽयं प्रकाशः ( १-६-३८ ) ।

॥ शुभं भवतु ॥

# परिशिष्ट १ लें

## अमरकोशांतील कांहीं वेंचक पर्यायशब्दकोश

अश्व— घोटके वीतितुरगतुरंगाश्व तुरंगमाः
वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धव सप्तयः

गज— दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः
मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी

मर्कट— कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः
मर्कटो वानरः कीशो वनौका अपि भल्लुके

सूर्य— सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः
भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः
विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः
द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः
विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः
भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः

चंद्र— हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः
अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः

शंकर— शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः
ईश्वरः सर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः

विष्णु— विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः
दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः

पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः
उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः
पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः
विश्वंभरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः
पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः
जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः

देव— अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः
सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः
आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः
बर्हिर्मुखा क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः
वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ।

नदी— ..........................नदी सरित्
तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रदिनी धुनी
स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा
कूलंकषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती

पर्वत—महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः
अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः

शिखर—कूटोऽस्त्रि शिखरं शृङ्गं............

तडाग—पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः
वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका

अग्नि— अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनंजयः
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात्
बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः
रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः
हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः

अक्षि— लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी
वृक्ष— वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः
भूमि— भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा
धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः
सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही
मेघ— अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः
धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत्
घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः
धन— द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु
हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि
गुरु— उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः
मनुष्य—मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः
स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः
स्त्री— स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः
प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा
विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी
सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी
वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी
पान्थ— अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि
अंशु— किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिपृश्नयः
भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम्
अन्धकार—अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः
ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः
विष्वक्संतमसं.............................
अखिल—विश्वमशेषा कृत्स्नसमस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम्
समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके

# परिशिष्ट दुसरें

## सन्धिनियम

**टीप** :—पुस्तकांत ठिकठिकाणीं आलेल्या सन्धिनियमांचे क्रमाङ्क या क्रमाङ्कापेक्षां भिन्न आहेत. ते क्रमाङ्क त्या त्या नियमापुढें कंसांत दिले आहेत.

## स्वरसन्धि

**नियम १**—अ अथवा आ पुढें अ अथवा आ स्वर आल्यास सन्धि आ होतो. ( १ पाठ १० वा. )

**नियम २**—अ, आ + उ, ऊ = ओ. अ + आ + इ ई = ए ( २रा पाठ १० वा. )

**नियम ३**—इ, ई + इ ई खेरीज कोणताही स्वर = य् + तो स्वर ( ७ पाठ १३ वा. )

**नियम ४**—इ, ई + इ ई = ई
उ, ऊ + उ, ऊ = ऊ } ( ८ पाठ १३ वा. )

**नियम ५**—अ, आ + ए ऐ = ऐ
अ, आ + ओ, औ = औ } ( ९ पाठ १३ वा. )

**नियम ६**—उ, ऊ + उ ऊ खेरीज कोणताही स्वर = व् + तो स्वर ( १२ पाठ १६ वा. )

**नियम ७**—उ, ऊ + उ ऊ = ऊ ( १३ पाठ १६ वा. )

**नियम ८**—ए + अ = ए ऽ; ओ + अ = ऽ ( ५ पाठ )

**नियम ९**—ए + अ कोणताही स्वर = अय् + तो स्वर
किंवा अ + तो स्वर }

ऐ + कोणताही स्वर = आय् + तो स्वर
आ + तो स्वर }

ओ + आ खेरीज कोणताही स्वर = अ + तो स्वर

औ + कोणताही स्वर = आ + तो स्वर
किंवा आय् + तो स्वर ( ५ पाठ १२ वा. )

## विसर्गसन्धि

नियम १—अ + : + मृदु व्यञ्जन = ओ + मृदु व्यञ्जन (३; पाठ १० वा.)

नियम २—अ + : + अ = ओऽ ( ११; पाठ १३ वा. )

नियम ३—अ + : + अ शिवाय कोणताही स्वर = विसर्ग लोप ( १४; पाठ १६ वा. )

नियम ४—आ + : + स्वर = विसर्ग लोप ( ४; पाठ १० वा. )

नियम ५—आ + : + मृदु व्यञ्जन = विसर्ग लोप (६; पाठ १२ वा.)

नियम ६—एषः, सः यांच्यापुढें अ शिवाय कोणताही स्वर अथवा व्यञ्जन आल्यास विसर्गलोप होतो. ( १०; पाठ १३ वा. )

नियम ७—अ, आ शिवाय कोणताही स्वर + : + कोणताही स्वर अथवा मृदु व्यञ्जन = विसर्गाचा र् ( १५; पाठ १६ वा. )

नियम ८—विसर्ग + त् थ् = विसर्गाचा स्
„ + च् छ् = „ श्
„ + ट् ठ् = „ ष् ( १९; पाठ ३० वा. )

## व्यञ्जनसन्धि

नियम १ :—म् + स्वर = म् व्यञ्जनांत तो स्वर मिसळून जातो.

नियम २ :—त् थ् + स्वर अथवा मृदु व्यञ्जन
= द् + तो स्वर अथवा तें मृदु व्यञ्जन.

पञ्चवर्गांतील कोणत्याही कठोर व्यञ्जनापुढें मृदु व्यञ्जन अथवा स्वर आल्यास त्या वर्गांतील तिसरें व्यञ्जन त्या कठोर व्यञ्जनाचें होतें. (१६, १७; पाठ २८ वा.)

नियम ३ :—त् थ + च् छ् = च् + च् छ्. ( १८; पाठ ३० )

नियम ४ :—त् + न् = न्न् ( २०; पाठ ३५ वा. )

नियम ५ :—न् + त् थ् = न् चा अनुस्वार व विसर्ग + त् थ्; मग त्या विसर्गाचा स्; तसेंच न् + च् छ् = न् चा अनुस्वार व विसर्ग; मग विसर्गाचा श्; न् + ट् ठ् = न् चा अनुस्वार व विसर्ग. मग विसर्गाचा ष् (२१; पाठ ३७ वा.)

नियम ६ :—अन् + अ = अन्न. न् पूर्वी ह्रस्व स्वर व नंतर कोणताही स्वर आल्यास न् चें न्न होतें. ( २२; पाठ ४३ वा. )

नियम ७ :—त् = मुनेः = न् + मुनेः ( २३; पाठ ४५ वा. )

# शब्दकोश

## नामें

**अंस** ( पु. ) खांदा
**अंक** ( पु. ) संख्या
**अब्द** ( पु. न. ) वर्ष
**अर्क** ( पु. ) सूर्य
**अटवी** ( स्त्री. ) अरण्य
**अर्भक** ( पु. ) मूल
**अग्र** ( न. ) टोंक; शिखर
**अग्नि** ( पु. ) अग्नि
**अधर** ( पु. ) ओठ
**अध्यापन** ( न. ) शिकवणें
**अनल** ( पु. ) अग्नि
**अन्न** ( न. ) अन्न
**अस्थि** ( न. ) हाड
**अनुज्ञा** ( स्त्री. ) परवानगी
**अनुचर** ( पु. ) नोकर
**अपराध** ( पु. ) अपराध
**अपूप** ( पु. ) अनारस ( खाऊ )
**अमावास्या** ( स्त्री. ) महिन्याचा शेवटचा दिवस
**अयोध्या** ( स्त्री. ) एक नगरीचें नांव
**अशन** ( न. ) खाणें
**अश्व** ( पु. ) घोडा
**अश्वारोह** ( पु. ) घोडेस्वार
**आकार** ( पु. ) आकार
**आकाश** ( पु. ) आकाश
**आचार्य** ( पु. ) गुरु
**आतप** ( पु. ) सूर्याचा ताप ( ऊन )
**आदित्य** ( पु. ) सूर्य
**आधिक्यम्** ( पु. ) अधिकपणा
**आधिपत्य** ( पु. ) अधिकार
**आम्र** ( न. ) आंब्याचें फळ
**आम्रवृक्ष** ( पु. ) आंब्याचें झाड
**आम्रफल** ( न. ) आंब्याचें फळ
**आम्ररस** ( पु. ) आंब्याचा रस
**आर्य** ( पु. ) सभ्य
**आर्यावर्त** ( पु. ) हिंदुस्थान
**आराधना** ( स्त्री. ) भक्ति, सेवा
**आलय** ( पु. न. ) घर
**आश्चर्य** ( न. ) आश्चर्य
**आज्ञा** ( स्त्री. ) हुकूम
**इन्दु** ( पु. ) चंद्र
**ईश्वर** ( पु. ) ईश्वर
**इन्धन** ( न. ) सरपण
**उद्यान** ( न. ) बाग
**उपकार** ( पु. ) उपकार
**उरग** ( पु. ) सर्प
**उपदेश** ( पु. ) उपदेश
**उपासना** ( स्त्री. ) भक्ति

**उपाय** ( पु. ) उपाय
**ओषधिनाथ** ( पु. ) चंद्र
**ऋतु** ( पु. ) समय ( काल )
**कंठ** ( पु. ) गळा
**कर्ण** ( पु. ) काण
**कनक** ( न. ) सोनें
**कन्या** ( स्त्री. ) मुलगी ( अविवाहित )
**कपाट** ( पु. न. ) दार
**कपि** ( पु. ) वानर
**कपोल** ( पु. ) गाल
**कच** ( पु. ) केश
**कर** ( पु. ) हात
**कदन** ( न. ) नाश
**कलह** ( पु. ) भांडण
**कवि** ( पु. ) कविता करणारा
**कशा** ( स्त्री. ) चाबूक
**कष्ट** ( न. ) दुःख
**कङ्कण** ( न. ) कांकण
**कारागृह** ( न. ) तुरुंग
**काशी** ( स्त्री. ) हिंदूंचें पवित्र क्षेत्र
**कांचन** ( न. ) सोनें ( पैसा )
**किरण** ( पु. ) किरण
**क्रीडांगण** ( न. ) खेळण्याची जागा
**कुमार** ( पु. ) बालक
**केश** ( पु. ) केंस
**केशव** ( पु. ) एका मुलाचें नांव
**कृष्ण** ( पु. ) ,, ,, ,,
**कौरव** ( पु. ) कुरु वंशांतील एक
**कौसल्या** ( स्त्री. ) दशरथाची स्त्री
**खग** ( पु. ) पक्षी
**खड्ग** ( पु. ) तरवार
**गगन** ( न. ) आकाश
**गज** ( पु. ) हत्ती
**गजानन** ( पु. ) गणपति
**गया** ( स्त्री. ) क्षेत्र
**गङ्गा** ( स्त्री. ) एक नदी
**गरुड** ( पु. ) गरुड पक्षी
**गिरिराज** ( पु. ) श्रेष्ठ पर्वत
**ग्रीष्मकाल** ( पु. ) उन्हाळा
**गुरु** ( पु. ) अध्यापक
**गुहा** ( स्त्री. ) दरी
**गोप** ( पु. ) गवळी
**गोविंद** ( पु. ) एका मुलाचें नांव
**गौरिशंकर** ( न. ) हिमालयाचें उच्चतम शिखर
**गृह** ( न. ) घर
**घट** ( पु. ) घागर
**चंद्र** ( पु. ) चंद्र
**चित्त** ( न. ) मन
**छात्र** ( पु. ) विद्यार्थी
**छाया** ( स्त्री. ) सावली
**जन** ( पु. ) लोक
**जरा** ( स्त्री. ) म्हातारपण
**जल** ( न. ) पाणी
**जलधि** ( पु. ) समुद्र
**जलधर** ( पु. ) मेघ
**जलाशय** ( पु. ) पाण्याची जागा ( तळें )
**जम्बुक** ( पु. ) कोल्हा
**जीव** ( पु. ) प्राणीमात्र
**जीवन** ( न. ) जीवित
**तट** ( पु. न. ) तीर

**तडाग** ( पु. ) तलाव
**तमस्** ( न. ) अंधःकार
**तल** ( न. ) कांठ ( पृष्ठभाग )
**तारका** ( स्त्री ) तारा
**तीर्थयात्रा** ( स्त्री. ) क्षेत्रास जाणें
**तोय** ( न. ) पाणी
**तोरण** ( पु. न. ) पताका
**तृण** ( न. ) गवत
**तृष्णा** ( स्त्री. ) आशा ( लोभ )
**दन्त** ( पु. ) दांत
**दशरथ** ( पु. ) राजाचें नांव
**दशानन** ( पु. ) रावण
**दारिका** ( स्त्री. ) मुलगी
**दातृ** ( पु. ) देणारा
**दिन** ( न. ) दिवस
**दीपज्वाला** ( स्त्री. ) दिव्याची ज्योत
**दुग्ध** ( न. ) दूध
**दुन्दुभि** ( पु. ) भेर ( एक वाद्य )
**दूत** ( पु. ) चाकर
**दूतकार्य** ( न. ) दूताचें काम
**दुर्योधन** ( पु. ) धृतराष्ट्राचा मुलगा
**देव** ( पु. ) ईश्वर
**देह** ( पु. ) शरीर
**द्वारपाल** ( पु. ) दारावर रक्षण करणारा.
**द्वार** ( न. ) दार
**द्राक्षाफल** ( न. ) द्राक्ष
**धनुर्विद्या** ( स्त्री. ) धनुष्याची विद्या
**धरातल** ( पु. न. ) पृथ्वी
**धर्म** ( पु. ) धर्म
**धर्मक्षेत्र** ( न. ) धर्माचें स्थान
**धातु** ( पु. ) धातु
**धूम** ( पु. ) धूर
**धृतराष्ट्र** ( पु. ) पांडवांचा चुलता
**नख** ( पु. न. ) नख
**नग** ( पु. ) पर्वत
**नभोवाणी** ( स्त्री. ) आकाशवाणी
**नगर** ( न. ) शहर
**नदी** ( स्त्री. ) नदी
**नर** ( पु. ) पुरुष
**नक्षत्रराज** ( पु. ) चंद्र
**नाथ** ( पु. ) स्वामी, मालक
**नाद** ( पु. ) आवाज
**नारिकेर-नारिकेल** ( पु. ) नारळ
**निशा** ( स्त्री. ) रात्र
**नेत्र** ( न. ) डोळा
**निगड** ( पु. न. ) बंधन ( बेडी )
**नीलकंठ** ( पु. ) शंकर
**पञ्जर** ( न. ) पिंजरा
**पतितोद्धार** ( पु. ) पतितांचा उद्धार
**पत्नी** ( स्त्री. ) बायको,—पत्नी
**परोपकार** (पु.) दुसऱ्यावर उपकार करणें
**पवन** ( पु. ) वायू
**पर्वत** ( पु. ) पर्वत
**पशु** ( पु. ) जनावर
**पक्ष** ( पु. ) पक्ष ( पंख )
**पङ्क** ( पु. न. ) चिखल
**परित्राण** ( न. ) रक्षण
**परिजन** ( पु. ) नोकर, सेवक.
**पाठ** ( पु. ) धडा
**पाठशाला** ( स्त्री. ) शाळा

**पाण्डव** ( पु. ) पण्डुराजाचीं मुलें
**पान्थ** ( पु. ) वाटसरु
**पाद** ( पु. ) पाय
**पाप** ( न. ) पाप
**पार्वती** ( स्त्री. ) पार्वती
**पुच्छक** ( न. ) शेपुट
**पुच्छ** ( पु. न. ) शेपूट
**पूर्वदिशा** ( स्त्री. ) पूर्व
**पुत्र** ( पु. ) मुलगा
**पुत्रकामेष्टि** ( स्त्री. ) एक यज्ञ
**पौर्णिमा** ( स्त्री. ) पौर्णिमा
**प्रकाश** ( पु. ) प्रत्यक्ष
**प्रभव** ( पु. ) उत्पत्ति
**प्रायोपवेशन** ( न. ) मरणान्त उपवास
**प्रभाव** ( पु. ) तेज
**प्रभात** ( पु. ) सकाळ
**प्रयाग** ( पु. ) क्षेत्र
**प्रवास** ( पु. ) प्रवास
**प्रवाह** ( पु. ) ओघ
**प्रहर** ( पु. ) प्रहर
**फल** ( न. ) फळ
**फणिन्** ( पु. ) सर्प
**फलक** ( न. ) फळा
**ब्रह्मपुत्रा** ( स्त्री. ) एक नदी
**बंदीगृह** ( न. ) तुरुंग
**बाष्प** ( न. ) वाफ
**भरण** ( न. ) उदरपोषण
**भक्त** ( पु. ) भक्ति करणारा
**भाग** ( पु. ) अंश
**भानु** ( पु. ) सूर्य
**भारतवर्ष** ( पु. ) हिंदुस्थान
**भारत** ( न. ) हिंदुस्थान
**भाल** ( न. ) कपाळ
**भास्कर** ( पु. ) सूर्य
**भार्या** ( स्त्री. ) स्त्री ( पत्नी )
**भीति** ( स्त्री. ) भय
**भिक्षुक** ( पु. ) भिक्षा मागणारा
**भुजङ्ग** ( पु. ) साप
**भूपाल** ( पु. ) राजा
**भेक** ( पु. ) बेडूक
**भोजन** ( न. ) भोजन, जेवण
**मर्कट** ( पु. ) माकड
**मण्डूक** ( पु. ) बेडूक
**मधु** ( न. ) मध
**मधुमक्षिका** ( स्त्री. ) मधमाशी
**मध्यान्ह** ( पु. ) दिवसाचा मध्यभाग
**मक्षिका** ( स्त्री. ) माशी
**मरीचि** ( पु. ) एक ऋषि
**मत्स्य** ( पु. ) मासा
**माधव** ( पु. ) एका मुलाचें नांव
**मार्ग** ( पु. ) वाट
**मानव** ( पु. ) मनुष्य
**मानस** ( न. ) मन
**मास** ( पु. ) महिना
**माल्य** ( न. ) फूल
**मित्र** ( न. ) मित्र
**मुकुंद** ( पु. ) एका मुलाचें नांव
**मुख** ( न. ) तोंड
**मृगया** ( स्त्री. ) शिकार
**मुनि** ( पु. ) ऋषि

मृत्तिका ( स्त्री. ) माती
मेघ ( पु. ) ढग
यमुना ( स्त्री. ) एक नदी
यादवनाथ ( पु. ) कृष्ण
युद्ध ( न. ) लढाई
यौवन ( न. ) तारुण्य
रण ( न. ) युद्धाची जागा
स्मरण ( न. ) आठवण
रत्नाकर ( पु. ) समुद्र
रमा ( स्त्री. ) लक्ष्मी
रवि ( पु. ) सूर्य
रक्षक ( पु. ) रक्षण करणारा
रश्मि ( पु. ) लगाम
राज्य ( न. ) राज्य
राज्याभिषेक ( पु. ) राज्यावर बसणें
रात्रिमुख ( न. ) सायंकाळ
राहु ( पु. ) एक राक्षस
राम ( पु. ) दशरथाचा वडील मुलगा
लता ( स्त्री. ) वेली
ललाट ( न. ) कपाळ
लक्ष्मण ( पु. ) रामाचा भाऊ
लाङ्गूल ( न. ) शेपूट
लोभ ( पु. ) लोभ
वल्कल ( न. ) झाडाची बारीक साल
वर्ग ( पु. ) वर्ग ( कक्षा )
वर्ण ( पु. ) रंग ( जाति )
वदन ( न. ) तोंड
वध ( पु. ) ठार मारणें
वन ( न. ) वन
वर ( पु. ) वर
वसिष्ठ ( पु. ) एक ऋषि
वंगसागर ( पु. ) बंगालचा समुद्र
वञ्चक ( पु. ) फसव्या
वर्षाकाल ( पु. ) पावसाळा
वक्षस्थल ( न. ) छाती
वात ( पु. ) वारा
वार्धक्य ( न. ) म्हातारपण
वामन ( पु. ) एका मुलाचें नांव
वासुदेव ( पु. ) „ „ „
विकृति ( स्त्री. ) विकार
विदुर ( पु. ) धृतराष्ट्राचा मन्त्री
विधियोग ( पु. ) दैवयोग
विधु ( पु. ) चंद्र
विनोदवार्ता ( स्त्री. ) विनोदाचें भाषण
वित्त ( न. ) द्रव्य
विषय ( पु. ) विषय
विहग ( पु. ) पक्षी
विलम्ब ( पु. ) वेळ
विश्राम ( पु. ) विश्रांती
विश्रामहेतु ( पु. ) विश्रांतीची इच्छा
वृक्ष ( पु. ) झाड
वेलापत्रक ( न. ) वेळापत्रक
वैद्य ( पु. ) वैद्य
वैनतेय ( पु. ) गरुड
व्रज ( पु. ) मथुरा
व्यजन ( न. ) पंखा
व्यसन ( न. ) संकट
व्याघ्र ( पु. ) वाघ
व्याधि ( पु. ) रोग
शक्ति ( स्त्री. ) सामर्थ्य

शब्द ( पु. ) शब्द
शरत्काल ( पु. ) शरद्‌ऋतु
शरीर ( न. ) शरीर
शत्रुघ्न ( पु. ) रामाचा भाऊ
शाला ( स्त्री. ) शाळा
शिखर ( न. ) शेंडा
शिक्षक ( पु. ) अध्यापक
शुक ( पु. ) पोपट
शंकर ( पु. ) शिव
शृगाल ( पु. ) कोल्हा
सचिव ( पु. ) प्रधान
संध्यासमय ( पु. ) संध्याकाळचा वेळ
सज्जन ( पु. ) चांगला पुरुष
सदस् ( न. ) सभा
समुद्र ( पु. ) समुद्र
सरस् ( न. ) तळें
सरिता ( स्त्री. ) नदी
सागर ( पु. ) समुद्र
साधु ( पु. ) सत्पुरुष
सिन्धु ( पु. ) समुद्र
सिन्धु ( स्त्री. ) नदी
सीता ( स्त्री. ) रामाची स्त्री
सुमित्रा ( स्त्री. ) दशरथाची दुसरी पत्नी
सुवर्ण ( न. ) सोनें
सूतिकागृह ( न. ) सूतिकागृह
सेवक ( पु. ) चाकर
सैनिक ( पु. ) सैन्य
सौख्य ( न. ) सुख
सौधखण्ड ( पु. न. ) खड्ड
सन्नाद ( पु. ) आवाज
संगम ( पु. ) मेळ
संभार ( पु. ) सामग्री
संध्याकाल ( पु. ) संध्याकाळ
स्वरूप ( न. ) सौंदर्य
स्वसृ ( स्त्री. ) बहीण
स्वागत ( न. ) आदरसत्कार
स्वाद ( पु. ) रुचि
हरि ( पु. ) विष्णु
हंस ( पु. ) हंस पक्षी
हस्त ( पु. ) हात
हस्तिन् ( पु. ) हत्ती
हिम ( न. ) बर्फ
हिमकर ( पु. ) चन्द्र
हिमालय ( पु. ) हिमालय पर्वत
हिमांशु ( पु. ) चंद्र
हिरण्य ( पु. ) द्रव्य ( पैसा )
हेमन्त ( पु. ) एक ऋतु
हृदय ( न. ) मन
क्षण ( न. ) एक क्षण ( थोडा वेळ )
ज्ञाति ( स्त्री. ) जात

## क्रियापदें

अस् ( २ उ. ) असणें
उद् + इ – अय् ( १ प. ) उगवणें
कथ् ( १० उ. ) सांगणें
कम्प् ( १ आ. ) कांपणें
कृ ( ८ उ. ) करणें
कृष् – कर्ष् ( १ प. ) ओढणें, खेंचणें

कृष् ( ६ प. ) नांगरणें
क्रीड् ( १ प. ) खेळणें
खाद् ( २ प. ) खाणें
गम् – गच्छ् ( १ प. ) जाणें
गम् + आ ( १ प. ) येणें
ग्रस् ( १ प. ) ग्रासणें
ग्रह् ( गृह् ) ( ९ उ. ) घेणें
चर् ( १ प. ) चालणें
चल् + वि ( १ प. ) चालणें
चिन्त् ( १० उ. ) विचार करणें
जन् ( जा ) ( ४ आ. ) उत्पन्न होणें
जीव् ( १ प. ) वांचणें
ज्वल् ( १ प. ) जळणें
तप् ( १ प. ) तापणें
तन् ( ८ उ. ) पसरणें
ताप् ( १० उ. ) तापवणें
त्यज् ( १ प. ) टाकणें
दिश् + आ ( ६ प. ) आज्ञा करणें
दृश् ( पश्य् ) ( १ प. ) पहाणें
दह् ( १ प. ) जाळणें
दा ( यच्छ् ) ( १ प. ) देणें
दा ( ३ उ. ) देणें
दृ ( दार् + वि ) ( १० उ. ) फाडणें
धा + नि ( ३ उ.) ठेवणें
धाव् ( १ प. ) धावणें
धृ – धर् ( १ प. ) धारण करणें, धरणें
नम् ( १ प. ) नमस्कार करणें
नश् ( ४ प. ) नाश पावणें
नी ( नय् ) ( १ प. ) नेणें
पठ् ( १ प. ) पढणें
पत् ( १ प. ) पडणें
पा ( पिब् ) ( १ प. ) पिणें
पीड् ( १० उ. ) दुःख देणें
पुष् ( ४ प. ) पोसणें
ब्रू ( २ उ. ) बोलणें
भर्त्स् + नि ( १० आ. ) निन्दा करणें
भक्ष् ( १० उ. ) खाणें
भू – भव् ( १ प. ) होणें ( असणें )
भू + अनु अनुभव घेणें
भू + उद् ( १ प. ) उत्पन्न होणें
भू + प्र ( १ प. ) ,, ,,
भू + सम् ,, ,,
भ्रम् ( १ प. ) फिरणें
मिल् ( ६ उ. ) मिळणें
यत् ( १ आ. ) प्रयत्न करणें
या + सम् ( २ प. ) येणें
याच् ( १ आ. ) याचना करणें
रुच् – रोच् ( १ आ. ) आवडणें
रुह् + आ ( १ प. ) वर बसणें
रुह् + प्र ( १ प. ) वाढणें
लिख् ( ६ प. ) लिहिणें
लभ् ( १ अ. ) मिळविणें
लिह् ( २ उ. ) चाटणें
लुच् – लोच् + आ ( १० उ.) पहाणें
वद् ( १ प. ) बोलणें
वस् ( १ प. ) राहणें
वच् ( २ प. ) बोलणें
वस् + नि ( १ प. ) राहणें
वह् ( १ प. ) वाहणें
विद् ( २ प. ) जाणणें

**विश् + उप्** ( ६ प. ) बसणें
**विश् + प्र** ( ६ प. ) प्रवेश करणें
**व्रज्** ( १ प. ) जाणें
**वृत्** ( **वर्त्** ) ( १ आ. ) असणें
**शक्** ( ५ उ. ) शकणें
**शुभ्–शोभ्** ( १ आ. ) शोभणें
**साध्** ( ५ प. ) साधणें
**सृ–सर्** ( १ प. ) सरणें
**सद्** ( **सीद्+वि** ) (१प.) विषाद मानणें
**सृ–सर्+प्र** ( १ प. ) पसरणें
**स्पृश्** ( ६ प. ) स्पर्श करणें
**स्पृह्** ( १० उ. ) इच्छा करणें
**स्था** ( **तिष्ठ्** ) ( १ प. ) उभें रहाणें
**हन्** ( २ उ. ) ठार मारणें
**हस् + वि** ( १ प. ) आश्चर्य करणें
**हृ** ( **हर्** ) ( १ प. ) हरण करणें
**हृ + अप** ( १ प. ) हरण करणें
**क्षिप्** ( ६ प. ) टाकणें
**ज्ञा** ( जा ) ( ९ प. ) जाणणें
**ज्ञा + प्रति**–प्रतिज्ञा करणें
**श्रु** ( ८ प. ) ऐकणें

## विशेषणें

**अनवद्य** ( स्तुत्य ) चांगलें
**अनभिज्ञ** अडाणी
**अष्टम** आठवा
**अधार्मिक** नास्तिक
**अपात्र** अयोग्य
**अल्प** थोडा-डी-डें
**अमल** शुद्ध, स्वच्छ
**आच्छादित** झांकलेला
**आरक्त** किंचित् लाल
**उचित** योग्य
**अनुचित** अयोग्य
**आवृत** (आ+वृ) व्यापलेला, गोळा झालेला
**उष्ण** उष्ण
**एक** एकटा
**एकादश** अकरा
**कनिष्ठ** धाकटा
**कराल** भयानक
**कलुषित** दुष्ट, सदोष, गढूळ
**कानिचित्** कांहीं
**कुपित** रागावलेला
**कुशल** कल्याण
**कुलपांसन** कुलकलङ्क
**क्रूर** दुष्ट
**कृपण** दीन
**कंचित्** कोणास तरी
**गलिता** नष्ट झालेली
**गहन** जाणण्यास कठीण
**गर्ह्य** निंद्य
**घातक** घात करणार
**घोर** भयंकर
**चञ्चल** चंचल
**चण्ड** प्रखर
**चतुर्दश** चवदा
**चतुर्थ** चवथा

**चतुर** हुशार
**चत्वारः** ( चतुः )—चार
**ज्येष्ठ** वडील
**तरुण** तरुण
**तृतीय** तिसरा
**तृषित** तहान लागलेला
**त्रय** तीन
**त्रयोदश** तेरा
**दशम** दहावा
**दर्शनीय** सुंदर
**दूरीकृत** दूर केलेला
**दुर्बल** अशक्त
**दुर्वृत्त** खराब
**द्वादश** बारा
**द्वितीय** दुसरा
**देवताप्राय** देवतेसारखा
**द्वौ** दोन
**द्रवरूप** पातळ
**द्रष्टुकाम** भेटण्याची इच्छा असलेला
**धनिक** श्रीमंत
**धवल** पांढरा
**धार्मिक** धार्मिक
**धूर्त** चाणाक्ष
**नवम** नववा
**निन्द्य** निंदेस पात्र
**निर्मल** स्वच्छ
**न्याय्य** योग्य
**पक्व** पिकलेला
**प्रफुल्ल** फुललेला
**परालम्बिन्** दुसऱ्याचा आश्रय असलेलें
**प्रबल** जास्त शक्तिमान
**परिचित** ओळखीचा
**पवित्र** पवित्र
**पञ्चविंशति** पंचवीस
**पारंगत** पूर्णपणें जाणणारा
**प्रसन्नसलिल** स्वच्छ पाण्याची
**पिपासित** तहान लागलेला
**प्रिय** आवडता
**पुष्ट** लठ्ठ
**पोषक** पोसणारा
**पौष्टिक** पोसणारा
**पंचम** पांचवा
**प्रखर** तीक्ष्ण
**प्रतिनिधि** ऐवजीं काम करणारा
**प्रभूत** पुष्कळ
**प्रमुख** मुख्य
**प्रथम** पहिला
**बुभुक्षित** उपाशी
**भीषण** भयानक
**मङ्गल** शुभ
**मधुर** गोड
**मध्यम** मधला
**महिष्ठ** सर्वांत मोठा
**मूर्ख** वेडा ( बुद्धिहीन )
**मूढ** मूर्ख
**मृत** मेलेला
**मृतवत्** मेल्यासारखा
**रक्त** लाल
**रुग्ण** आजारी
**रुष्ट** रागावलेला

लिखित लिहिलेलें
वक्र वांकडा
वञ्चक ठक
वर्तुलाकार गोल
वंशहीन निपुत्रिक
विप्रकीर्ण मोकळी
विख्यात प्रसिद्ध
विषण्ण उदास
वीर शूर
विस्तीर्ण मोठा
वृद्ध म्हातारा
शठ लुच्चा
श्याम काळा
शीतल थंड
शुष्क कोरडा
सबल बलवान्
समर्थ शक्तिमान्
समान सारखा
समीप जवळ
सर्व सर्व
साधित मिळविले
सिद्ध तयार
सिंहासनस्थ सिंहासनावर बसलेला
सुप्त निजलेला
स्वच्छ स्वच्छ
स्थिर स्थिर
स्नात न्हालेला
हरित हिरवा
क्षीण अशक्त
श्रान्त थकलेला
श्रेष्ठ मोठा
षष्ठ सहावा

## सर्वनामें

अहम् ( अस्मद् ) मी
अस्य ( इदम् ) याचा,-ची,-चें
एतद् ( एतद् ) हें
एते ( „ ) हीं दोघें
एतौ ( „ ) हे दोघे
एषः ( „ ) हा
एषा ( „ ) ही
कति किती ?
का कोणती ?
कीदृशाः कशा प्रकारचें
कम् कोणाला ?
कः कोण ?
तव ( त्वं ) तुझा
तस्य ( तद ) त्याचा
ते ( „ ) ते
तौ ( „ ) ते दोघे
त्वम् तूं
मम माझा
यः ( यद ) जो
युष्माकं ( युष्मद् ) तुमचा,-ची,-चें
यूयम् ( त्वं ) तुम्ही
वयम् ( अस्मद् ) आम्ही
सः ( तद् ) तो
सा ( „ ) ती

## अव्ययें

अग्रतः पुढें, अगोदर
अद्य आज
अधुना आतां
अपि देखील
अत्र येथें
आशु लवकर
इव प्रमाणें
उपरि वर
एव च
कदा केव्हां
कथम् कसें
किमर्थम् कशासाठीं
किम् कां ? काय ?
कुत्र कोठें ?
किंतु परंतु
च आणि
ततः त्यानंतर
तथापि तरी
तदा तेव्हां
तत्र तेथें
तस्मात् म्हणून
तावत् तोंपर्यंत
न नाहीं
प्रतिदिनम् दररोज
प्रत्यहम् दररोज
प्रभृति पासून
पुरतः समोर
बहिः बाहेर
भृशम् अत्यंत
यथा ज्याप्रमाणें
यदा जेव्हां
यदि जर
यत्र जेथें
यावत् जोंपर्यंत
वरम् चांगला
वा किंवा
बाढम् ठीक
विना शिवाय
शनैः सावकाश
सहर्षम् आनंदानें
सह बरोबर
साम्प्रत हल्लीं
साधु ठीक
सुखम् चांगला

# शुद्धिपत्रम्

| पाठ | पान | ओळ | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| प्राथमिक माहिती | ३ | १७ | तुमुनन्त | तुमुन्नन्त |
| ,, | ,, | १८ | त्त्वान्त | त्वान्त |
| ४ | ४ | ३ | उपविशत | उपविशथ |
| ,, | ,, | ,, | धावत | धावथ |
| १३ | १९ | ११ | प्रहरेत– | प्रहरे त |
| १४ | २४ | ५ | ओषधीन् | ओषधीः |
| १६ | २८ | ४ | सरिताः | सरितः |
| १८ | ३३ | १० | द्रष्टु | द्रष्टुं |
| १८ | ३४ | ३ | ।मां | मां |
| १८ | ३६ | १७ | अधिगच्छति | अवगच्छति |
| १९ | ३८ | १० | बीजः | बीजं |
| २२ | ४४ | १८ | स्पृष् | स्पृश् |
| धातवः नकाशा | | | | |
| ,, | ४५ | १५ | विद्–जाणण | विद्–असणें |
| ,, | ४६ | १८ | वणानीं | वर्णांनीं |
| २३ | ४८ | १२ | य ( ४ ) यांतील य् राहतो. | य(४) व अय(१०) यांतील अनुक्रमें य् व अय् राहतात. |
| २४ | ५० | ३ | जडाऽसीत् | जडासीत् |
| २४ | ५२ | २१ | अ + लभ् + अ+ त् | अ + लभ् + अ + त |
| २६ | ५५ | २ | स्मशानवासी | श्मशानवासी |
| २६ | ५५ | ८ | कृतार्थाः | कृतार्थं |

| पाठ | पान | ओळ | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| २६ | ५५ | १२ | भोलानाथः | पशुपतिः |
| ,, | ,, | २१ | भोलानाथस्य | पशुपतेः |
| २६ | ५६ | १३ | शिवनिवास वर्णनं | शिवनिवासवर्णनं |
| २६ | ५६ | २० | स्मशान | श्मशान |
| ,, | ,, | २५ | अनादारार्थे | अनादरार्थे |
| २७ | ५९ | ८ | तृ | तृ |
| २८ | ६० | २२ | मत्स्यः | मत्स्यः । |
| २८ | ६१ | २ | तीरेरुद्रं | तीरे रुद्रं । |
| ३० | ६७ | १३ | उत्+डी | उद्+डी |
| ३२ | ७१ | ६ | किंकारणम् | कस्मात् कारणात् |
| ,, | ७३ | १२ | बन्धीत | बध्नीत |
| ३३ | ७६ | ८ | मृग्(मार्ग् १० उ०) | मृग् १० आ०; मार्ग् १० उ० |
| ३४ | ८० | २७ | तम् | तमम् |
| ३५ | ८२ | १५ | अप्+मय=अस्मय | अप्+मय=अम्मय |
| ३७ | ८४ | ५ | संन्ध्याकाले | सन्ध्याकाले |
| ३८ | ८७ | ८ | चतुर्थः | चतुर्थः ? |
| ३९ | ८८ | ४ | निहितभारा-नालिकेरा | निहितभारा नालिकेरा |
| ४० | ८९ | १ | जरयाग्रस्तमारोग्यं | जरया ग्रस्तमारोग्यं |
| ४१ | ८९ | शेवटची | नेतारो | नेतारौ |
| ४२ | ९२ | ११ | जनानप्यातिशेषे | जनानप्यतिशेषे |
| ४६ | १०१ | ७ | ग्रह्-गृह् ५ उ० | ग्रह्-गृह् ९ उ० |
| ४७ | १०१ | ७ | सवः | सर्वैः |
| ४९ | १०४ | १४ | दूरीकृतः | दूरीकृताः |
| ५० | १०६ | ४ | भक्ष्यमान | भक्ष्यमाण |

## परिशिष्ट १ लें

| | | | |
|---|---|---|---|
| १०९ | ४ | सैन्धव सप्पयः | सैन्धवसप्तयः |
| ,, | २२ | खड्गपरशु | खण्डपरशु |

| पाठ | पान | ओळ | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| | | | **शब्दकोश** | |
| | ११५ | | आकाश ( पु. ) | आकाश ( पु. न. ) |
| | ,, | | आधिक्यम् ( पु. ) | आधिक्य ( न. ) |
| | ,, | | आधिपत्य ( पु. ) | आधिपत्य ( न. ) |
| | ११६ | | कठ | कण्ठ |
| | ,, | | कर्ण ( पु. ) काण | कर्ण ( पु. ) कान |
| | ११८ | | प्रकाश ( पु. ) प्रत्यक्ष | प्रकाशम् ( अ. ) उघड |
| | ११८ | | प्रभात ( पु. ) | प्रभात ( न. ) |
| | ११९ | | वक्षस्थल | वक्षःस्थल |
| | १२० | | सरिता | सरित् |
| | ,, | | हिरण्य ( पु. ) | हिरण्य ( न. ) |
| | | | **क्रियापदें** | |
| | १२० | | उद् + इ-अय् ( १ प० ) | उद् + इ ( अय् ) १ प०<br>उद् + इ २ प० |
| | | | **विशेषणें** | |
| | १२३ | | द्वौ | द्वौ |